ISSN 2349-6614

सितम्बर, 2016 मूल्य : 25 ₹

प्रत्यूष

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 14 अंक 7 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2015-2017 Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI NO. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

सिन्धु और साक्षी की कामयाबी

जड़ व्यवस्था और पिछड़ी मानसिकता को तोड़ समाज को बेटियों पर गर्व का एहसास देगी

THE SCHOLARS' ARENA™

An English Medium Co-Educational Sr. Secondary School (Aff. No. 1730368, Affiliated to CBSE, Delhi)

UDAIPUR | BANSWARA | SAGWARA

विद्यैव सर्वम्

"Successful walk of 15 years"

Walk Together

FOR ANY INQUIRY

Contact: 0294-2584449, 3260742
Mob: 9829009390
E-mail: dr.lokeshjain@gmail.com

Special Features

- The School provides activity based teaching-learning with a teacher student ratio 1:35.
- Well equipped and airy classrooms.
- Ultra modern teaching aids including computers, multimedia slide shows, educational toys and audio-visual aids.
- Spacious garden and ample provision for co-curricular activities including indoor and outdoor games.
- Care and concern: Personalised care and concern to bring out the hidden talent through Drama, Poetry, Debate, Story writing, Music, Dance, Fine Arts and Crafts to unfold the creative aspect of the student.
- To cultivate an appreciation for the traditional values and cultural heritage of India.
- **Board: CBSE** (Central Board of Secondary Education.)
- **School Timings:** I)Nursery wing- 9:30 am to 12:45 pm. ii) Infant to X-8:00 am to 2:00 pm. iii) XI & XII- 8:00 am to 12:15 pm.

THE SCHOLARS' ARENA™
GROUP OF INSTITUTIONS

विद्यैव सर्वम्

THE SCHOLARS' ARENA ENGLISH MEDIUM SR. SEC. SCHOOL
(CBSE Affiliated) 29, New Swami Nagar, 100 Feet Road, Tekri Madri Link Road, Udaipur (Raj.)

THE SCHOLARS' ARENA ENGLISH MEDIUM SR. SEC. SCHOOL
(CBSE Affiliated) R.K. Puram, Near IOC Petrol Pump, Savina Bypass, Sec. 9, Hiran Magri, Udaipur (Raj.)

THE SCHOLARS' ARENA GIRLS' B.Ed. COLLEGE, Udaipur

THE COUNSELLORS', Udaipur
(Psycho Research Organisation)

THE SCHOLARS' ARENA SCHOOL
Dangpada Near Essar Petrol Pump, Udaipur road, Banswara (Raj.)

AKME THE SCHOLARS' ARENA GIRLS' DEGREE COLLEGE
R.K. Puram, Nr. Peacock Hills, Opp. Sai Apartment, Sec.9, Udaipur (Raj.)

Our Proposed School Starting From 2016-2017 :
AKME THE SCHOLARS' ARENA SCHOOL
Laxmanpura, Sagwara (Raj.)

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

सितम्बर 2016
वर्ष 14, अंक 7

प्रत्यूष

मूल्य 25 ₹
वार्षिक 300 ₹

अन्दर के पृष्ठों पर...

6 हिंगोनियाँ का सच

8 पाकिस्तान विघटन के कंगार पर

पितरों को नमन् 14

18 सुरक्षित नहीं औरत की अस्मत

26 रियो में बेटियों ने पाए पदक

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

Supreme Designs
कम्प्यूटर ग्राफिक्स विकास सुवालका, गिरिराज सिंह
ईश्वर सिंह

मुद्रक पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि.
गुलाब बाग रोड, उदयपुर (राज.) फोन : 2418482, 241065

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
क्रृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, धीरज बिलोची
लोकेश दशोरा

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313 001

कार्यालय पता : 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष : 0294-2427616, 2414933, 2413477, 2100408-09, फेक्स : 0294-2525499
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
visit us at : www.pratyushpatrika.com, E-mail : pankajkumarsharrma@pratyushpatrika.com
pankajkumarsharma2013@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

TANISHQ ENTERPRISES
Nirmal Sharma
Mo.: 9928844910
Authorised Distributor
Udaipur Zone
NCL Alltek & Seccolor Ltd.
सभी प्रकार के दिवार के पेन्ट, ऑयल पेन्ट व टेक्चर पेन्ट से सम्बन्धित कार्य किये जाते है।
Email: nirmal.sharma84@rediffmail.com
प्लॉट नं. 3, कालूराम जी की बाड़ी, गायरियावास, उदयपुर

A Product of
अर्चना Panch 5 mani
Fragrance
अर्चना एक्टिव
डिटर्जेन्ट वॉशिंग पाउडर
कपड़े रहे एक्टिव अर्चना एक्टिव डिटर्जेन्ट के साथ
आधुनिक एवं सर्वश्रेष्ठ तकनीक का आविष्कार एक्टिव डिटर्जेन्ट पाउडर
1 Kg. वाले कट्टे में 25 पाउच
500 Gram वाले कट्टे में 40 पाउच
200 Gram वाले कट्टे में 80 पाउच
निर्माता : पंचमणी फ्रेगरेन्स
कार्यालय : ने. हा. 76, एयरपोर्ट रोड
ग्लास फैक्ट्री चौराहा, खेमपुरा की तरफ
उदयपुर-313001 (राजस्थान)
वेबसाईट : www.archanaagarbatti.com
ई-मेल : sales@archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti
फोन : 0294-2492161, 2490899
व्यावसायिक पूछताछ एवं डीलरशिप हेतु आर्थिक रूप से सुदृढ़ पार्टियां (वितरक रहित क्षेत्र मे) सम्पर्क करें।
मो.: +91-98290 42705, +91-99508 15555

पीओके पर कड़ा रूख

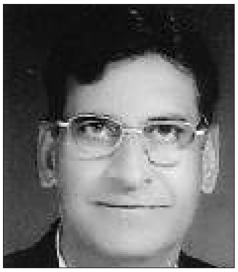

ऐसी कोई के हालात समस्या नहीं होती, जिसका समाधान न निकल सके। प्रयासों की ईमानदारी और मज़बूत इच्छाशक्ति 'केटलिस्ट' का काम करती है। जम्मू-कश्मीर के हालात को लेकर भारत पर आरोप लगाने में मशगूल पाकिस्तान अपने गिरेबां में झांकने को तैयार नहीं है। पाक हुकूमत अपनी नाकाबिलियत को छुपाने के लिए कश्मीर को सदाबहार मुद्दा बनाए रखना चाहती है। भारतीय नेतृत्व सत्तर साल तक बड़े भाई की तरह पाक की उच्छृंखलता को सहता रहा। लेकिन पाकिस्तान ने ढीठता नहीं छोड़ी। वह गाहे-बगाहे अपने पाले हुए आतंकियों को भेज कर कश्मीर को लहुलूहान करता रहा। 1.39 करोड़ की आबादी वाला जम्मू-कश्मीर आतंकियों के दंश को भोगते हुए नारकीय जीवन जीने को मजबूर रहा है। संसद के वर्षाकालीन सत्र में 12 अगस्त को बुलाई गई सर्वदलीय बैठक में घाटी के बिगड़े हालात पर चिंता जताई गई।

जिन हाथों में किताबें और कलम होनी चाहिए थी, वे बच्चे लगातार सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी कर रहे हैं। आतंकवादियों के दबाव में उनके अभिभावक घर के अहाते से उनका दुस्साहस बढ़ा रहे हैं, सर्वदलीय बैठक में सभी दलों ने कश्मीर मुद्दे पर एकजुटता दिखाई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि पाकिस्तान के कब्जे वाला कश्मीर(पीओके) भारत के जम्मू-कश्मीर का अभिन्न हिस्सा है और अब वहां के लोगों से भी बात होगी। सात दशक तक पार्टियां सत्ता में आती-जाती रहीं। लेकिन किसी भी दल की सरकार के मुखिया ने अखंड कश्मीर के मुद्दे पर कभी मुंह नहीं खोला। 27 अक्टूबर, 1947 को जब जम्मू-कश्मीर कानूनी रूप से भारतीय संघ का हिस्सा बन गया था, तो उसका आधा हिस्सा क्यों पाकिस्तान के कब्जे में है ? प्रधानमंत्री मोदी ने पीओके के साथ बलूचिस्तान में पाक सेना द्वारा दमन व अत्याचार को भी इस मुद्दे के साथ जोड़कर पूरी तरह पाक सरकार को बेनकाब कर दिया। इससे पहले गृहमंत्री राजनाथ सिंह दक्षेस समूह देशों के सम्मेलन के सिलसिले में इस्लामाबाद गए थे। वहां उन्होंने आतंकवाद के पोषण के लिए पाक सरकार को खासी लताड़ दी और बैठक छोड़ कर भारत लौट आए। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी आश्वस्त किया है कि कश्मीर मसले पर उनकी पार्टी केन्द्र के साथ है।

कश्मीर को लेकर पाकिस्तान के दुष्प्रचार के खिलाफ भारत का रूख लगातार कड़ा होता जा रहा है। प्रधानमंत्री, गृहमंत्री के बाद केन्द्रीय मंत्री जितेन्द्र सिंह ने ऐलान किया कि अगले साल स्वाधीनता दिवस पर पाक अधिकृत कश्मीर में तिरंगा फहराएंगे। भारत के उत्साहवर्धक बयानों से बलूचिस्तान में हर्ष की लहर है। बलोच नेता नवाब बुग्ती ने मोदी के बयान का स्वागत किया है। इससे पहले भारत ने शोषण की चक्की में पिसते बलूचिस्तान पर कभी आधिकारिक टिप्पणी नहीं की थी। उधर सिंध में आजाद सिंधु देश के लिए भी आंदोलन हो रहे हैं। पाक में फिर बचा क्या ..... सिर्फ पंजाब। जिन्ना का पाकिस्तान लगता है सिर्फ पंजाब प्रांत तक ही सिमट जाएगा। उसके हाथ से (पूर्वी पाकिस्तान)बांग्लादेश तो कभी का निकल चुका है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कह चुके हैं कि केन्द्र संविधान के बुनियादी सिद्धान्तों के आधार पर स्थायी और शांतिपूर्ण समाधान के लिए वचनबद्ध है। सरकार सभी वर्गों की शिकायतें दूर करने को तैयार है। जम्मू-कश्मीर में शांति बहाली के लिए भारत सरकार को जम्मू-कश्मीर से लगती सीमा को अभेद्य और सुरक्षित बनाने के साथ ही कश्मीर घाटी में अलगाववादी और पाकिस्तान परस्त तत्वों को अलग-थलग व निष्प्रभावी करना होगा। जम्मू-कश्मीर सूबे में भाजपा-पीडीपी गठबंधन की सरकार है। मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती अलगाववादी नेताओं से बातचीत की पक्षधर रही हैं। उन्हें भी समझना होगा कि उनका वर्षों पुराना यह फॉर्मूला आज की बदली परिस्थितियों में आउट-ऑफ-डेट बन चुका है। पाकिस्तान सुधरने को तैयार ही नहीं है। तो ऐसी सलाह का क्या औचित्य ? पाकिस्तान को घेरने के लिए बलूच, सिंध को समर्थन देना होगा। जब भी पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र के मंच से कश्मीर की बात उठाता है तो भारत को भी बलूचिस्तान और पीआके में अवाम के साथ हो रहे मानवाधिकार उल्लंघन के मसले को पूरी शिद्दत से उठाना होगा।

हिंगोनिया गोशाला का सच!

– शांतिलाल शर्मा

हिंगोनिया गोशाला में अगस्त माह में बड़ी संख्या में गायों के मरने की खबर से देश भर में हड़कम्प मचा है। खराब प्रबन्धन, भ्रष्टाचार और लापरवाही से हजारों गायें काल के गाल में समा गई। यह सब उस भाजपा सरकार के राज में हुआ, जो रामराज्य और गोसेवा की सौगंध लेकर सत्ता में आई। हिंगोनिया गौशाला राजधानी जयपुर से महज 25 किमी दूर है। इतनी बड़ी घटना के बावजूद किसी अफसर और मंत्री ने सुध नहीं ली। राहत और आपदा प्रबन्धन के नाम पर ढोल पीटने वाले इतनी तादाद में गायों के असमय मरने की घटना पर चुप्पी साधे रहे। जब गोशाला में प्रदेश का पशुधन उपेक्षा और भ्रष्टाचार के चलते दम तोड़ रहा था, उस वक्त भी पशुपालन और चिकित्सा विभाग जाग जाता तो सैंकड़ों गायों की जानें बच जाती। इस गोशाला में पिछले दो साल में 7 हजार से अधिक गाएं दम तोड़ चुकी हैं। पिछले एक माह में यहां डेढ़ हजार से अधिक गोधन काल–कवलित हुआ।

एक हजार बीघा भूमि पर फैली और पैंतीस वर्ष पूर्व स्थापित गोशाला जयपुर नगर निगम के क्षेत्राधिकार में है। देखरेख के लिए अफसरों के साथ कई कर्मचारियों की ड्यूटी लगी है। कुप्रबन्धन के चलते अपेक्षित स्टाफ इसे छोड़ कर जा चुका है। कुल 8,700 गायों की देखरेख के लिए करीब 500 कर्मचारियों की जरूरत है। जबकि मात्र 260 कर्मचारी लगे है। नगर निगम से पिछले पांच माह से वेतन न मिलने के कारण कई कर्मचारी हड़ताल पर हैं। शेष 50–60 कर्मचारी भला इतनी बड़ी संख्या में पशुधन की देखरेख, चारा, पानी, दवा का इंतजाम कैसे कर सकते हैं। उनकी मौत की मुख्य वजह भी यही है। ठेका कर्मचारियों से व्यवस्था सुधारने की कोशिशें भी नाकाम रहीं। पिछले महीने हुई लगातार बारिश ने लचर व्यवस्था को और बुरी तरह झकझोर डाला। पांच ट्रैक्टर गोबर प्रतिदिन जहां उठाने की जरूरत हो, वहां पिछले दो माह से टोकरी भर गोबर भी नहीं उठा। दलदल और कीचड़ पसर गया। तीन सौ–चार सौ गायें उसी में फंस कर मर गई और एक हजार से ज्यादा भूख और बीमारी से मौत का निवाला बनी। हालात ज्यादा बिगड़ने पर मौके पर पहुंची डॉक्टरों की टीम भी इतनी बड़ी तादाद में बीमार व नि:शक्त गायों के सामने लाचार थी। वर्ष 2014–15 में गोशाला में चारा आदि पर 1078.81 लाख रूपये का खर्च दर्शाया गया है।

हिंगोनिया गोशाला की इस घटना से प्रदेश की राजनीति में उबाल आया हुआ है। इसके साथ–साथ गुजरात के उना शहर में मृत गायों की खाल उतारने वाले पेशेवर लोगों पर नकली गोरक्षकों पर हमले से उपजे आक्रोश से देश भर में हिंगोनिया और उना की चर्चा चल पड़ी। कांग्रेस को मुद्दा मिल गया। पार्टी ने जयपुर के कानोता पुलिस थाने में गोहत्या का मुकदमा दर्ज कराया। हिंगोनिया गोशाला को गायों की कब्रगाह बताते हुए कांग्रेस नेताओं ने कहा कि राममंदिर व गोरक्षा के नाम पर सत्ता में आई भाजपा सरकार के लिए यह शर्मनाक है।

राज्य सरकार गो–संरक्षण के लिए टैक्स वसूल रही है, दूसरी ओर उसकी लापरवाही के कारण गायों की मौत हो रही है। ऐसे में गो–संरक्षण को लेकर सरकार की नीयत संदेह के घेरे में है।

हिंगोनिया की गोशाला लम्बे समय से विवादों में और बदनाम है। सरकारी धन का खुले आम दुरूपयोग हो रहा है। क्षेत्राधिकार नगरीय विकास निगम का है। गोपालन निदेशालय और पशुपालन विभाग का दखल तो है पर महज कागजों में। तीनों के बीच जवाबदेही व समन्वय के अभाव में हालात बदतर हैं।

9 अगस्त को जयपुर में मंत्री समूह के साथ जन प्रतिनिधियों की बैठक में भाजपा कार्यकर्ताओं का गुस्सा सातवें आसमान पर था। विधायकों ने कहा यदि पहले ही सरकार ध्यान देती तो भाजपा की इतनी छिछालेदार न होती। अब वे कौनसा मुंह लेकर जनता के सामने जाएं। हालात बिगड़ने के कितने भी कारण गिनाए जाएं, लेकिन जनता सच जानती है। वह सीधा सवाल करती है कि जब यह सरकारी विभाग लाखों–करोड़ों रुपयों का अनुदान उठाता है, तो वह जाता कहां है ? भाजपा गाय और राम की दुहाई देते नहीं थकती। देश में कहीं भी गोहत्या की घटना सामने आने पर इसके बयानवीर आन्दोलनों पर आमादा हो उठते हैं। गोमाता की रक्षा का दंभ भरने

वाले क्या इन लोगों ने कभी निराश्रित गायों को अपने घर के खूंटे से बांधा है या हाइवें पर ट्रकों से कुचलने से बचाया है ?

भारत में 20 करोड़ गायें हैं। देश के 6 लाख गांवों में पशुधन को सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक शुभ-लाभ की जीवनदायी शक्ति माना जाता है। एनजीओ की कितनी ही गोशालाएं भ्रष्टाचार का अड्डा हैं। गोवध के लिए तस्करी चरम पर है। विकास के नए रंग में डिजिटल भारत आज दुनिया का सबसे बड़ा मांस निर्यातक राष्ट्र बन गया है। गुजरात के उना शहर में गायों को लेकर जो बवाल मचा, वह मात्र सियासत थी। देश के कई हिस्सों में नकली गोरक्षक असामाजिक कार्यों में लिप्त पाए गए। वे छोटे से मुद्दे को लेकर दंगा-फसाद और धार्मिक उन्माद पैदा करने की ताक में रहते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ऐसे नकली गोरक्षकों पर पिछले दिनों खूब बरसे। उन्होंने कहा

गोशाला में अनदेखी के चलते गाय लगातार मर रही है। भाजपा ने गाय के मुद्दे पर सियासी लाभ तो लिया, लेकिन सत्ता में आने के बाद गौवंश की अनदेखी कर उसे मरने के लिए छोड़ दिया। सरकारी संरक्षण में गायों की मौत सबको आहत कर रही है।

– सचिन पायलट, प्रदेशाध्यक्ष, कांग्रेस

कि ऐसे लोग रातभर गोरखधंधे करते हैं, दिन में वे गोरक्षक बन जाते हैं। लेकिन प्रधामंत्री ने राजस्थान में अपनी ही मुख्यमंत्री के राज में घटी घटना को नजरंदाज कर दिया। राजस्थान हाईकोर्ट ने हिंगोनिया गोशाला में बड़ी संख्या में गायों की मौत पर चिंता जताते हुए राज्य सरकार और नगर निगम को दिशा-निर्देश जारी किए हैं। गाय और उससे जुड़ी राजनीति एक बार फिर उबाल पर है। यह छिपा नहीं है कि गोशालाओं में गायें दारूण दशा में रहती हैं। यह अकेले हिंगोनिया की गोशाला का ही मसला नहीं है। कमोबेश

प्रदेश की कई गोशालाएं दुर्दशा की शिकार हैं। मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने चार दिन में गोशाला की दशा सुधारने का अफसरों को अल्टीमेटम देकर मात्र औपचारिकता का निर्वाह किया है। हालात शर्मनाक हैं। एक ओर सरकार गायों को बचाने के लिए लोगों से टैक्स वसूल रही है, दूसरी ओर उसकी लापरवाही के कारण गायों की मौत हो रही है। ऐसे में गायों के संरक्षण को लेकर सरकार की नीयत संदेह के दायरे में है। गोवंश संरक्षण सरचार्ज के नाम पर पांच महीनों में सरकार 110 करोड़ रुपए वसूल चुकी है, इसके उपयोग की अब तक कोई योजना ही नहीं बना पाई है।

यह हाल तब है जब इस कोष के उपयोग के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में समिति बने दो महीने हो चुके हैं। सरकार ने आठ मार्च को अपने बजट भाषण में गोवंश के संरक्षण और संवर्धन के लिए स्टाम्प ड्यूटी पर 10 प्रतिशत अतिरिक्त अधिभार लगाया था। किसानों और पशुपालकों की यह अनदेखी भाजपा पर भारी ही पड़ने वाली है।

रजि. क्रमांक 118/75-76

हैप्पी होम उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्रतापनगर, उदयपुर

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम में कक्षा- 12 तक मान्यता प्राप्त

शाखा- हैप्पी होम उच्च माध्यमिक विद्यालय, पुरोहितों की मादड़ी

विशेषताएँ:-

- 1975 से उदयपुर में शिक्षा सेवा।
- कला, वाणिज्य एवं विज्ञान सभी संकाय की सुविधा।
- प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ सदस्य।
- 'करके सीखो' सिद्धान्त को प्राथमिकता।
- आधुनिकतम विज्ञान प्रयोगशालाएँ।
- पूर्ण सुविधायुक्त कम्प्युटर लैब।
- डिजिटल क्लासरुम सुविधा।
- सभी कक्षाओं में सीसीटीवी कैमरे।
- सौहार्द्र पूर्ण वातावरण में सहशिक्षा।
- उत्कृष्ट परीक्षा परिणामों का पर्याय।
- अभिभावकों से सम्पर्क हेतु एसएमएस सुविधा।
- वॉटर कूलर के माध्यम से शुद्ध पानी की व्यवस्था।
- शिक्षा में होने वाले नवीनतम नवाचारों का शिक्षण में समावेश।
- संस्था से अध्ययनरत छात्र देश-विदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उच्चस्थ पदों पर आसीन।

फोन - प्रतापनगर (वि.) 0294-2491411, 2492939 (नि.) 2490130
पुरोहितों की मादड़ी (वि.) 2491383
Email: happyhome.srsec@gmail.com

विघटन के कगार पर पाकिस्तान

- विष्णु शर्मा हितैषी

पाकिस्तान के अशांत दक्षिण-पश्चिम बलूचिस्तान सूबे के क्वेटा स्थित एक सरकारी अस्पताल में पिछले माह 8 अगस्त को एक संदिग्ध आत्मघाती बम विस्फोट और उसके बाद हुई गोलीबारी में 75 से अधिक लोग मारे गए और 100 से ज्यादा जख्मी हुए। यह पाकिस्तान का ऐसा गरीब व बदहाल इलाका है, जिसके पास अकूत प्राकृतिक संसाधन है। बावजूद इसके वहां के विकास में पाकिस्तान के हुक्मरानों की कोई दिलचस्पी नहीं है।

दशकों से चली आ रही इसी उपेक्षा के कारण अब वहां के लोग पाकिस्तान से आज़ादी मांग रहे हैं। क्वेटा में बलूचिस्तान बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एडवोकेट बिलाल अनवर कासी की अज्ञात बंदूकधारियों ने गोली मारकर हत्या कर दी थी। सहयोगी वकील बिलाल के शव को लेकर सिविल अस्पताल पहुंचे। इसके कुछ देर बाद ही अस्पताल में विस्फोट हुआ। पाकिस्तान का पूरा तंत्र आतंकवादियों की पौध तैयार करने में जुटा है, देश के चरमराते आर्थिक हालात और नागरिकों की समस्याओं की ओर सरकार का कोई ध्यान नहीं है, दरअसल पूरी सरकार ही सेना आतंकियों की मुट्ठी में बंद है।

पीओके में धांधली

पाकिस्तान के अनधिकृत कब्जे वाले कश्मीर(पीओके) में 21 जुलाई को सम्पन्न लेजिस्लेटिव असेम्बली(विधानसभा) के चुनाव के दौरान धांधली के खिलाफ व्यापक स्तर पर विरोध प्रदर्शन भी हुए हैं। नवाज शरीफ की पार्टी पाकिस्तान मुस्लिम लीग की जीत को खारिज करने की मांग करते हुए गुस्साए लोगों ने पाकिस्तान का झण्डा तक जला दिया और इलेक्शन पोस्टरों पर कालिख पोत दी। मुज़फ्फराबाद, नीलम घाटी, मीरपुर, कोटली, चिन्नारी सहित कई इलाकों में लोग सड़क पर उतर आए और जगह-जगह आगज़नी हुई। पाकिस्तान मुस्लिम लीग(नवाज़) के एक सदस्य की हत्या भी कर दी गई। इस चुनाव में नवाज शरीफ की पार्टी ने 42 में से 32 सीटों पर जीत दर्ज कराई। इस तरह उसने नई सरकार बनाने के लिए दो-तिहाई बहुमत हासिल कर लिया। लोग न सिर्फ चुनाव रद्द करने की मांग कर रहे हैं बल्कि अधिकार भी मांग रहे हैं। पीओके में सरकारी शोषण पराकाष्ठा पर है। लोग अधिकारियों से रूबरू शिकायत भी नहीं कर सकते। उन्हें अपनी समस्या या विचार को पत्र के माध्यम से अभिव्यक्त करना होता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक जिन लोगों ने पीओके में चुनाव के दौरान चुनाव में धांधली का विरोध किया, उन्हें सेना ने मौत के घाट उतार दिया। पीओके के पूर्व प्रधानमंत्री और मुस्लिम कांफ्रेंस के नेता सुल्तान मेहमूद चौधरी ने भी आरोप लगाया कि मीरपुर में वोटों के लिए जोर-जबरदस्ती और खरीद-फरोख्त की गई।

पाकिस्तान में मौजूदा हालात पर यदि गहराई से दृष्टि डाली जाए तो यही नज़र आता है कि यह मुल्क खुद की करतूतों से विघटन के कगार पर खड़ा है। बलूचिस्तान में गृह युद्ध जैसे हालात तो सिंध में उफन रहा है, असन्तोष का ज्वार। पाकिस्तान ने कश्मीर के जिस क्षेत्र पर जिसे गुलाम कश्मीर या पाक अधिकृत कश्मीर कहा जाता है, के शोषण और अत्याचार से पीड़ित लोगों में पाकिस्तान से मुक्त होने की छटपटाहट है।

भारत की सटीक टिप्पणी

इस मामले में भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने सटीक टिप्पणी की है कि पाकिस्तान अवैध कब्जे को सही साबित करने के लिए फर्जी चुनाव करवाता है और जब उसकी कलई खुल जाती है तो वह लोगों का दमन करता है। पीओके के इस चुनाव पर सवाल सिर्फ भारत ने ही नहीं उठाया है,

बल्कि पाकिस्तान के राजनैतिक दलों के साथ-साथ वहां के मानवाधिकार संगठन भी यह मान रहे हैं कि चुनाव में धांधली हुई है। अगर इतिहास के पन्नों को पलटें तो पीओके पर भारत का पक्ष स्पष्ट हो जाता है। भारत के बंटवारे के बाद कश्मीर के महाराजा हरिसिंह ने कश्मीर राज्य के भारत में विलय प्रस्ताव को मान लिया था। महाराजा से हुई संधि के परिणामस्वरूप पूरे कश्मीर राज्य पर भारत का स्वत: अधिकार हो गया था। इसलिए पाक अधिकृत कश्मीर सहित पूरे कश्मीर पर भारत के दावे की अनदेखी कोई कैसे कर सकता है ?

सेना और शासन का अत्याचार

गुलाम कश्मीर(पाक अधिकृत) में हर वर्ष 22 अक्टूबर को पाकिस्तान विरोध दिवस मनाया जाता है। इसी दिन 1947 को पाकिस्तानी सेना ने इस क्षेत्र में घुसपैठ करने वाले पख्तूनों को समर्थन दिया था। जम्मू-कश्मीर के चार जिले गुलाम कश्मीर में है। सन् 2011 में भी यहां की नीलम घाटी के एथमुकाम शहर में आतंकी संगठनों के खिलाफ दो बड़ी रैलियां हुई थीं। सन् 2014 के ही 22 अक्टूबर को मुजफ्फराबाद और कोटली में आज़ादी की मांग पर बड़ी रैली निकली। सन् 2015 में कश्मीरियों पर सैनिक और शासनिक अत्याचारों के विरूद्ध जबर्दस्त प्रदर्शन हुआ। जिसमें पाक शासन के खिलाफ नारेबाजी के साथ आज़ादी का नारा भी गूंजा था। तब यहां के बाशिन्दों ने यह कहते हुए पुलिस के अत्याचारों का विरोध किया था कि यह सब कुछ पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी के इशारे पर किया जा रहा है क्योंकि वह उन्हें जेहाद में शामिल करना चाहती है। इस दौरान यहां भारत के समर्थन में नारे गूंजे थे। इन हालातों और उनके समूचे सत्य

और तथ्यों की पड़ताल की जाए तो यही नतीजा सामने आएगा कि पाकिस्तान का हाथ जम्मू-कश्मीर में अलगाववाद को बढ़ावा देते-देते अब खुद झुलसने लगा है। पाक अधिकृत कश्मीर में गरीबी और बेरोजगारी में मुब्तिल्ला लोगों की बजाय मदद करने के सेना और शासन उन पर निर्ममतापूर्वक अत्याचार कर रहे हैं। यहां नौकरियों में पाकिस्तान के सिंध, पंजाब व दीगर राज्यों के लोगों को प्राथमिकता दी जाती है, स्थानीय बाशिन्दों को हाशिये पर रखा जाता है। गुलाम कश्मीर के लोगों का पाकिस्तान के विरोध में एकजुट होना आकस्मिक घटना मात्र नहीं है, बल्कि इसकी पृष्ठभूमि में अत्याचार और आईएसआई के दबाव का घुटन भरा माहौल भी है। पीओके के बाद गिलगित-बाल्टिस्तान में भी सरकार के खिलाफ प्रदर्शन हुए हैं। इसकी वजह सरकार की शह पर इलाके में बढ़ती चीन की दखलन्दाजी बताया जा रहा है। मुख्य विरोध चीन-पाकिस्तान के बीच बन रहे आर्थिक गलियारे को लेकर है। लोगों का आरोप है कि चीन अपने फायदे के लिए यहां के संसाधनों का दोहन करना चाहता है।

फिसलता बलूचिस्तान :

पीओके की ही तरह बलूचिस्तान में भी पाकिस्तान के खिलाफ विरोध के स्वर मुखरित हैं। वहां के आन्दोलनकारी भारत से मदद की गुहार कर रहे हैं। वे चाहते हैं कि जिस तरह 1971 में भारत ने पाकिस्तान के शोषणवादी पंजों से पूर्वी पाकिस्तान को आजाद करवा कर स्वतंत्र बांग्लादेश के निर्माण में मदद की, उसी तरह बलूचों के लिए भी नई दिल्ली आगे आए। हालांकि यह इतना सहज और आसान नहीं है। लेकिन हम वहां के लोगों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण समर्थन तो व्यक्त कर ही सकते हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 15 अगस्त के स्वाधीनता दिवस समारोह में लालकिले की प्राचीर से सांकेतिक रूप से ऐसा किया भी।

यह समर्थन इसलिए ज़रूरी जान पड़ता है कि वहां आज भी हिन्दू समाज अपने को मेहफूज मानता है, बलूच पाकिस्तान के अन्य हिस्सों की तरह कट्टरपंथी नहीं है, उनमें धर्मनिरपेक्षता के भाव हैं। जहां तक भारत की मदद का सवाल है, उसे ही क्यों तमाम मानवाधिकार हिमायतियों की उसके पक्ष में आवाज़ उठनी चाहिए। यह सही है कि भारत की इस क्षेत्र पर पैनी निगाह जरूरी है, क्योंकि बलूचिस्तान का अपना सामरिक महत्व है। ईरान और अफगानिस्तान तक पहुंचने में यह क्षेत्र महत्वपूर्ण है। कुछ ऐसी जटिलताएं हैं जो भारत को बलूचिस्तान में हस्तक्षेप से रोके हुए है। बांग्लादेश देश के साथ हमारी सीमा जुड़ी थी और भारत अपनी सीमा पर पाकिस्तान के हमलों को बर्दाश्त नहीं कर सकता था। इसलिए हमें वहां सैन्य

दखलन्दाजी करनी पड़ी। लेकिन इतना ज़रूर है कि भारत समय और हालातों की करवट के साथ अपना रूख तय कर सकता है। बलूचिस्तान में पिछले 14 वर्षों से उथल-पुथल कुछ ज्यादा ही बढ़ी है, जो किसी की दृष्टि में विद्रोह है तो कोई इसे मुक्ति संघर्ष बता रहा है। जहां तक विद्रोह की बात है तो वह 1948-49 से हो रहा है। इसके बाद के वर्षों में इसका वेग बढ़ता गया। विद्रोह चरम पर 2006 में तब पहुंचा जब नवाब अकबर बुग्ती की हत्या हुई। बलूचिस्तान की आंतरिक हालत अत्यन्त शोचनीय है। विकास के मामले में वह पाकिस्तान के दीगर राज्यों से काफी पिछड़ा हुआ है। इस राज्य का डेरा बुग्ती इलाका गैस भंडार के लिए प्रसिद्ध हैं, लेकिन यहां के लोग मिट्टी के चूल्हे पर पकी रोटी खाने को विवश हैं। यहां के बाशिन्दों को शेष पाकिस्तान में 'असभ्य' तक कहा जाता है। बलूचिस्तान पाकिस्तान के 40-45 फीसद क्षेत्र में फैला है, पर वहां पाकिस्तान की बमुश्किल आबादी 5-7 प्रतिशत बसती है। बलूच चूंकि कबीलाई समाज से सम्बद्ध हैं, अतएव वे बटे हुए हैं और दूर-दूर इलाकों में अपने-अपने कबीले के साथ रहते हैं हालांकि 2002 में जो विद्रोह शुरू हुआ, उसके बाद से जागृति आई है। पढ़े-लिखे नौजवान कबीलाई विभेद मिटाने में अहम भूमिका निभा रहे हैं और यही वजह है कि वे पाकिस्तान की सेना के जुल्म के शिकार भी हो रहे हैं। बड़ी तादाद में नौजवान अपने घरों से उठवा लिए गए जिनका आजतक अता-पता नहीं है। इन्हीं हालातों ने युवाओं को एकजुट होने और बगावत का झण्डा उठाने के लिए मजबूर कर दिया है।

दलितों पर अत्याचार व भ्रष्टाचार ने घर बिठाया आनंदी बेन को

गुजरात के सियासी उथल-पुथल ने भाजपा को बेचैन कर दिया है। 2019 के ऑपरेशन के लिए ऑक्सीजन गुजरात और यूपी के अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव से आनी है और दोनों जगह भाजपा चक्रव्यूह में है। इस बीच दोनों ही जगह पस्त नजर आ रही कांग्रेस इन मुद्दों को लेकर नए जोश से भर उठी है।

– मोदी-शाह ने पटेलों से छीनी कमान, जैन समुदाय के विजय रूपाणी को दिया मौका

-नंदकिशोर

नाटकीय घटनाक्रम में 5 अगस्त को मुख्यमंत्री पद पर नितिन पटेल की दावेदारी को दरकिनार कर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विजय रूपाणी को गुजरात का नया मुख्यमंत्री चुन लिया गया। अगस्त की शुरूआत में ही निवर्तमान मुख्यमंत्री आनंदी बेन अपने पद से इस्तीफा दे चुकी थीं। गुजरात में भाजपा सरकार की तेजी से गिरती साख को थामने के प्रयासों में सरकार का मुखिया बदल गया है। इससे पहले 4 अगस्त को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह की अगुआई में पार्टी नेताओं और बाद में विधायक दल की मैराथन बैठक हुई। इनमें नितिन पटेल के नाम पर सहमति बनती दिख रही थी और वे आश्वस्त थे। उन्होंने अपने घर पूजा करवा कर मिठाइयां भी बांटी। 5 अगस्त को बैठक के बीच शाम 4 बजे अचानक सियासत ने नया मोड़ लिया। आनंदी बेन नितिन पटेल के लिए तो अमित शाह विजय रूपाणी के लिए अड़ गए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अक्सर अपने खास अंदाज के लिए जाने जाते हैं। उनके चौंकाने वाले निर्णय ने सभी को हैरत में डाल दिया। भाजपा आलाकमान के नए निर्देश पर विधायक दल की सर्वसम्मति के बाद प्रदेश भाजपा अध्यक्ष विजय रूपाणी गुजरात के नये मुख्यमंत्री चुने गए।

दरअसल नरेन्द्र मोदी ऐन वक्त पर अपने पत्ते खोल कर नए समीकरण बनाते हैं। इसके लिए वे कोई भी जोखिम लेने से नहीं चूकते। महाराष्ट्र में मराठी एकनाथ खड़से के तगड़े दावे के बावजूद देवन्द्र फड़नवीस, हरियाणा में जाटों के दबदबे को दरकिनार कर पंजाबी बिरादरी के मनोहर लाल खट्टर तथा झारखंड के आदिवासी बहुल इलाके में गैर आदिवासी रघुबरदास को मुख्यमंत्री बनाया गया था। वही प्रयोग गुजरात में भी किया गया, जहां प्रभावी पटेल बिरादरी के ठोस दावे के बावजूद जैन समुदाय के विजय रूपाणी को सत्ता सौंपी गई। गुजरात में प्राय: पटेल ही सरकार के मुखिया बनते आए हैं। पटेल राजनीतिक, सामाजिक, व्यावसायिक और सामाजिक क्षेत्र में काफी प्रभावशाली हैं। गुजरात की कुल आबादी में इनकी 14-15 फीसद हिस्सेदारी है। ये भाजपा के पारंपरिक वोट बैंक माने जाते हैं। हालांकि पिछले साल से शुरू हुए पटेल-पाटीदार आरक्षण आन्दोलन ने बीजेपी की चूलें हिला दी। रही-सही कसर ऊना में 11 जुलाई को दलितों के साथ मारपीट से उपजे आक्रोश ने पूरी कर दी। हालांकि अमित शाह और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भरोसा है कि पटेल-पाटीदार भाजपा से दूर नहीं जाएंगे। गुजरात में केशुभाई पटेल के बिना भाजपा के सिमट जाने की आशंकाओं को नरेन्द्र मोदी पहले ही बेअसर कर चुके हैं। जब केशुभाई पटेल को सीएम पद से हटाया गया तो लगा कि भाजपा राज्य से ब्लैक आउट हो जाएगी। बावजूद इसके नरेन्द्र मोदी ने उसे सुपरपॉवर बना दिया और उनके नेतृत्व में गुजरात

आनंदी बेन की पांच बड़ी गलतियां उन्हें ले डूबी। आरक्षण आन्दोलन में गलत आकलन, लचर जनसम्पर्क, दलितों के खिलाफ हिंसा में सुस्ती, परिजनों के बड़े घपलों को शह और नौकरशाही व पुलिस में बढ़ते भ्रष्टाचार ने उनसे कुर्सी छीन ली।

देश का अग्रणी राज्य बन सका।

गढ़ बचाने की जुगत

निवर्तमान मुख्यमंत्री आनन्दी बेन की 'किचन केबिनेट' राज्य में हुई दो बड़े विद्रोहों को प्रभावी ढंग से संभाल नहीं पाई। निकाय चुनावों में पार्टी की करारी हार हुई। आनंदी बेन और नितिन पटेल दोनों ही मामलों में हाईकमान की नजर में खरे नहीं उतरे। शाह की तरह आनंदी बेन भले ही मोदी की भरोसेमंद सहयोगी रही हैं, लेकिन उन्हें जाना पड़ा, क्योंकि दलितों के साथ ज्यादती के बाद आनंदी बेन का एक दिन भी मुख्यमंत्री रहना भाजपा के लिए भारी पड़ रहा था। प्रधानमंत्री को कार्रवाई करते दिखना था। दूसरा आनंदी बेन की पांच बड़ी गलतियां उन्हें ले डूबी। आरक्षण आन्दोलन में गलत आकलन, लचर जनसम्पर्क, दलितों के खिलाफ हिंसा में सुस्ती, परिजनों के बड़े घपलों को शह और नौकरशाही व पुलिस में बढ़ते भ्रष्टाचार ने उनसे कुर्सी छीन ली।

विजय रूपाणी ने अपनी टीम बना ली है, परन्तु उनके मंत्रिमंडल पर अंगुली उठ रही है। 40 फीसद मंत्रियों पर आपराधिक मामले हैं। इनके खिलाफ हत्या, हत्या का प्रयास, लूट तथा डकैती जैसे संगीन आरोप हैं। इनमें से 84 फीसद करोड़पति हैं। रूपाणी के लिए एक और बड़ी चुनौती आनंदी बेन से विरासत में मिली बदहाल अर्थव्यवस्था को सुधारने की है।

नए मुखिया को रखना होगा बड़ा दिल

नरेन्द्र मोदी को अपने गृह राज्य को बचाने के लिए पटेलों और दलितों की आहत भावनाओं पर मरहम लगाने के लिए कुशल वार्ताकार की जरूरत है। अंतिम दौर में तमाम परिस्थितियां विजय रूपाणी के पक्ष में होती गई और वे गुजरात के चुनौतीपूर्ण पद पर आरूढ़ हो गए। वे गैर-विवादित चेहरा हैं। अमित शाह व नरेन्द्र मोदी के करीबी माने जाते हैं। उनका व्यवहार सबके साथ नम्र तथा शिष्टतापूर्ण रहा, लेकिन काम के मामले में काफी सख्त हैं। सामाजिक समरसता के साथ अगले वर्ष के अंत में होने वाले राज्य विधानसभा चुनावों में सफलता पाना उनके लिए सबसे अहम चुनौती है। गुजरात में नवनियुक्त मंत्रिमंडल पर अंगुली उठ रही है। 40 फीसद मंत्रियों पर आपराधिक मामले हैं। इनके खिलाफ हत्या, हत्या का प्रयास, लूट तथा डकैती जैसे संगीन आरोप हैं। इनमें से 84 फीसद करोड़पति हैं। रूपाणी के लिए एक और बड़ी चुनौती आनंदी बेन से विरासत में मिली बदहाल अर्थव्यवस्था को सुधारने की है। यदि 2017 के गुजरात चुनावों में भाजपा की हार हुई तो 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा के लिए सत्ता को पुन: हासिल करने का रास्ता बंद हो जाएगा। इसलिए गुजरात में सरकार को पटरी पर लाना भाजपा का अहम मुद्दा है। हालांकि पटेलों के दबदबे के कारण ही आलाकमान को नितिन पटेल को उप मुख्यमंत्री का पद देना और 8 पटेलों को मंत्री बनाना पड़ा है। आनंदी बेन मंत्रिमंडल के 9 मंत्रियों के पत्ते कट गए। अगले साल विधानसभा चुनाव है। रूपाणी को खासकर उस वोट बैंक को अपनी पार्टी के साथ पुन: जोड़ने के लिए काफी मेहनत करनी होगी, जो आनंदीबेन के दो साल के कार्यकाल में दूर छिटक गया है। अंदरूनी चुनौतियां भी रूपाणी के लिए सिरदर्द रहेंगी। उनसे कुशलता से पार पाना उनकी असली परीक्षा है।

पाठक-पीठ

कहां हैं, रोटी, कपड़ा और मकान?

प्रत्यूष का सम्पादकीय अच्छा लगा। आजादी के बाद रोटी, कपड़ा और मकान के सपने पूरे नहीं हो पाए। सत्तर फीसद जनता हाशिए पर जीवन यापन कर रही है। सही है कि अंग्रेज गए, सामंत गए पर लोकतंत्र की सीढ़ी चढ़कर नए सामंत सत्ता में घुस गए। 'बदला कुछ नहीं'। आम लोगों के सपने, कुम्हलाते रहे और मरते गए। आखिर कब पूरे होंगे सपने?

- खिवसिंह राजपुरोहित

घाटी के हालात सुधरने चाहिए

कश्मीर घाटी में अलगाव के बीज बोये जा रहे हैं। हालात को सुधरने नहीं दिया जा रहा है। 'आतंकी के मातम में धधकी घाटी' हकीकत को बयां करता आलेख अच्छा लगा। आलेख में आशंका जताई गई कि आंदोलन हिंसक मोड़ ले सकता है, यह बात सच निकली। गुमराह बच्चों को समझाने की कोशिश की जाए। यदि पाक परस्त आतंकी यूं ही खूनी खेल जारी रखते हैं तो घाटी को सेना के हवाले कर देना चाहिए।

- राजेश जैन

कश्मीरी पंडितों की पीड़ा

प्रत्यूष के अगस्त अंक में कश्मीर घाटी के पंडितों की दारूण-कथा को सुनकर दिल पसीज गया। लाखों कश्मीरी पंडित आतंकियों के कारण अपना घर-बार, सम्पत्ति छोड़ कर गए। आतंकियों की कमर तोड़े बिना समस्या का समाधान मुश्किल है। कश्मीर घाटी में आज भी पंडितों को धमकियां मिल रही है। मोदी सरकार को पंडितों का पुनर्वास सुनिश्चित करना होगा।

- डॉ. विनित सिंघल

जीएसटी पर भविष्यवाणी

जीएसटी पर सहमति बनने की जो उम्मीद 'प्रत्यूष' ने अपने अगस्त में अंक की, वह हकीकत साबित हुई। सहमति बनने के जिन कारणों का विश्लेषण किया गया वे तथ्यपरक थे।

- भंवरलाल मुण्डलिया

भारतीय संस्कृति के उद्गाता

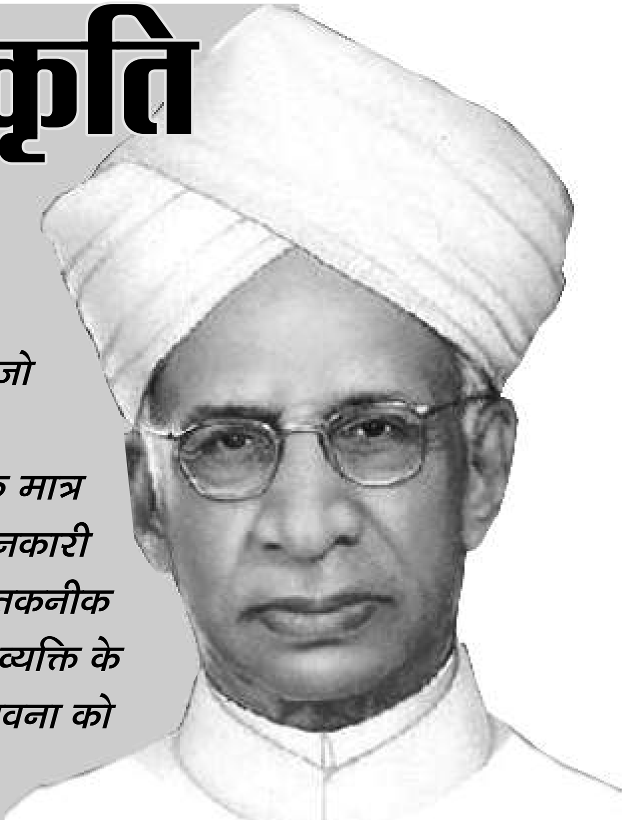

शिक्षा के क्षेत्र में डॉ. एस. राधाकृष्णन् ने जो अमूल्य योगदान दिया, वह निश्चय ही अविस्मरणीय रहेगा। उनका मानना था कि मात्र जानकारियां देना शिक्षा नहीं है। यद्यपि जानकारी का अपना महत्व है और आधुनिक युग में तकनीक की जानकारी भी बेहद ज़रूरी है फिर भी व्यक्ति के बौद्धिक झुकाव और उसकी लोकतांत्रिक भावना को नजरन्दाज नहीं किया जा सकता।

स्वतंत्र भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्ण का जन्म 5 सितम्बर, 1888 को तमिलनाडु के एक पवित्र तीर्थ स्थल तिरूतनी ग्राम में हुआ था। इनके पिता सर्वपल्ली विरास्वामी एक गरीब किन्तु विद्वान ब्राह्मण थे। इनके पिता पर एक बड़े परिवार की जिम्मेदारी थी, इस कारण राधाकृष्णन को बचपन में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। सर्वपल्ली राधाकृष्णन का शुरूआती जीवन तिरूतनी और तिरूपति जैसे धार्मिक स्थलों पर ही बीता। यद्यपि इनके पिता धार्मिक विचारों वाले इंसान थे फिर भी उन्होंने राधाकृष्णन् को पढ़ने के लिए क्रिश्चियन मिशनरी संस्था लुथर्न मिशन स्कूल, तिरूपति में दाखिल कराया। इसके बाद उन्होंने वेल्लूर और मद्रास कॉलेजों में शिक्षा प्राप्त की। वह शुरू से ही मेधावी छात्र थे। अपने विद्यार्थी जीवन में ही उन्होंने बाइबल के महत्वपूर्ण अंश याद कर लिए थे, जिसके लिए उन्हें विशिष्ट योग्यता का सम्मान भी प्रदान किया गया था। उन्होंने वीर सावरकर और विवेकानंद के आदर्शों का भी गहन अध्ययन कर लिया था। सन् 1902 में उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा अच्छे अंकों में उत्तीर्ण की जिसके लिए उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की गई। कला संकाय में स्नातक की परीक्षा में वह प्रथम आए। इसके बाद उन्होंने दर्शनशास्त्र में स्नाकोत्तर किया और जल्द ही मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में दर्शनशास्त्र के सहायक प्राध्यापक नियुक्त हुए। डॉ. राधाकृष्णन् ने अपने लेखों और भाषणों के माध्यम से विश्व को भारतीय दर्शन शास्त्र से परिचित कराया। राधाकृष्णन ने जल्द ही वेदों और उपनिषदों का भी गहन अध्ययन कर लिया। आज भी इनका जन्म दिवस हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाते हुए गुणी शिक्षकों का वंदन-अभिनंदन किया जाता है।

राधाकृष्णन का व्यक्तित्व

डॉ. राधाकृष्णन का जन्म भले ही एक छोटे से गांव के गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ। लेकिन शिक्षा-दीक्षा एक क्रिश्चियन स्कूल मे हुई। उस समय पश्चिमी जीवन मूल्यों को विद्यार्थियों में गहरे तक स्थापित किया जाता था। क्रिश्चियन संस्थाओं में अध्ययन करते हुए भी राधाकृष्णन के जीवन में उच्च गुण समाहित हुए, और वह परंपरागत तौर पर ना सोच कर व्यवहारिकता की ओर उन्मुख हुए। शिक्षा के प्रति रूझान ने उन्हें एक मजबूत व्यक्तित्व प्रदान किया। भारत की संस्कृति के ज्ञानी, एक महान शिक्षाविद्,महान वक्ता होने के साथ ही विज्ञानी हिन्दू विचारक भी थे। राधाकृष्णन् ने अपने जीवन के 40 वर्ष एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किए। वह एक आदर्श शिक्षक थे।

राजनैतिक जीवन

डॉ. राधाकृष्णन् अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुके थे। उनकी योग्यता को देखते हुए ही उन्हें संविधान निर्मात्री सभा का सदस्य बनाया गया। वह 1947 से 1949 तक इसके सदस्य रहे। इसी बीच वे ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालयों के चेयरमैन भी नियुक्त किए गए। जब भारत को स्वतंत्रता मिली उस समय जवाहरलाल नेहरू ने राधाकृष्णन से यह आग्रह किया कि वह विशिष्ट राजदूत के रूप में सोवियत संघ के साथ राजनयिक कार्यों की पूर्ति करें। 1952 तक वह राजनयिक रहे। इसके बाद उन्हें उपराष्ट्रपति पद पर नियुक्त किया गया। संसद के सभी सदस्यों ने उन्हें उनके कार्य व्यवहार के लिए काफी सराहा।

1962 में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का कार्यकाल समाप्त होने के बाद राधाकृष्णन ने राष्ट्रपति का पद संभाला। पद से सेवानिवृत्त होने से पहले ही 1967 में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था कि अब किसी भी सत्र के लिए वे राष्ट्रपति नहीं बनना चाहेंगे। यद्यपि कांग्रेस के नेताओं ने उनसे काफी आग्रह किया कि वह अगले सत्र के लिए भी राष्ट्रपति का दायित्व ग्रहण करें। लेकिन राधाकृष्णन ने अपनी घोषणा पर पूरी तरह से अमल किया। 17 अप्रैल 1975 को उनका निधन हुआ।

-निष्ठा शर्मा

प्रतियोगी परीक्षा विशेषज्ञ दवे सर के निर्देशन में

Jaimin- (M.B.A.)
Mob.:9672999889
9828600493

अचीवर्स 3C क्लासेज

Achievers Career Connection Competition Classes

H.O. : 42–ए, पंचवटी, शाखाः BSNL रोड़,
हिरण मगरी, से. 3, SBI ATM के ऊपर, उदयपुर

R A S

S.I. पुलिस/कांस्टेबल/Accountant

शिक्षक I,II & III Grade (REET)/HM/PTI

BANK - PO, CLERK /SSC/ रेलवे

पटवारी/ ग्राम सचिव आदि सभी प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु कक्षाएँ

निःशुल्क मार्गदर्शनः 5 से 7 बजे तक

मो.: 9828600465

देव पितृ अमावस्या
पितरों को श्रद्धा से करें नमन

सर्वपितृ अमावस्या पर अपने उन सभी प्रियजनों का श्राद्ध कर सकते हैं, जिनकी मृत्यु की तिथि का ज्ञान हमें नहीं है।

-पं. भानुप्रतापनारायण मिश्र

सर्वपितृ अमावस्या पितरों को विदा करने की अंतिम तिथि होती है। 15 दिन पितृ घर में विराजते हैं और हम उनकी सेवा करते हैं। सर्वपितृ अमावस्या के दिन सभी भूले-बिसरे पितरों का श्राद्ध कर उनसे आशीर्वाद की कामना की जाती है। सर्वपितृ अमावस्या के साथ ही 15 दिन का श्राद्ध पक्ष खत्म हो जाता है। आश्विन कृष्ण पक्ष की समाप्ति के बाद अगले दिन से नवरात्र प्रारंभ होते हैं। सर्वपितृ अमावस्या पर हम अपने उन सभी प्रियजनों का श्राद्ध कर सकते हैं, जिनकी मृत्यु की तिथि का ज्ञान हमें नहीं है।

भारतीय पंचांग के अनुसार तिथि महत्त्वपूर्ण होती है। यही वजह है कि श्राद्ध दिनांक के बजाय तिथि पर किया जाता है। जैसे किसी व्यक्ति की मृत्यु जिस दिनांक को हुई है उस दिन क्या तिथि थी, यह ध्यान रखा जाता है। 15 दिन में यह सभी तिथियां आती हैं, तब पंचमी, षष्ठी, सप्तमी आदि जो भी तिथि प्रियजन की होती है उस दिन, उस व्यक्ति का श्राद्ध कर्म किया जाता है। किसी कारणवश अगर प्रियजन का श्राद्ध उस तिथि पर नहीं कर सके, तो सर्वपितृ अमावस्या के दिन उनका श्राद्ध किया जा सकता है।

30 सितम्बर को सर्वपितृ अमावस्या है। अमावस्या को हमारे देवता और पितृ एक साथ बैठते हैं और पृथ्वी पर किए गए श्राद्ध में जो कुछ भी दान-पुण्य होता है, उसे तुरन्त स्वीकार करते हैं। वैसे भी हर महीने आने वाली अमावस्या हमारे ऋषियों ने पितृ के लिए दान-पुण्य करने के लिए ही तय कर रखी है।

श्राद्ध स्वीकार करने के पात्र ब्राह्मण

वेदों के ज्ञाता, श्रोत्रिय, मंत्र आदि का विशिष्ट ज्ञान रखने वाले ब्राह्मण श्राद्ध ग्रहण करने के योग्य माने जाते हैं। इन्हें ही भोजन कराने या दान देने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है। भान्जे को भी भोजन कराया या दान दिया जा सकता है। मान्यता है कि एक भान्जा सौ बामन के बराबर होता है। मांसाहारी, शराबी, चरित्रहीन, कुत्सित कर्म में जुटे तथा अवैष्णव को श्राद्ध में बुलाना अनुचित है। पितृ इनको श्राद्ध फल ग्रहण करते देख कष्ट पाते हैं। पितृ कार्य में तिलों का प्रयोग ही उचित माना गया है। श्राद्ध कार्य में निमंत्रित ब्राह्मणों को मौन होकर भोजन करना चाहिए। भोजन लोहे के बर्तनों में नहीं खिलाना चाहिए। श्राद्ध करने वाले को सफेद वस्त्र ही पहनना चाहिए। साथ ही बैंगन की सब्जी भोजन में नहीं होनी चाहिए। सर्वपितृ श्राद्ध अपराह्न में ही किया जाता है। साथ ही श्राद्ध करने वाले परिवार को प्रसन्नता एवं विनम्रता के साथ भोजन परोसना चाहिए। संभव हो तो जब तक ब्राह्मण भोजन ग्रहण करें, तब तक पुरुष सूक्त तथा पवमान सूक्त आदि का जप होते रहना चाहिए। भोजन कर चुके ब्राह्मणों के उठने के पश्चात् श्राद्ध करने वाले को अपने पितृ से इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए -

दातारो नो अभिवर्धन्तां वेदाः संततिरेव च।।

अर्थात् पितृगण! हमारे परिवार में दाताओं, वेदों और संतानों की वृद्धि हो, हमारी आप में कभी भी श्रद्धा न घटे, दान देने के लिए हमारे पास बहुत संपत्ति हो।

इसी के साथ उपस्थित ब्राह्मणों की प्रदक्षिणा के साथ उन्हें दक्षिणा आदि प्रदान कर विदा करें। श्राद्ध करने वाले व्यक्ति को बचे हुए अन्न को ही भोजन के रूप में ग्रहण कर उस रात्रि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए। श्राद्ध प्राप्त होने पर पितृ, श्राद्ध कार्य करने वाले परिवार में धन, संतान, भूमि, शिक्षा, आरोग्य आदि में वृद्धि प्रदान करते हैं।

मनुस्मृति, याज्ञवलक्य स्मृति जैसे धर्म ग्रंथों में ही नहीं, वरन् पुराणों आदि में भी श्राद्ध को महत्त्वपूर्ण कर्म बताते हुए उसे करने के लिए प्रेरित किया गया है। गरुड़ पुराण के अनुसार कृतिका नक्षत्र में किया गया श्राद्ध समस्त कामनाओं को पूर्ण करता है। रोहिणी में श्राद्ध होने पर संतान सुख, मृगशिरा में गुणों में वृद्धि, आर्द्रा में ऐश्वर्य, पुनर्वसु में सुंदरता, पुष्य में अतुलनीय वैभव, अश्लेषा में दीर्घायु, मघा में अच्छी सेहत, पूर्वाफाल्गुनी में अच्छा सौभाग्य, हस्त में विद्या की प्राप्ति, चित्रा में प्रसिद्ध संतान, स्वाति में व्यापार में लाभ, विशाखा में वंश वृद्धि, अनुराधा में उच्च पद प्रतिष्ठा, ज्येष्ठा में उच्च अधिकार भरा दायित्व व मूल में मनुष्य आरोग्य प्राप्त करता है।

प्राचीन साहित्य में श्राद्ध

एक व्यक्ति धनाभाव से ग्रस्त था। उसके पास इतना भी धन नहीं था कि वह शाक खरीद सके और श्राद्ध कर सके। उसी दिन श्राद्ध की तिथि थी। वह घबरा कर रो पड़ा। तब उसे एक विद्वान ने सलाह दी, जिसके अनुसार वह दौड़कर घास काट लाया और पितरों के नाम पर उसे गायों को खिला दिया। पितरों ने उसे ही श्राद्ध के रूप में स्वीकार किया और उस व्यक्ति को इससे स्वर्ग मिला। अर्थात् यदि अन्न वस्त्र खरीदने के लिए धन न हो तो उस परिस्थिति में शाक से ही श्राद्ध कर देना चाहिए।

(पद्म पुराण)

हमारे प्रिय भोजन की वस्तु को, जिस कर्म में मृत पितरों के निमित्त, श्रद्धापूर्वक प्रदान किया जाता है, उसे श्राद्ध कहते हैं।

(शाण्यापनि हेमाद्रि)

जो व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार शास्त्र की बताई विधि से श्राद्ध करता है, वह सम्पूर्ण संसार को संतृप्त कर देता है।

(चतुर्वर्गचिन्तामणि)

टैलेन्ट एकेडमी सी. सैकण्डरी स्कूल

पेट्रोल पम्प के पीछे, पुलाँ, उदयपुर (राज.)

नर्सरी से XII तक

विद्यालय की विशेषताएँ

स्मार्ट क्लास द्वारा शिक्षण।
सुसज्जित गार्डन एवं खेल का मैदान।
विद्यालय अनुरूप भवन।
प्रत्येक कक्षा में सी.सी.टी.वी. कैमरे से नियन्त्रण।
न्यूनतम शिक्षण शुल्क में श्रेष्ठतम शिक्षण।
एस.एम.एस. सुविधा उपलब्ध।
प्रतिवर्ष बोर्ड परिक्षाओं का 100% परीक्षा परिणाम।
प्रतिवर्ष छात्राओं को गार्गी देवी पुरस्कार।
स्कूल बस सुविधा।

TALENT INSTITUTION UDAIPUR

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम

वाणिज्य संकाय

प्रवेश प्रारम्भ

सम्पर्क समय :
प्रात : 7.30 बजे से
दोपहर 1 बजे तक

Visit: www.talentinstitution.com
Email: talentinstitution@gmail.com

Mob.: 9828553618, Ph.: 0294-2800161

सामाजिक परिवर्तन का वाहक : पर्युषण

पर्युषण पर्व आत्मा में डूब कर आत्मचिंतन करने, तप, स्वाध्याय के माध्यम से यह जानने का प्रयास है कि 'मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? और मेरा प्राणिमात्र के प्रति क्या दायित्व है?'

- उपाध्याय श्री रवीन्द्र मुनि

हमारा देश शुरू से ही उन मानवीय मूल्यों का पक्षधर रहा है, जो सादगी, दान, सेवा व त्याग जैसे मानवीय कर्मों को प्रोत्साहन देते आए हैं। इस धरती पर फले-फूले प्रत्येक धर्म ने चंद शाब्दिक अर्थों में थोड़ा-बहुत परिवर्तन करते हुए उक्त मूल्यों को अपनी मान्यताओं में स्थान दिया है। फिर भी जैन धर्म कुछ मायनों में निवृत्ति प्रधान धर्म है।

जैन धर्म देह सज्जा की बजाए आत्मसुधार पर ज्यादा जोर देता है। जैन धर्म ने अपने पर्वों और इससे अपितु जुड़ी प्रत्येक गतिविधि को लौकिक ही नहीं इहलौकिक विषयों पर आधारित रखा है। उदाहरण के लिए वर्तमान में चल रहे वर्षावास और पर्युषण पर्व को ही लें। पर्युषण पर्व आत्मा में डूब कर आत्मचिंतन करने, तप, स्वाध्याय के माध्यम से यह जानने का प्रयास है कि 'मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? और मेरा प्राणिमात्र के प्रति क्या दायित्व है?' इस प्रकार आत्मा द्वारा आत्मा के हित में आत्मीय व्यवहार करना पर्युपासना है। इस पर्व में आठ दिन तक जिन शास्त्रों और सूत्रों का वाचन-पठन-श्रवण किया जाता है, वे सभी महान चरित्र तप, त्याग, सेवा, परोपकार करते हुए इतने ऊंचे उठ गए कि उन्होंने नर से नारायण बनने का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया।

जैन संतों के सान्निध्य में आयोजित पर्युषण पर्व में 'अन्तकृत सूत्र' या 'कल्पसूत्र' नामक दो आगमों का प्रवचन विशेष रूप से किया जा रहा है। अन्तकृत सूत्र उन महान आत्मओं के कृतित्व व व्यक्तित्व पर आधारित है, जिन्होंने अपने जीवन में संयम और साधना को जीते हुए जीवंत बना दिया। जैन धर्म दर्शन की ये मान्यता है कि इन आत्माओं ने अपने तप-त्याग, ज्ञान-स्वाध्याय

और कठोरतम सहिष्णुता से एक ही जन्म में जन्म-मरण से मुक्ति पा ली। अन्तकृत शब्द से ही स्पष्ट है कि उन महान आत्माओं ने अपनी साधना का लक्ष्य निश्चित कर जन्म-जन्म के आवागमन का अंत कर दिया। इसी प्रकार कल्पसूत्र का वाचन यह स्पष्ट करता है कि जैन धर्म के किन-किन महान तीर्थंकरों, गणारों, आचार्यों ने अपनी साधना को इतना प्रखर बना लिया कि करोड़ों आत्माओं को उनके बनाए रास्ते पर चल कर मुक्ति, शांति, समाधि प्राप्त करने का अवसर सुलभ हो गया।

आधुनिक युग में इन कथाओं के साथ ही पर्युषण पर्व के अंतर्गत, दान, सेवा, परोपकार, संगठन, समाज सुधार और जीव दया के कार्यक्रम भी जुड़ गए। आने वाले कल का सामाजिक नेतृत्व यदि धार्मिक-सामाजिक दृष्टि से प्रशिक्षित युवा करेंगे तो पीढ़ियों की सोच का अंतर कम होगा। युवाओं का जोश, ताकत और ऊर्जा यदि अनुभवी व जिम्मेदार प्रौढ़ और बुजुर्गों से जुड़ जाएगी तो सामाजिक अभाव और तनाव का समाज में स्थान नहीं होगा।

धर्म को समझने और समझाने के परम्परागत तौर-तरीकों में बदलाव लाकर ही धर्मनेता सामाजिक परिवर्तन के वाहक बन सकते हैं। पर्वराज पर्युषण इसका सुन्दर मंच है, जहां आत्मा और आत्मीयता के सह-सम्बन्ध मजबूत होने चाहिए।

दर्पण

राजस्थान में भाजपा के मंत्रियों को अब अगले चुनाव की चिंता सताने लगी है। हालांकि अभी तो आधा कार्यकाल ही बीता है। जमीनी हकीकत ने चिंता और बढ़ाई है। हकीकत जानने बीकानेर में शिक्षा मंत्री कालीचरण सर्राफ ने कार्यकर्ताओं से पूछा कि आज चुनाव हो जाएं तो पार्टी की स्थिति क्या होगी? कार्यकर्ताओं ने बेबाकी से जवाब दिया कि वैसी ही जैसी पिछली दफा कांग्रेस की हुई थी। तो क्या कांग्रेस की तरह 21 सीटों पर सिमट जाएगी अगले चुनाव में भाजपा।

मंत्रियों की कार्यशैली के कारण पनपे गुस्से का परिणाम मान सकते हैं इस जवाब को। कार्यकर्ता तो दूर अपने मंत्रियों से भाजपा के विधायक तक संतुष्ट नहीं। अलबत्ता हर नाकामी का ठीकरा ज्यादातर मंत्री नौकरशाही पर फोड़ रहे हैं। भ्रष्टाचार में कई आला अफसरों की गिरफ्तारी उनके मंत्रियों की भूमिका पर भी सवाल तो उठाती ही है। स्वास्थ्य विभाग में भ्रष्टाचार के चलते वरिष्ठ आइएएस नीरज जेल की हवा खा रहे हैं। जलदाय मंत्री किरण माहेश्वरी को भ्रष्टाचार के आरोप के चलते ही अपने ओएसडी की छुट्टी करनी पड़ी। मुख्यमंत्री से मिल अपने पाक-साफ होने की सफाई भी दे आई। पर भाजपा के कार्यकर्ताओं के ही गले नहीं उतर रहा अपने मंत्रियों का ईमानदार होने का दावा।

- जनसत्ता से साभार

N.I.S.

NOBLE
INTERNATIONAL SCHOOL

An English Medium Co-Education School

Points of Distinction

1. 100% Excellent result in X Board Exams with Distinction.
2. Every year 5-8 students are selected for "GARGI AWARD".
3. Proficient teachers from English medium background.
4. C.C.E. exam pattern.
5. Magnificent infrastructure with airy & green environment.
6. Well versed Computer lab & library.
7. Enabling child to speak fluent English by providing an English speaking environment.
8. Daily home work classes.
9. Regular workshops for Drama, Poetry, Story writing, Music, Dance, Fine Arts and craft to unfold the creative aspect of the student.
10. Psychologically designed personality enhancement programs.
11. Emphasis on mental & physical health through yoga, meditation and sports on regular basis.
12. Monthly parents teachers meeting.
13. Regular medical checkups.
14. Safe & secure transportation facilities.

NOBLE
INTERNATIONAL SCHOOL
2, SAGAR DARSHAN,
RANI ROAD
UDAIPUR (RAJ.)
FOR ADMISSIONS
CONTACT:
0294-2430930

ADMISSIONS OPEN

Playgroup to Class 10th

50% Discount on PLAYGROUP FEE

यूपी में सुरक्षित नहीं औरत की अस्मत

– बेगैरत साबित होती अखिलेश सरकार

ऊंची इमारतें, सड़कें और उन पर दौड़ती कीमती गाड़ियां ही विकास की पहचान नहीं है। समाज के हर तबके की तरक्की और उसका सम्मान तथा सुरक्षा भी सुनिश्चित होनी चाहिए। नागरिकों खासकर महिलाओं और बच्चियों की हिफाजत के बिना किस काम की तरक्की ?

उत्तरप्रदेश के बुलंदशहर में महिला और एक नाबालिगा के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना देश के चेहरे से विकास के मुखौटे को नोचने वाली है। 29 जुलाई की रात नोएडा से कार द्वारा शाहजहांपुर जा रहे परिवार को नेशनल हाईवे 91 पर बंधक बनाया गया। अपहर्ता परिवार के सभी छह सदस्यों को ग्राम दोस्तपुर के जंगल में ले गए। जहां पुरूष सदस्यों को बांध मां और बेटी के साथ गैंगरेप कर फरार हो गए।

सब कुछ लुट गया.....

मुखिया ने रोते-बिलखते अपने छोटे पुत्र को घर फोन कर कहा कि बेटा...... सब कुछ लुट गया। हमें गुण्डों ने बांध दिया और घर की आबरू को तार-तार कर दिया। किसी तरह मुक्त होकर वे राहगीरों तक पहुंचे और खबर पुलिस तक पहुंचाई। घटना दिल दहलाने वाली है। घर, बाजार, गाँव और शहर तो असुरक्षित हैं ही, अब सड़कें भी सफर लायक नहीं रही। गुण्डे जब और जहां चाहे हर किसी को निशाना बना उनकी आबरू तक से खेल जाते हैं। इस घटना में मुखिया, उनके भाई और भतीजे को पिस्तौल की नोंक पर बंधक बनाया गया। क्या बीती होगी, जब उनकी आंखों के सामने ही दुष्कर्म हुआ। सरकार और समाज के अलंबरदार आखिर कर क्या रहे हैं ? बलात्कार की शिकार महिला और बच्ची भयावह दु:ख का झेल रही हो और दूसरी तरफ घटना को एक जिम्मेदार नेता राजनीति के चश्मे से उसे दुनिया के सामने पेश करते हैं। यूपी के बड़बोले और संकीर्ण विचारों से ग्रस्त मंत्री आजम खान शायद यह भूल रहे हैं कि यदि ऐसी ही घटना उनके अपनों के साथ होती तो वे किस एंगल से सोचते ? उन्होंने ऐसी गंभीर और दिल दहला देने वाली घटना को विपक्षी पार्टियों की साजिश बताने का बेशर्म बयान दे डाला। जबकि उन्हें सक्रिय होकर अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई और पीड़ितों के लिए इंसाफ सुनिश्चित करने में पहल करनी चाहिए थी। निर्बाध यातायात के लिए सुनसान इलाकों में अच्छी सड़कें तो बना दी गई लेकिन उन पर चलने वालों की सुरक्षा कौन तय करेगा ? यह घटना सड़क पर फर्राटे से चलते खासकर छोटे वाहनों के लिए खतरे की घंटी है। ऐसी घटनाओं की रोकथाम और अपराधियों को कठोरतम सजा नहीं हुई तो शाम ढले लोग आवाजाही करेंगे कैसे ? अब तक वाहनों में लूटमार की वारदातें तो सुनी गई, पर यात्रियों के साथ ऐसी वारदात विरल घटना है। सड़क पर चलने वाला आत्म सुरक्षा के लिए हमेशा लाचारगी महसूस करता है। यदि कोई अपने साथ सुरक्षा के लिए धारदार वस्तु रख भी ले तो पुलिस पकड़ कर थाने में बिठा देगी। फिर कौन लेगा यात्रियों की सुरक्षा की गारंटी ? बलात्कार स्त्रियों की अस्मिता और गरिमा के खिलाफ सबसे भयावह अपराध है। इसके बावजूद इस अपराध में दोषसिद्धि और सजा की दर महज पच्चीस फीसद के आसपास है।

पीड़िता बोली दरिंदों को दो फांसी

इस मामले में पुलिस ने सात आरोपियों में से तीन को तुरंत कार्रवाई में पकड़ लिया। आईजी सुजीत पांडे ने बताया कि पहले ही प्रयास में बुलंद शहर का रईस, हापुड़ का शाहबेज और नोएडा का जबरसिंह दबोचा गया। तीन आरोपियों को 8 अगस्त को पकड़ लिया गया। गैंगलीडर की पहचान राजस्थान में भरतपुर के सलीम बावरिया के रूप में हुई है। सरगना सलीम बावरिया पर राजस्थान में भी इसी तरह की घटना को अंजाम देने का आरोप है। सातवां आरोपी फाती फरार है। उत्तरप्रदेश में आए दिन खौफनाक जुर्म हो रहे हैं। मार्च 2015 में बलात्कार की 2752 और हत्याओं की 1246 घटनाएं हो चुकी हैं। हाईवे पर हुई इस ताजा वारदात को लेकर कोतवाली देहात में दर्ज मुकदमा अपराध संख्या 838/16 में धारा 395, 397, 376 डी, 342 आईपीसी और 4 पोक्सो अधिनियम के तहत केस दर्ज किया गया है। पुलिस अनुसंधान के लिए डीआईजी लक्ष्मीसिंह के निर्देशन में टीमें जुटी हैं।

घटना से सूबे की सियासत में उबाल है। पीड़िता ने कहा कि 'हम बर्बाद हो गए हैं।' हमारा सब कुछ चला गया। समझ नहीं आ रहा कि क्या करें, किस पर भरोसा करें। ..... हमें पता है दिलासा देने का सिलसिला कुछ दिन चलेगा। कोई कुछ नहीं करने वाला। नेताओं पर भरोसा नहीं है। अगर हमारी मदद ही करनी है तो सभी दरिंदों को पकड़ कर हमें सौंप कर खुद न्याय करने की छूट भी दी जाए। मेरी चौदह वर्षीया बेटी इंसाफ करेगी, जो घटना के बाद सदमे से अभी उबर नहीं पाई है। बुलंदशहर की घटना के बाद मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि अपराधियों को सख्त सजा मिलेगी तथा हाईवे पेट्रोलिंग को पुख्ता बनाया जाएगा। हाईवे पर होने वाली अराजकता के मुख्य अड्डे आस-पास स्थित ढाबे व होटल हैं। दिन रात उन पर अराजक तत्वों का जमावड़ा रहता है। अवैध शराब का धंधा इन ढाबों और होटलों से संचालित हो रहा है। वहीं दूसरी ओर ट्रकों की लूट जैसी घटनाओं में ढाबों की भूमिका शुरू से ही संदिग्ध रही। ये हाल किसी एक हाईवे, एक प्रदेश या एक जिले तक ही सीमित नहीं है। कमोबेश देश के बाकी हिस्सों में ऐसी ही खौफनाक वारदातें हो रही है।

थम नहीं रही घटनाएं

यूपी के बुलंदशहर जिले के जेवर कस्बे में 8 अगस्त को दोपहर कॉलेज जा रही छात्रा को बाइक सवार दो युवकों ने अगवा कर लिया। उसे खुर्जा झाझर मार्ग से खेत में ले गए, जहां सामुहिक दुष्कर्म किया। एक और ऐसी ही घटना ने तो इंसानियत को ही तार-तार कर दिया। इसके ठीक एक दिन बाद ही 9 अगस्त को पिलखवा क्षेत्र में 5 अगस्त की रात बिजली न होने पर गर्मी से बेहाल परिवार सड़क पर चारपाई डालकर सो रहा था। चार वर्ष की नन्हीं 10 वर्षीय बड़ी बहन के साथ सो रही थी। रात करीब 12 बजे बारिश आने पर परिवार जागा तो नन्ही गायब थी। शोर मचाया। रात में बच्ची की तलाश शुरू हुई तो 70 मीटर दूरी पर वह मासूम नग्न अवस्था में बेहोश पड़ी मिली। दोपहर बुलंद शहर के कोतवाली देहात क्षेत्र में पुराने हाइवे पर नवनिर्मित माल के समीप कार सवार लोग एक युवती को बेहोश हालत में फेंक कर फरार हो गए। पीड़िता नोएडा के एक मॉल में सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। युवती से दुष्कर्म की आशंका जताई जा रही है। ये हालात बताते हैं कि यूपी महिलाओं व बच्चियों के लिए पूरी तरह असुरक्षित है।

गला दबाया और पेड़ पर टांगा

यूपी में ऐसी ही एक घटना 27 मई 2014 को बदायूं जिले के कटरा सआदतगंज में घटी जिसमें दो नाबालिग लड़कियों के साथ गैंगरेप कर दोनों का गला दबा कर पेड़ पर टांग दिया गया।

बदायूं की घटना में अपराध करने वालों का हौसला इसीलिए बढ़ा क्योंकि औरतें लंबे समय से बिना प्रतिरोध के उत्पीड़न झेलती आ रही हैं। दो बरस पहले समाजवादी पार्टी के प्रमुख मुलायम सिंह यादव ने मुंबई बलात्कार कांड को लेकर चुनावी भाषण में कहा था, 'लड़के तो लड़के हैं, छोटी-मोटी गलतियां हो जाती है। इसका मतलब यह नहीं कि उनको फांसी की सजा दी जाए।' ऐसे व्यक्ति के बेटे के राज में तो फिर ऐसा ही होगा। उत्तरप्रदेश में दुराचार की हर रोज 10 से ज्यादा घटनाएं घट रही है। जो बेहद शर्मनाक और चिंताजनक है। रात तो क्या दिन में भी बाहर निकलना खतरे से खाली नहीं है। गुण्डों के डर से औरतें थाना पुलिस में शिकायत नहीं करती और अगर कोई ऐसा करे तो पुलिस उसकी सुनती नहीं। कई बार तो पीड़िता को ही मुकदमे में फंसा देती है। यूपी में पुलिस जाति और प्रभाव देख कर काम करती है। पुलिस का जातिकरण और राजनीतिकरण ही इसका मूल कारण है। ये घटनाएं महिला आयोग, महिला संगठनों और समाज सेवा व मानवाधिकार का चोला ओढ़े घूमने वालों को सरे आम चिढ़ाती दिखाई दे रही हैं।

– फिरोज अहमद शेख

आइंस्टीन को पीछे छोड़ा

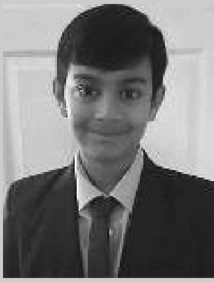

लंदन। भारतीय मूल के लंदन में रहने वाले 10 वर्षीय ध्रुव तलाती ने आईक्यू टेस्ट में अब तक के सबसे ज्यादा अंक हासिल कर पूरी दुनिया में नाम किया है। दुनिया की सबसे बड़ी और पुरानी आईक्यू टेस्ट सोसायटी मेनसा टेस्ट में ध्रुव ने यह स्कोर हासिल किया। सबसे ज्यादा चौंकाने वाली बात यह रही है कि ध्रुव ने इस टेस्ट में अल्बर्ट आइंस्टीन और स्टीफन हॉकिंग को भी पीछे छोड़ दिया। ध्रुव ने आईक्यू टेस्ट में 162 अंक हासिल कर पूरी दुनिया में सबसे ज्यादा दिमाग वाले इंसान का खिताब अपने नाम कर लिया है। ध्रुव तलाती ने मेन्सा का कैटल थर्ड-बी पेपर जुलाई में दिया था, जहां उसने दिग्गज वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन और हॉकिंग से भी 2 अंक ज्यादा हासिल किए। और वह दुनिया के उन चुनिंदा लोगों में शामिल हो गया है, जिन्होंने ना सिर्फ सबसे ज्यादा स्कोर हासिल किया, बल्कि सबसे ज्यादा दिमाग वाले इंसान का ख़िताब भी हासिल किया। ध्रुव लंदन के बार्किंगसाइड के फुलवुड प्राइमरी स्कूल में पढ़ते हैं। टेस्ट के दौरान ध्रुव को 150 सवाल का सामना करना था। टेस्ट में एडल्ट के लिए अधिकतम स्कोर 161 और 18 से कम उम्र के बच्चों के लिए 162 है। बताया जाता है कि आइंस्टीन और हॉकिंग ने 160 अंक प्राप्त किए थे। ध्रुव बड़े होकर रोबोटिक एक्सपर्ट बनना चाहते हैं।

दुनिया ने सुनी इरोम के विरोध की गूंज

– नहीं निकला व्यावहारिक नतीज़ा, पकड़ी राजनीति की राह

भारत लोकतंत्र की नायाब मिसाल है, जहां जनता सर्वोपरि मानी गई है। लेकिन पिछले सात दशक के हालात बताते हैं कि जनता को अपना हक प्राप्त करने के लिए आज भी नाकों चने चबाने पड़ते है। शासन तंत्र के खिलाफ आवाज उठाने वाला हर शख्स न आतंकी होता है और न नक्सली। देश का हर व्यक्ति गैर-जिम्मेदार नहीं होता, परन्तु उसके वाजिब हक-हकूक भी तो उसे मिले। बेशक देश की आंतरिक सुरक्षा जरूरी है। सुरक्षा बलों को अलगाववादी और नक्सल प्रभावित इलाकों में कठिन चुनौतियों के बीच काम करना होता है। सुरक्षा बलों को उपद्रवी तत्वों से निपटने के निःसन्देह अधिकार मिलने चाहिए। लेकिन मानवीय पक्ष यह भी है कि हर वक्त आम जनता को सुरक्षा बलों की चौकस निगाहों के बीच बंदूक की नोंक पर नहीं रखा जा सकता।

वर्ष 2000 में सुरक्षा बलों ने इम्फाल के पास एक गांव के दस लोगों को गोलियों से भून डाला। फिर सुरक्षाबलों और उपद्रवियों में फर्क ही क्या है ? घटना से आहत होकर इरोम चानू शर्मिला ने अनशन शुरू किया जो डेढ़ दशक से भी अधिक समय तक चला। उन्हें प्रसिद्धि जितनी मिलनी चाहिए थी, मिल गई। अनशन की खबरें देश के लोगों के लिए रूटीन की खबरें बन गई। ऐसे में अनशन समाप्त करना मजबूरी थी और समझदारी भी। सुप्रीम कोर्ट द्वारा हाल में दी गई व्यवस्था से भी उन्हें बहाना मिल गया। उन्हें विश्वास हो चला कि राजनीति में आए बिना मसले का समाधान मुश्किल है।

सोलह वर्ष के लगातार संघर्ष की पहचान बनी मणिपुर की 'लौह महिला' इरोम शर्मिला ने 9 अगस्त को अनशन छोड़ कर मुख्य धारा की राजनीति में उतरने का निर्णय लिया है। इरोम का आन्दोलन लोकतांत्रिक इतिहास में हमेशा याद किया जाएगा। यही गांधीवादी रास्ता है। हालांकि अनशन तोड़ने से उनके कई समर्थन नाराज हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने हार मान ली है, वह राजनीति के माध्यम से एएफएसपीए (अफस्पा) के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखेगी।

चौंकाने वाला फैसला

इरोम चानू शर्मिला ने 9 अगस्त 2016 को सचमुच चौंकाने वाला फैसला किया। अनशन समाप्त करते हुए कहा कि 'मैं राजनीति में आऊंगी और मेरी लड़ाई जारी रहेगी।' मणिपुर में 2017 में विधानसभा चुनाव होना है। नवम्बर 2000 में इम्फाल में असम राइफल्स के जवानों की फायरिंग में 10 लोगों की मौत के विरोधस्वरूप उन्होंने अनशन शुरू किया था। सोलह साल तक अनशन करना हिम्मत का काम है। जब अनशन शुरू किया था, तब उन्होंने कहा था कि वह अफस्पा हटने पर ही घर लौटेंगी। शर्मिला को इम्फाल के जवाहरलाल नेहरू अस्पताल में नाक में नली डाल कर जबरन लिक्विड आहार दिया जाता रहा। पतली नेजल- गैस्ट्रिक ट्यूब उनकी नाक से बंधी थी, जो जिन्दा रहने के जरूरी पोषण उनके शरीर में पहुंचाती थी। उन्हें आत्महत्या की कोशिश के आरोप में बार-बार गिरफ्तार, रिहा और फिर गिरफ्तार किया गया। उन्हें अपने आंदोलन और अनशन के लिए व्यापक जन समर्थन भी मिलता रहा। परन्तु सरकार की तरफ से कोई ध्यान न दिए जाने पर उन्होंने दिल्ली के एक्टिविस्ट अरविन्द केजरीवाल की तरह सक्रिय राजनीति में कूद कर लक्ष्य पाने का रास्ता अपनाया है।

क्या है अफस्पा ?

कश्मीर और पूर्वोत्तर क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों में अब भी अफस्पा(सुरक्षा बल विशेष अधिकार अधिनियम) लागू है। वर्ष 1958 में बना। यह कानून सशस्त्र बलों को बहुत ज़्यादा या कहें निरंकुश शक्तियां प्रदान करता है। वे सिर्फ संदेह के आधार पर भी किसी व्यक्ति को गिरफ्तार कर सकते हैं, किसी भी परिसर में छापा मार सकते हैं और आरोपी को शूट कर सकते हैं। उन पर कोई प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता और न ही उन्हें न्यायिक चुनौती दी जा सकती है। मानवाधिकार उल्लंघन की बात को लेकर समय-समय पर इस कानून की आलोचना होती रही है। कानून और व्यवस्था को चुस्त-दुरूस्त बनाने की जरूरत हर वक्त महसूस की जाती रही है।

हालांकि सशस्त्र बलों के तरकस से निकली गोली यह नहीं देखती कि सामने वाला उपद्रवी है या आम इंसान। सुरक्षा बलों को हालात से निपटने के लिए काफी धैर्य रखना चाहिए। फायरिंग अंतिम विकल्प होना चाहिए। अफस्पा के दुरूपयोग के कुछ मामले विशेष सुर्खियों में रहे हैं। सुरक्षाबलों को मानवीय और जिम्मेदार बनाने की जरूरत है। कम से कम ताजा हालातों में उसकी समीक्षा होनी चाहिए, क्योंकि सुरक्षाबलों के स्वेच्छाचारी कार्यकलापों का परिसीमन जरूरी है। सुरक्षा बलों को प्रदान की गई असीम शक्तियों पर निगरानी करने और इस कानून के दुरूपयोग की शिकायत सुनने व जाँच के लिए एक समिति तो बनाई ही जा सकती है।

सुप्रीम कोर्ट ने उठाए सवाल

शीर्ष अदालत ने जुलाई में सेना को फटकार लगाते हुए कहा था कि वह देश के अशांत क्षेत्रों में अत्यधिक दबाव बना कर बदले की भावना से शक्ति का इस्तेमाल नहीं कर सकती। मणिपुर में राष्ट्रीय सुरक्षा को युद्ध जैसा खतरा नहीं है। अदालत ने कथित फर्जी मुठभेड़ों की गहन जांच के आदेश भी दिए। इसी साल दिल्ली की एक अदालत ने 2006 में जंतर-मंतर पर आमरण अनशन को लेकर इरोम पर दर्ज मामला वापस ले लिया। अफस्पा हटाने को लेकर देश के कई हिस्सों में आन्दोलन चल रहा है, लेकिन इरोम सबसे मुखर रही। इस आन्दोलन के लिए उन्हें मानवाधिकार पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है। जेल से बाहर आने के बाद उनका शादी का भी इरादा है। भारतीय मूल का एक ब्रिटिश नागरिक इरोम का मित्र है और हमेशा संकट के समय साथ रहा है। वे अगले वर्ष विधानसभा चुनाव में निर्दलीय तौर पर चुनावों में उतर सकती हैं। यह मानना जल्दबाजी होगी कि इरोम के इस कदम के बाद सुरक्षा बलों के अधिकारों में कोई कमी आएगी। यह निर्विवाद है कि इरोम शर्मिला ने व्यक्तिगत अहिंसक संघर्ष का एक कीर्तिमान स्थापित किया। उनका यह फैसला उम्मीदें बढ़ाने वाला है। सुप्रीम कोर्ट ने व्यवस्था दी कि इस कानून के तहत किसी नागरिक के मौलिक अधिकार के हनन की शिकायत उनके विचारार्थ आने पर वह उस पर सुनवाई करेगा। फिर भी लगता नहीं कि मणिपुर सहित अशांत क्षेत्रों में लागू अफस्पा तुरन्त हटा दिया जाएगा। इरोम शर्मिला दरअसल किसी न किसी बहाने अनशन समाप्त करना चाहती थी। क्योंकि वह अपने संघर्ष को मुद्दा बनाने में सफल रही।

-सुधीर जोशी

मैराथन मिशन

02 नवम्बर 2000 : असम रायफल्स ने इम्फाल के मालोम इलाके में दस लोगों को गोलियों से भूना।

05 नवम्बर 2000 : तब 28 साल की इरोम ने अनशन शुरू किया। अफस्पा हटने तक कंघी न करने और शीशा न देखने की प्रतिज्ञा ली।

09 नवम्बर 2000 : इरोम को आत्महत्या के प्रयास के आरोप में गिरफ्तार किया गया। फिर रिहाई और गिरफ्तारी का सिलसिला शुरू हो गया।

21 नवम्बर 2000 : प्रशासन ने हिरासत के दौरान नाक की नली के जरिये उन्हें जबरन तरल खाद्य पदार्थ देना शुरू किया।

11 जुलाई 2004 : थांगजेम मनोरमा(34) का गोलियों से छलनी शव मिला। असम रायफल्स के जवानों ने उसे हिरासत में लिया था।

12 अगस्त 2004 : मनोरमा की मौत पर हिंसक विरोध प्रदर्शन के बाद इम्फाल की सात विधानसभा सीटों से अफस्पा हटा लिया गया।

नवम्बर 2004 : तत्कालीन पीएम मनमोहन सिंह ने जीवन रेड्डी की अध्यक्षता में पांच सदस्यीय कमेटी बनाई।

जून 2005 : रेड्डी पैनल ने 147 पेज की रिपोर्ट में अफस्पा हटाने की सिफारिश की लेकिन केन्द्र ने कोई फैसला नहीं लिया।

76 प्रतिशत मंत्री करोड़पति

नई दिल्ली। दिल्ली के एक थिंक टैंक एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म(एडीआर) ने एक ताजा शोध के बाद बताया है कि विभिन्न राज्यों की विधानसभाओं के 35 फीसदी मंत्रियों के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। शोध में यह भी खुलासा हुआ है कि 76 प्रतिशत मंत्री औसतन 8.59 करोड़ की संपत्ति के साथ करोड़पति हैं। एडीआर ने बताया कि उसने 29 विधानसभाओं और दो संघ शासित प्रदेशों के कुल 620 मंत्रियों में से 609 मंत्रियों की जानकारियों का विश्लेषण किया है। विधानसभा के 609 मंत्रियों में से 210 यानी 34 प्रतिशत के खिलाफ आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें से 113 मंत्रियों के खिलाफ गंभीर आपराधिक मामले - जैसे हत्या, हत्या का प्रयास, अपहरण और महिलाओं के खिलाफ अपराध दर्ज हैं।

सबसे अमीर मंत्री : विधानसभाओं के 609 मंत्रियों में से 462 करोड़पति हैं। सबसे अधिक संपत्ति रखने वाले मंत्रियों में तेलुगुदेशम पार्टी के पोंगुरु नारायण के पास सर्वाधिक 496 करोड़ रुपए की संपत्ति है। सबसे अमीर मंत्रियों में दूसरे स्थान पर कांग्रेस के डीके शिवकुमार हैं जिनकी घोषित संपत्ति 251 करोड़ रुपए है।

कितनी औसत सम्पत्ति

आंध्रप्रदेश : 20 मंत्रियों के पास औसतन 45.49 करोड़ रुपए की संपत्ति

कर्नाटक : 31 मंत्रियों के पास औसतन 36.96 करोड़ रुपए की संपत्ति

अरुणाचल प्रदेश : 7 मंत्रियों के पास औसतन 32.62 करोड़ रुपए की संपत्ति

त्रिपुरा : 12 मंत्रियों के पास 31.67 लाख रुपए की संपत्ति

हिन्दी का अपने दम पर वर्चस्व

– राजनीति और अफसरशाही दे रही अंग्रेजी को सदा सुहागन का आशीष, हिन्दी दिवस के आयोजन आडम्बर मात्र, समन्वय और एकता की भाषा हिन्दी को सही मायने में राष्ट्रभाषा स्वीकार किया जाए।

अगर हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा नहीं बन सकी, तो इसके लिए संयुक्त राष्ट्र जिम्मेदार नहीं, वरन अपने ही देश में राजनीति के जरिए वोटों की फसल बटोरने की नीति जिम्मेदार है। नागपुर के पहले विश्व हिन्दी सम्मेलन में ही यह संकल्प पारित किया गया था कि हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाना है। इकतालीस साल बाद भी यह उद्देश्य हासिल नहीं किया जा सका, तो आखिर क्यों? गंगा-जमुना के तटवर्ती इलाकों में विकसित हुई हिन्दी आज भारत के कोने-कोने में बोली और समझी जाती है। प्रवासी भारतीयों को ही नहीं, विदेशियों को भी हिन्दी लुभाती है। हिन्दी को लोकप्रिय और ताकतवर बनाने वाली सूचना तकनीक, हिन्दी फिल्में, वैश्वीकरण प्रक्रिया और मीडिया की अहम भूमिका को नकारा नहीं जा सकता।

हिन्दी फिल्मों ने हॉलीवुड को पछाड़ कर विश्व बिरादरी में अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया। अंग्रेजी के मुकाबले हीन समझी जाने वाली हिन्दी अब अंग्रेजों के गढ़ इंग्लैण्ड में ही दूसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है। सिर्फ ब्रिटेन ही नहीं, हिन्दी फिल्मों ने चाहे वे खाड़ी मुल्क हों, अफ्रीका, रूस या सुदूर पूर्वी देश सब जगह हिन्दी को खासा लोकप्रिय बना दिया है।

भारत में खासकर व्यावसायिक कारणों से हालात तेजी से बदल रहे हैं। कभी अंग्रेजी को तरजीह देने वाली बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी भारत में कारोबार विस्तार के लिए अपने कर्मचारियों के हिन्दी सीखने पर जोर दे रही हैं। मीडिया और हिन्दी अखबार बड़ी तेजी से घरों, बाजारों और दफ्तरों में विस्तारित हो रहे हैं। देश में समाचार चैनलों के कुल दर्शकों का 85 फीसदी हिस्सा हिन्दी दर्शकों का है। यहां तक कि विदेशी चैनल भी अपने कार्यक्रमों को हिन्दी में डब करके पेश कर रहे हैं। सूचना तंत्र के इन्टरनेट में हिन्दी का जलवा किसी से छिपा नहीं है। इसे चाहे वैश्वीकरण की मजबूरी कहें, जिसमें 60 करोड़ से ज्यादा लोगों की बोली के रूप में हिन्दी कारोबारी विस्तार और मुनाफे की सीढ़ी बनकर सामने आई है। विश्वव्यापी सत्ता की ओर उन्मुख हिन्दी का विजय रथ अब किसी के रोके रूकने वाला नहीं। दुनिया के प्रमुख देशों अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, जर्मनी, सिंगापुर, पोलैंड, कोरिया और जापान के विश्वविद्यालयों में हिन्दी की पढ़ाई हो रही है। विश्व बाजार की संकल्पना पूरी तरह परवान पर है, जिसकी आत्मा है विज्ञापन। विज्ञापन जगत पर आज हिन्दी राज कर रही है। हर प्रमुख लोकप्रिय विज्ञापन हिन्दी में दिखाया जा रहा है। हिन्दी की प्रकृति इतनी लचीली है कि सारे दबावों को अपनाते हुई प्रयोक्ताओं की अपेक्षाओं पर खरी उतर रही है।

भाषा को लेकर भारत में अधिकांश लोग भ्रम के शिकार हैं। वे समझ नहीं पाते कि आखिरकार हिन्दी की अपने देश में हैसियत क्या है? देश में 65 करोड़ से ज्यादा लोग हिन्दी का आम बोलचाल में प्रयोग करते हैं। बाकी लोग भले ही हिन्दी अच्छी तरह न बोल पाते हों, फिर भी बातचीत के मुद्दे को आसानी से समझ लेते हैं। देश के सभी प्रांतों के बीच हिन्दी सम्पर्क भाषा का सेतु है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना जाता है, पर संविधान में ऐसा कोई उल्लेख नहीं। हिन्दी मातृभाषा नहीं, सम्पर्क भाषा नहीं, राष्ट्रभाषा नहीं तो आखिर हिन्दी कहाँ है? यही सवाल आज की पीढ़ी राजनीतिकों से पूछ रही है। युवा पीढ़ी समझ नहीं पा रही है कि सरकारी स्तर पर हिन्दुस्तान में हिन्दी की बजाय अंग्रेजी को बोलबाला क्यों है। शासन, प्रशासन, न्यायपालिका अपना अधिकांश कामकाज अंग्रेजी में करते हैं और सबका वास्ता पड़ता है देश की अधिसंख्यक देहाती जनता से, जिसे अंग्रेजी से तो कतई लेना-देना नहीं। आखिर इसका राज क्या है? राज छिपा है इस बात में कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में राजकाज में अंग्रेजी-हिन्दी का द्विभाषा फार्मूला अपनाया गया है। पन्द्रह वर्ष के लिए जारी इस व्यवस्था को राजनीतिक कारणों से अनंतकाल तक जारी रखते हुए अंग्रेजी को 'सदा सुहागन' बना दिया है।

संविधान में हिन्दी को सिर्फ 'ऑफिशियल लैंग्वेज' बनाया गया। यानी खेत में फसल पकने पर बनाया गया 'बीजूका'। जिसका इतना सा काम है कि पंखेरू डरते रहें और फसलों को नुकसान न पहुंचाएँ। ब्रिटिश हुकूमत से देश आजाद हो गया, परन्तु भाषायी मसले पर आज भी मानसिक रूप से गुलामी ढो रहा है। यह ठीक है कि अंग्रेजी विश्व के तकरीबन सभी मुल्कों के बीच सम्पर्क

सबसे बड़ा हिन्दी परिवार

हिन्दी विश्व की महान भाषाओं में से है। यह करोड़ों लोगों की मातृभाषा है और करोड़ों ऐसे हैं, जो इसे दूसरी भाषा के तौर पर बोलते हैं। गंगा-जमुना के आस-पास विकसित हुई हिन्दी आज भारत के कोने-कोने में बोली और समझी जाती है। इसका स्वर दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में भी सुना जा सकता है। हिन्दी को चाहिए कि वह अपने दरवाजे और खिड़कियों को खुला रखे।

नई दिल्ली, तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन 1983 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के वक्तव्य का अंश।

भाषा के रूप में काम आती है। मगर अमेरिका, इंग्लैंड जैसे कुछेक राष्ट्रों को छोड़कर बाकी सभी राष्ट्रों की अपनी समृद्ध भाषाएँ हैं, जिसके बलबूते वे विकास के मुकाम तक पहुंच गए। अंग्रेजी की वहां कोई भूमिका ही नहीं। वे विश्व बाजार में प्रवेश के लिए ही अंग्रेजी का सहारा लेते हैं। भारत ऐसा क्यों नहीं कर सकता कि हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषाओं को प्रमुखता देकर अंग्रेजी का सहभाषा के रूप में उपयोग किया जाए। लेकिन हमारे राजनीतिक नेतृत्व की वरीयताएं दूसरी हैं। भाषा और संस्कृति जैसे सवालों पर विचार करने की फुरसत उसके पास नहीं है। वोट की राजनीति गंभीर और दूरगामी सामाजिक प्रश्नों से कटी हुई है।

यूनेस्को भले मातृभाषाओं का मूल्य समझ ले, हमारे राजनीतिक तंत्र को न तो उसे समझने की जरूरत है और न ही कूवत। हिन्दी सिर्फ अपने दम पर आगे बढ़ रही है। अंग्रेजी को जिस तरह सरकारी प्रश्रय प्राप्त है, वह चिंता का मूल विषय है। हर साल 14 सितम्बर को सरकारी कार्यालयों में हिन्दी दिवस मनाने की औपचारिकताएं निभाई जाती है। यानी एक दिन हिन्दी को बाकी 364 दिन अंग्रेजी को। हिन्दी दिवस पसरते जाते और हिन्दी सिकुड़ती जाती है। हिन्दी के पल्ले और कुछ तो है नहीं बस राजभाषा होने का एक खोखला अहंकार है। इसके चलते हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच एक खाई बनती जा रही है। भारतीय शिक्षा नीति को लेकर अभी हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा जारी नए निर्देशों पर तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता भड़क उठी और विधानसभा में प्रस्ताव पारित करवा दिया कि हिन्दी को किसी भी सूरत में प्रदेश में हावी नहीं होने दिया जाएगा।

हिन्दी के सच्चे प्रेमियों को हिन्दी दिवस के बदले 14 सितम्बर को भारतीय भाषा संकल्प दिवस के रूप में मनाना चाहिए। जो देश अपनी जबान को खो देता है, वह गूंगा होकर एक तरह से विकास और समरसता के द्वार ही बंद कर लेता है। हिन्दी के साथ-साथ मातृभाषाओं का संरक्षण और विकास भी आवश्यक है।

-भगवानलाल शर्मा 'प्रेमी'

हिन्दी की जरूरत जोड़ने के लिए

देश तो भिन्न हो सकते हैं जैसे फूलों के रंग अलग होते हैं। इसी तरह हमारा स्नेह-सौहार्द, हमारी बंधुता एक है। राष्ट्र को जोड़ने के लिए हिन्दी की जरूरत है। भारत बड़ा राष्ट्र है और उसके एक-एक भूखंड में एक-एक देश है। हिन्दी ही सबके बीच सेतु बन सकती है।

नई दिल्ली, तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन 1983 में साहित्यकार महादेवी वर्मा के वक्तव्य का अंश।

विश्व भर में गूंजेगी हिन्दी की प्रतिध्वनि

आज प्राचीन मान्यताएं टूट रही है, जबकि नवीन की तलाश में मानव भटक रहा है। हिन्दी भाषा के माध्यम से सम्पूर्ण जगत में प्रेम, बंधुत्व और आध्यात्मिक नवजागरण का संदेश ले जाने से ही विश्व भर में हमारी प्रतिध्वनि गूंज पाएगी। हिन्दी शुरू से ही समन्वय और एकता की भाषा रही है।

मॉरीशस, द्वितीय विश्व हिन्दी सम्मेलन 1976 में तत्कालीन केन्द्रीय मंत्री डॉ. कर्ण सिंह।

शंकरलालजी जैन व शांतादेवी

Shankar Lal- 9414160690
Jyoti Prakash- 9414161690
Chetan Prakash- 9413287064
Phone No.- 0294- 2420016 (S)
0294- 2415690 (R)

Jyoti Stores

(A Leading Merchant Ayurvedic Medicines)

Out Side Delhi Gate, UDAIPUR-313001 (Raj.)

Factory: Jhamar Kotra Main Road, EKLINGPURA, Udaipur, Ph.: 2650460

Email: jagritiherbs@yahoo.co.in, Website: www.jagritiayurved.com

A GMP Certified Pharmacy

Jyoti Prakash Jain, Director- +91-94141 61690

SHREE AUSHADH PRATISHTHAN

Manufacturers of: Swadeshi Herbal Products

(A Unit Affiliated to K.V.I.C. India)

Factory

Shri Hariom Complex, Vill.-Eklingpura
Udaipur-313002 (Raj.), India, Ph.: (0294) 2650116

Head Office

Bank of India Street, Outside Delhi Gate, Udaipur,
RAJASTHAN (INDIA) 313001 Ph.: +91 294 2420016, 2427535
www.jagritiayurved.com, Email: jagritiherbs@yahoo.co.in

सर्वश्रेष्ठ अवार्ड प्राप्त करते एच.आर.एच. के लक्ष्यराजसिंह मेवाड़

एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल को पांच सर्वश्रेष्ठ अवार्ड

उदयपुर। होटलों एवं शाही शादियों के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य कर रही एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स उदयपुर को विशिष्ठ श्रेणी में 6 में से पांच अवार्ड प्राप्त हुए हैं। इंटरनेशनल कन्वेंशन फॉर वेडिंग फ्रटर्नीटी 2016 द्वारा 3 से 5 अगस्त को जयपुर की होटल फेयरमीट में आयोजित सेमीनार में उक्त अवार्ड घोषित किए गए। इसमें बेस्ट वेडिंग होटल का अवार्ड गजनेर पैलेस होटल को एवं ब्रान्स अवार्ड फतहप्रकाश पैलेस होटल को प्राप्त हुआ। बेस्ट वेडिंग वेन्यू का सिल्वर अवार्ड जगमंदिर आईलैण्ड पैलेस ने जीता। बेस्ट वेडिंग वेन्यू का सिल्वर अवार्ड जगमंदिर आईलैण्ड पैलेस ने जीता। बेस्ट वेडिंग वेन्यू का ब्रान्स अवार्ड सिटी पैलेस के माणक चौक को प्राप्त हुआ। बेस्ट वेडिंग होटल का सिल्वर अवार्ड शिव निवास पैलेस को प्राप्त हुआ। अवार्ड को एचआरएच ग्रुप ऑफ होटल्स, उदयपुर के कार्यकारी निदेशक लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, जनरल मैनेजर इवेंट एवं सेल्स दशरथ सिंह राठौड़ तथा होटल के महेश परनामी ने संयुक्त रूप से प्राप्त किए।

कस्तूरीः ए रजवाड़ी स्टोर का शुभारंभ

कस्तूरीः ए रजवाड़ी का उद्घाटन करते डॉ. कौशल चुण्डावत।

उदयपुर। पंचवटी सर्कल स्थित 'कस्तूरी' (रजवाड़ी परिधान स्टोर) का 15 अगस्त को डॉ. कौशल चूंडावत ने उद्घाटन किया। शिवराज सिंह राव ने बताया कि स्टोर में राजपूती सूट, साड़िया एवं अन्य परिधान विभिन्न वैरायटी व डिजाइन में उपलब्ध है। अतिथियों का स्वागत डायरेक्टर सुभाष जैन व ओम प्रकाश जैन ने किया। इस अवसर पर सुन्दरलाल माली, प्रियंका परमार, विपिन जैन, दीपेश कुमावत आदि भी उपस्थित थे।

मॉम एण्ड किड्स क्लब की अनूठी पहल

चेरिटी फेयर में बच्चों के साथ राहुल अग्रवाल एवं प्रीति अग्रवाल।

उदयपुर। फतहसागर की पाल पर एक अनाथ बालक के ऑपरेशन के लिए पैसा जुटाने के लिए लेकसिटी के मॉम एण्ड किड्स क्लब की ओर से गत दिनों चेरिटी फेयर सम्पन्न हुआ। जिसमें नन्हें-मुन्ने स्कूली बच्चों ने खाने की वस्तुओं की स्टॉल्स लगाई। दरअसल ये बच्चे और उनके अभिभावक शहर के महेशाश्रम में पल रहे 4 साल के मासूम आदित्य के ऑपरेशन के लिए पैसा जुटा रहे थे। इस फेयर के माध्यम से करीब 3 लाख रूपये जुटाए जा चुके हैं।

उपभोक्ताओं के लिए बीओबी ने शुरु की ई-लॉबी

ई-लॉबी का शुभारंभ करते बैंक ऑफ बड़ौदा के क्षेत्रीय प्रमुख सुरेन्द्र शर्मा व एस.के. पाटनकर व अन्य अधिकारी।

उदयपुर। बैंक ऑफ बड़ौदा अपने 109वें स्थापना दिवस के अवसर पर 20 जुलाई को शहर के ग्राहकों के लिए बैंक तिराहे पर ई-लॉबी की शुरुआत की। ई-लॉबी में ग्राहक कैश, जमा, विड्रॉ कर सकते हैं। साथ ही पासबुक अपडेट भी कर सकेंगे। इंटरनेट बैंकिंग सेवा भी शुरू होगी। इससे पहले स्थापना दिवस के कार्यक्रमों के तहत कलेक्टर रोहित गुप्ता के आतिथ्य में क्षेत्रीय कार्यालय के बाहर पार्क में पौधरोपण किया गया। इसके बाद कर्मचारियों ने रक्तदान किया और अपने हेल्थ का चेकअप कराया।

कार्यकारी निदेशक बी.बी. जोशी एवं राजस्थान के अंचल प्रमुख एस. के. अरोड़ा ने होटल वेली व्यू में अंचल के सभी क्षेत्रीय प्रमुख के साथ समीक्षा बैठक की। कार्यक्रम में राजस्थान की 576 शाखाओं में से 40 सर्वश्रेष्ठ शाखा प्रबंधकों व सात क्षेत्रीय प्रमुखों को उत्कृष्ट कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया।

उदयपुर के क्षेत्रीय प्रमुख सुरेन्द्र शर्मा व उप अंचल प्रमुख एस. के. पाटणकर, सुशील चौधरी, निलेश पाटीदार, एच.आर. दवे ने स्वागत किया। बैंक की 20 जुलाई को ट्रांसपोर्ट नगर व देबारी में नई शाखा खोली।

सिंधु और साक्षी ने बढ़ाया भारत का मान

दोनों खिलाड़ियों पर आशीष और पुरस्कारों की वर्षा

-जगदीश सालवी

रियो डि जिनेरियो में सम्पन्न ओलंपिक में भारत की दो बेटियों ने देश का गौरव बढ़ा कर लाखों खेलप्रेमियों को उत्साह से भर दिया। पीवी सिंधु ओलंपिक बैडमिंटन खेल में भले ही गोल्ड पर कब्जा नहीं जमा पाई, मगर अपने खेल से देशवासियों का दिल जरूर जीत लिया। दुनिया की नंबर वन शटलर स्पेन की कैरोलिना मारिन से मुकाबले में अंतिम दम तक लड़ने वाली सिंधु को रजत पदक मिला, जो किसी सोने से कम नहीं। वहीं महिला पहलवान साक्षी मलिक ने इससे पहले कांस्य पदक जीता और वह सबसे कम उम्र में पदक जीतने वाली भारतीय खिलाड़ी बन गई। अब भारतीय खेलों के इतिहास में पदक जीतने वाली चौथी महिला के तौर पर साक्षी का नाम रियो ओलंपिक की उपलब्धि के साथ चमकता रहेगा।

बैडमिंटन वर्ल्ड नम्बर 1 बनने की ख्वाहिश लिए पीवी सिंधु ने दम लगाकर प्रदर्शन किया। क्रिकेट के दीवाने देश में शायद पहली बार ऐसा हुआ, जब पूरा देश एक साथ टीवी के सामने किसी दूसरे खेल का मैच देख रहा था। चौराहों पर बड़ी-बड़ी स्क्रीन लगाई गई। सिंधु नम्बर वन बनने से भले ही चूक गई, लेकिन उसकी हार भी जीत से कम नहीं थी। गोल्ड के मुकाबले में वर्ल्ड नम्बर-1 स्पेन की कैरोलिना मारिन ने सिंधु को 19-21, 21-12, 21-15 से हराया। मुकाबला 80 मिनट तक चला। यह ओलंपिक में सबसे लंबा सिंगल्स मैच था।

सिंधु ने मैच की अच्छी शुरूआत की। पहले गेम में 12-6, 14-11, 19-16 जैसे मौकों पर पिछड़ने के बावजूद पहला गेम 19-21 से जीता। लेकिन मारिन ने दूसरे गेम में वापसी कर ली। मारिन दूसरे और तीसरे गेम में पूरी तरह हावी रही। पहला गेम 27 मिनट, दूसरा गेम 22 मिनट और तीसरा गेम 31 मिनट चला।

सिंधु की रियो की स्पेशल तैयारी एक साल पहले ही शुरू हो गई थी। कोच पुलेला गोपीचंद ने पीवी सिंधु के लिए 'मिशन रियो' तैयार किया था। उनके लिए वेट ट्रेनर और फिटनेस एक्सपर्ट रखे गए। उद्देश्य था सिंधु का स्टेमिना और ताकत बढ़ाना, ताकि खेल के लम्बे सफर को वह बिना थके पूरा कर सके।

ओलंपिक में भारत की ओर से 1924 से महिला खिलाड़ी जा रही हैं। तब से पहली बार किसी महिला ने रजत पदक जीता है। सिंधु के पिता पीवी रमन्ना ने सिंधु की तैयारी के सिलसिले में रेलवे से 8 महीने की छुट्टी ली थी। 1995 में जन्मी सिंधु सिर्फ 8 साल की उम्र में 2003 में पहली बार बैडमिंटन कोर्ट में उतरी। इस शटलर की सफलता के पीछे जहां उसकी मेहनत और समर्पण है, वहीं स्पोर्ट्स साइंस के नजरिये से देखा जाए तो 'जीत' पाना उसके खून में शामिल 'जीन्स' में भी है। इनके पिता पीवी रमन्ना और उनकी माता पी विजया भारत के लिए वॉलीबॉल खेल चुके हैं। लेकिन सिंधु को तराशने का असली काम किया पुलेला गोपीचंद ने। हैदराबाद की इस बेटी ने समूचे देश का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया। 120 साल के ओलंपिक इतिहास में भारत के लिए रजत पदक जीतने वाली पहली महिला खिलाड़ी सिंधु देश की चहेती बन गई हैं । सिंधु ने कमाल का खेल दिखाया और अपने जीवन का सबसे रोमांचक और महत्वपूर्ण मुकाबला खेल कर 'चांदी' बटोरी।

साक्षी : हौसले की उड़ान

छह अगस्त से शुरू हुए खेलों के महाकुंभ रियो ओलंपिक में बारहवें दिन आखिरकार भारत की साक्षी मलिक ने महिलाओं की फ्री स्टाइल कुश्ती के अट्ठावन किलोग्राम भार-वर्ग में कांस्य पदक जीत कर भारत के पदकों के इंतजार को समाप्त कराने में कामयाबी पाई। रियो के खेलों में अधिकतर भारतीय खिलाड़ियों का निराशाजनक प्रदर्शन सवा सौ करोड़ देशवासियों को बेहद मायूस करता रहा। साक्षी मलिक ने अंतिम राउंड में जैसे ही अपनी प्रतिद्वंद्वी आइसुलू ताइनेकबेकोवा को हरा कर जीत दर्ज की और उन्हें कांस्य पदक की विजेता घोषित किया, पदकों से खाली भारतीय उम्मीदें झूम उठीं। एक ऐसी उपलब्धि, जिसने समूचे देश को खुशी और उत्साह से भरने का मौका दिया। क्योंकि भारत के लिए पदक की उम्मीद जगाने वाले कई दिग्गज प्रतियोगिता से बाहर हो चुके थे। अट्ठावन किलोग्राम भार-वर्ग कुश्ती के जिस मुकाबले में किर्गिस्तान की पहलवान आइसुलू ताइनेकबेकोवा साक्षी के बरक्स थीं, उनसे वे आखिरी दौर तक थकी हुई दिख रही थीं। लेकिन कई बार शरीर की थकान को इंसान का जीवट मात दे देता है। साक्षी के मन ने हारने से इनकार कर दिया था।

यही वजह थी कि मुकाबले के अंतिम पलों में उनके भीतर जैसे कोई झोंका उठा और आखिरी बाजी पलट गई। हरियाणा के रोहतक की इस लाड़ली ने महिला कुश्ती में पहले दौर में झटका खाने के बाद ऐसी वापसी की कि प्रतिद्वंद्वी को चारों खाने चित्त करके देश की झोली में पहला पदक डाल दिया।

दिन भर में साक्षी ने पांच बाउट लड़े और वह भी 6-7 घंटे के दौरान। यह कितना मुश्किल होता है, यह आम आदमी की समझ से परे है। इसे कोई पहलवान ही महसूस कर सकता है। हर एक-डेढ़ घंटे में एक बाउट लड़ना कोई आसान बात नहीं है।

हर बाउट के बाद मांसपेशियां काम करना बंद कर देती है और शारीरिक क्षमता मंद होने लगती है, मानसिक दबाव भी बढ़ता जाता है और दिमाग शून्य होता लगता है। रेपरेज में प्रत्येक बाउट फाइनल जैसा होता है और सबमें जीत से ही पदक सुनिश्चित होता है। ऐसी स्थिति में खिलाड़ी शारीरिक ही नहीं मानसिक रूप से भी काफी दबाव में होता है। ऐसी विकट परिस्थिति में भी साक्षी ने अपने को संभाला, प्रोत्साहित किया और सबमें जीत हासिल की। उसका यह जज्बा न सिर्फ पहलवानों के लिए बल्कि हर एक के लिए प्रेरणास्पद है।

दिल्ली परिवहन निगम में कंडक्टर की नौकरी करने वाले साक्षी के पिता सुखबीर और आंगनवाड़ी में सुपरवाइजर पद पर नियुक्त माँ सुदेश मलिक के घर तो उस दिन खुशियों की बरसात थी।

पूरे रोहतक में खुशी और जश्न का माहौल था। भारतीय बैडमिंटन संघ रियो ओलंपिक में रजत पदक जीतने वाली पीवी सिंधु को आंध्र, तेलंगाना व दिल्ली सरकारों सहित विभिन्न संगठनों ने 13 करोड़ से अधिक के पुरस्कार देने की घोषणा के साथ उनके कोच पुलेला गोपीचंद को भी पुरस्कृत करने की घोषणा की है।

58 किलोग्राम वर्ग में कांस्य पदक जीतने वाली हरियाणा की पहलवान बेटी साक्षी मलिक को हरियाणा सरकार के ढाई करोड़ व दिल्ली सरकार द्वारा एक करोड़ के पुरस्कार सहित विभिन्न संगठनों की ओर से भी पुरूस्कारों की घोषणा की गई है।

सिंधु और साक्षी की गौरवपूर्ण उपलब्धि पर राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित पूरे देश ने बधाई और शुभकामनाएं दी हैं।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा
डिसाइड
AADHAR PRODUCTS
वाशिंग पाउडर, डिटर्जेंट टिकिया एवं बर्तन बार
डिसाइड
वाशिंग पाउडर
एडवाइज़
डिटर्जेंट टिकिया
बर्तन बार
Decide
Mfd. & Mktd. by : AADHAR PRODUCTS PVT. LTD., UDAIPUR Trade Enquiry 7727864004 | visit us at : www.aadharproducts.in

MIRAJ GROUP
तन भी शुद्ध, मन भी शुद्ध... तो वस्त्र क्यों रहे अशुद्ध!
मिराज शुद्ध
ऑयल सोप
100% पशु चर्बी रहित
MIRAJ SHUDDH
(Animal Fat Free)
Family Pack
MIRAJ TRADECOM PVT. LTD.
Miraj Campus, Nathdwara - 313 301 (Raj.) India / Email : fmcg@mirajgroup.in / Web: www.mirajgroup.in
Contact us at : 88759 92317, 88759 33370

लोकमंगल के हठी कवि मंगल सक्सेना

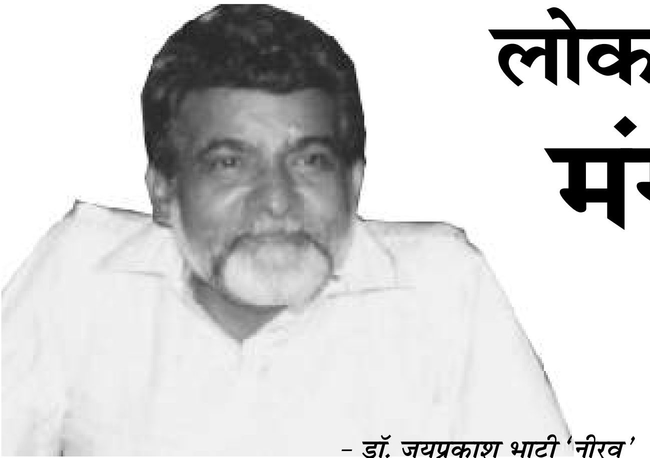

– डॉ. जयप्रकाश भाटी 'नीरव'

गेहूंआ रंग, लम्बा कद, होठों पर मुस्कान, लरजती आवाज़ और पैनी आँखें जो सामने वाले के हृदय में प्रवेश कर उसे अपना बना लेती थीं। ऐसा था मंगल सक्सेना का कवि व्यक्तित्व। मंगल जी का जन्म 14 मई, 1936 को बीकानेर में हुआ। इंटर तक की शिक्षा वहीं पूरी की। दस वर्ष की आयु में उनकी पहली कविता शिशु पत्रिका में प्रकाशित हुई। छात्र राजनीति में सक्रिय रहते हुए छात्रसंघ की संगीत नाटक समिति के अध्यक्ष बने। 'पराग' रंगमंचीय बाल नाटक प्रतियोगिता में 'चंदा मामा की जय' को प्रथम पुरस्कार मिला। सन् 1957 में वे अजमेर आ गए, जहाँ दयानन्द महाविद्यालय से समाजशास्त्र में एमए किया। 28 फरवरी 1968 में वे उदयपुर आए और प्रयोगधर्मी चित्रकारों की संस्था टखमण-28 गठित की।

उन्हीं के शब्दों में - ''मैं अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने की उद्दात प्रेरणा को ही सृजन का आधार मानता हूँ। मैं उन्हीं रचनाओं को रचता हूँ जो मानवता को गरिमा देने वाली हो।''

कोई भी उनसे मिलता अथवा कहीं रास्ते चलते मिल जाता तो चेहरे पर मुस्कान और हाथ अपने सीने से लगाकर हालचाल पूछना उनका स्वभाव था। बहुत धीमे और एक-एक शब्द को नाप-तोलकर बोलते थे-और जो कहते थे वह अर्थपूर्ण होता था। उनका व्यक्तित्व दृढ़ प्रतिज्ञ, साहसी, समाज विरोधी शक्तियों और सामंतवाद से संघर्ष करने वाले जुझारू योद्धा और कर्मठ कार्यकर्ता के समकक्ष था। उन्हें अपने जीवन में न यश चाहिये था और न ही धन। उन्होंने पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कभी कोई कार्य नहीं किया। वह ऐसे ज्योतिपुंज थे जो हर पल अपनी शर्तों पर जीते थे। उन्हें बड़े-बड़े पदों के प्रलोभन मिले। किन्तु उन्हें अपने कार्य में स्वतंत्रता पसंद थी। राजस्थान साहित्य अकादमी के संस्थापक-अध्यक्ष पं. जनार्दन राय नागर के बहुत कहने पर उन्होंने राजस्थान साहित्य अकादमी का सचिव पद स्वीकार किया। वह एक खुद्दार व्यक्ति थे। दूसरों के हाथ जोड़ना या पद प्राप्त करने के लिये चमचागिरी उनके स्वभाव में नहीं था। वह प्रेम, प्यार और सम्मान सभी को देते थे और अपने लिए भी ऐसी अपेक्षा रखते थे। 'मैं तुम्हारा स्वर' और 'कपट का सीना फाड़ो' जैसी मार्मिक कृतियों के निराले साहित्यकार अपनी स्मृतियाँ हमारे मध्य छोड़ गये, वे लोक मंगल के हठयोगी कवि बन कर जीये एवं जय-पराजय से मुक्त रहे। उनका सान्निध्य-आलोक, आशा और आश्वासन का प्रदाता हो जाया करता था। ऐसे अद्वितीय व्यक्तित्व की अमर छाप छोड़कर शेषकीर्ति मंगल सक्सेना का 29 जुलाई को हृदयाघात से निधन हो गया। वे अस्सी वर्ष के थे। दस माह से बीमार थे। अंत समय तक अपनी धर्मपुत्री डॉ. विद्या आचार्य के सान्निध्य में ही रहे और उन्हीं के घर में अंतिम सांस ली। जब उनकी बाईपास सर्जरी हुई थी तो मैं एवं लेखक-पत्रकार विष्णु शर्मा हितैषी उनसे घर मिलने गये थे। तब भी उन्होंने बड़े आदर से सम्मान दिया, अपनी चिरपरिचित मुस्कान को होठों पर बिखेर कर। मैंने उनसे अनुरोध किया कि राजस्थान साहित्य अकादमी से प्रकाशित होने वाले काव्य संग्रह 'शेष मुझमें' के लिये वे भूमिका लिखें। उन्होंने तुरन्त स्वीकार कर लिया। करीब घंटा भर वे उदयपुर के रचनाधर्मियों के रचना संसार, साहित्य अकादमी में बतौर सचिव बिताए पलों और नूतन साहित्य संगम द्वारा 60 से 80 के दशक के मध्य आयोजित गोष्ठियों और अ. भा. प्रेमचंद स्मृति सम्मेलन की चर्चाएं करते रहे। जिसमें रूस के हिन्दी विज्ञान सहित डॉ. नामवर सिंह, डॉ. भगवत शरण उपाध्याय, पं. जनार्दन राय नागर, डॉ. डी.एस. कोठारी वेद व्यास, सौरभ भारती भी मौजूद थे।

नूतन साहित्य संगम, उदयपुर के बैनर तले ही 'शेष मुझमें' काव्य संग्रह का 2006 अप्रेल में लोकार्पण हुआ। जिसमें मंगल जी ही मुख्य अतिथि थे। लोकार्पण समारोह में अकादमी की तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. अजित गुप्ता, नूतन साहित्य संगम के अध्यक्ष प्रो. घनश्याम शलभ, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. पूनम दईया, नूतन साहित्य संगम के संस्थापक-सचिव विष्णु शर्मा हितैषी, रा. सा. अकादमी के सचिव डॉ. एल. एन. नन्दवाना भी मौजूद थे।

आलेख लेखक के कविता संग्रह का विमोचन करते मंगल सक्सेना। - फाइल फोटो

मंगल जी ने कहा कि लोकार्पित काव्य संग्रह 'शेष मुझमें' ने व्यक्ति के अस्तित्व के सामने खड़ी चुनौतियों पर समाज का ध्यान खींचा है। उन्होंने कहा कि जहां रागात्मक संवेदना का आग्रह होता है, वहीं सृजन की संभावना होती है। उन्होंने साहित्यकारों से कहा कि वे परिवर्तन की धारा को पहचान कर मंथन करें और यथार्थ के सम्बल के साथ संवेदनाओं की भावभूमि पर अंतश्चेतना के प्रकाश में समाज की दशा और दिशा बदलने वाला सृजन करें।

मंगल जी ने चौबीस से अधिक नाटक निर्देशित किये इतने ही लिखे भी। उनके द्वारा निर्देशित नाटकों का उदयपुर में लोककला मंडल में जब मंचन होता था तो नाट्य प्रेमियों का ऐसा जमावड़ा होता था, जो अब देखने में कम ही आता है। एक-एक सप्ताह तक नाटकों का मंचन होता था। नाट्यकर्मियों को मंच उपलब्ध कराने के लिए 'त्रिवेणी' संस्था की भी स्थापना की। उन्होंने तीस से अधिक नाट्य शिविरों के माध्यम से करीब ढाई हजार से अधिक कलाकारों को प्रशिक्षित किया।

1964 से 67 तक राजस्थान साहित्य अकादमी के सचिव और 1984-87 तक राजस्थान संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष रहे। साहित्य अकादमी ने 1984-85 में विशिष्ट साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया। राजस्थान विद्यापीठ के संस्थापक पं. जनार्दन राय नागर ने उन्हें 'साहित्य श्री निधि' सम्मान से नवाजा। राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने उन्हें 2001-2002 में नाट्य निर्देशन के लिये 'अकादमी अवार्ड' दिया। बाल साहित्य विधा में उल्लेखनीय योगदान के लिये भी उन्हें सम्मानित किया गया। उन्होंने बाल नाटक 'चंदा मामा' व 'आदत सुधार दवाखाना' भी लिखा। वे राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर के भी अध्यक्ष रहे। उनका जाना राजस्थान के हिन्दी जगत की बड़ी क्षति है।

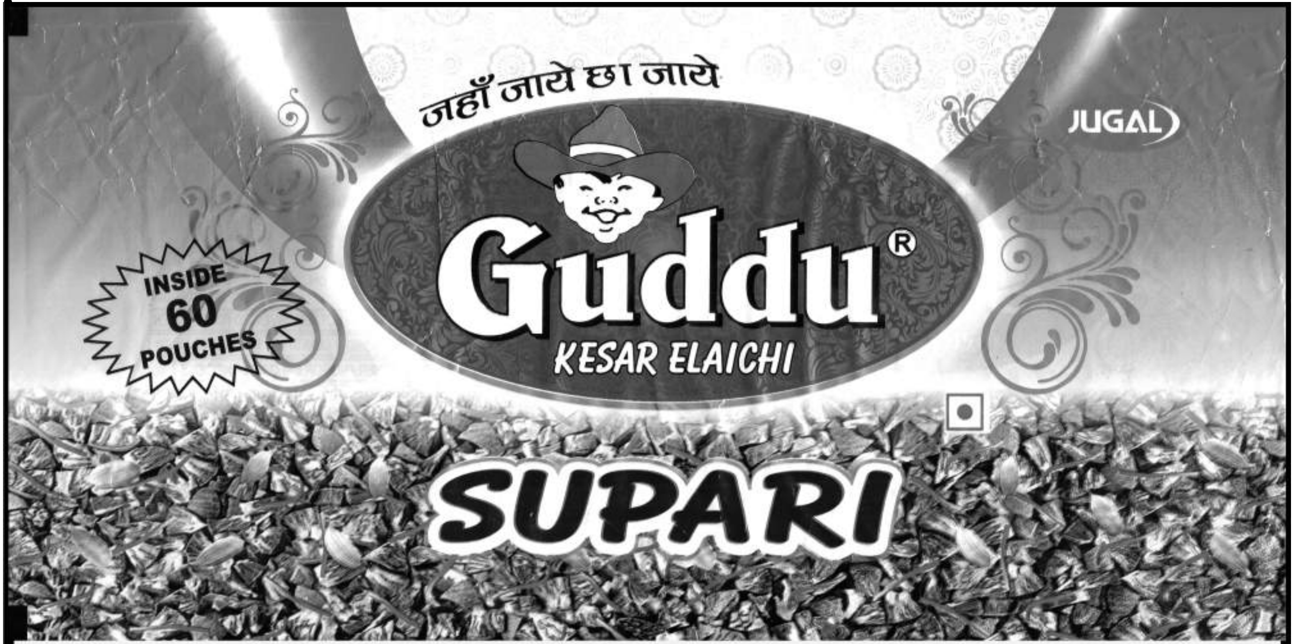

Neeraj

Harsh

LAXMI TRADERS

Wholesale Dealers for:

PAN MASALA - TOBACCO - BEEDIES

CIGERATES - MATCHES

ZEENI RET KA CHOWK, UDAIPUR (Raj.)
Mob.: - 9928147546, 982949990
Tel. No.: 0294-(S) 2421627 (R) 2485064

शर्म हमको मगर नहीं आती!

राजस्थान देश का एक ऐसा प्रदेश है जहां आये दिन कोई न कोई ऐसी घटना होती है जिससे हमारा सिर शर्म से झुक जाता है। विकास की दौड़ में यहां का समाज इतना उतावला हो गया है कि 'योग, भोग और रोग' की त्रिवेणी में डुबकी लगाने से ही उसे फुर्सत नहीं है।

- वेद व्यास

अज्ञान और अंधविश्वास की इस प्रयोगशाला में चारों तरफ लगातार कुछ ऐसा घटित हो रहा है कि पुलिस और प्रशासन दोनों ही हैरान हैं। खासकर महिलाओं, दलितों,आदिवासियों और अल्पसंख्यकों को लेकर यहां की मानसिकता इतनी विकृत हो गई है कि हम कुछ भी कर बैठते हैं।

अब सुनिये! कि - उसका कसूर सिर्फ इतना था कि पिता दहेज में 51 हजार रुपये नहीं दे पाये। ससुराल वालों और पति ने मिलकर ऐसा जुल्म ढाया कि रूह काँप जाये। शादीशुदा महिला का सिन्दूर मिटाया और ललाट पर लिख दिया कि - मेरा बाप चोर है। यह दर्द भरी दास्तां है स्मार्ट सिटी जयपुर के पास के गांव की है। ससुराल वाले अलवर जिले में राजगढ़ के पास रैणी गांव के हैं। उन्होंने इस नव विवाहिता के हाथों और जांघों पर गालियां गुदवा डालीं। हाथ पैर बांधे, मुंह में कपड़ा-ठूंसा और मशीन से गोदी अभद्र गालियां।

हम इस घटना को अपवाद न मानकर अब सोचें कि - ऐसा क्यों हो रहा है और गांव और समाज के पंच-सरपंच क्या कर रहे हैं? और क्यों कर रहे हैं? यह घटना बताती है कि महिलाओं को लेकर हमारे समाज की बीमार मानसिकता आज भी 18वीं-19वीं शताब्दी की है और हमने अपने घर-परिवार को जीवित नर्क बना रखा है। कभी सती प्रथा का आविष्कार भी ऐसे ही अज्ञान से हुआ था तो कभी आदिवासी समाज में मौताणे की प्रथा का उद्गम भी इसी तरह की परम्परा और विरासत से हमें मिला है। ठीक ऐसे ही राजस्थान में दहेज और कन्या भ्रूण हत्या की मानसिकता हमें विरासत में मिली है और महिलाओं को चुड़ैल और डायन घोषित करने की हमारी पुरानी आदत बन गई है? औसर-मौसर, बाल विवाह और कर्मकाण्ड तथा झाड़ा फूंका, जादू टोना भी हमारे समाज में आज भी प्रचलित है। सोचिये कि - ऐसा क्यों हो रहा है और इस पिछड़ेपन से मुक्ति पाने के लिये हमारा-तथाकथित बुद्धिजीवी और सभ्य समाज क्या कर रहा है?

हम समाज शास्त्रियों की व्याख्या को जानते हुए भी आज इस नासमझी पर गम्भीरता से कहना चाहते हैं कि ऐसे अपवाद ही हमारे विकास और परिवर्तन का आईना हैं। जब एक तरफ हम सूचना-प्रौद्योगिकी की टैक्नोलॉजी को लेकर पूरी दुनिया को एक गांव की तरह देखते हैं तो फिर हमें पांवों के नीचे जलती आग को भी समझना होगा क्योंकि कोई सरकार, पुलिस और प्रशासन तो दुर्घटना के बाद ही निदान के लिये खोजबीन करने आती है।

राजस्थान की विडम्बना यह है कि - हम लोकतंत्र में रहकर भी एक सामंती और जागीरदारी मानसिकता में जीते हैं। कारण यह भी है कि राजस्थान के समाज में संत सुधारक और प्रेरकों की परम्परा सैकड़ों साल से समाप्त हो गई है तथा जातियों और धर्म सम्प्रदायों की पंचायत में महिलाओं को लेकर हमारा दुराग्रह ज्यों का त्यों बना हुआ है। हमें महाराणा प्रताप, दुर्गादास, भामाशाह जैसों की चिन्ता तो है लेकिन मीराबाई, सहजोबाई, डालीबाई और भंवरी देवी के भूत, भविष्य और वर्तमान की कोई चिन्ता नहीं है? समाज में पैसा और प्रभुता का अब ऐसा दंगल हो रहा है कि औरत को अपने खेत की मूली ही समझा जाता है।

कभी ध्यान दें तो पता चलेगा कि - राजस्थान में आज भी महिला शिक्षा का प्रसार बहुत कम हैं तथा निरक्षरता का सबसे गहरा अंधेरा-अनुसूचित जाति जनजाति और अल्पसंख्यक समाज में है तथा धर्म जागरण की सारी भीड़ महिला मंडित ही है। नरेगा की मजदूरी से लेकर उत्पीड़न का हर रास्ता बहन-बेटियों पर ही केन्द्रित है। महिला सशक्तिकरण बेटी-बचाओ, बेटी पढ़ाओ जैसे अभियान प्रदेश में कमजोर हैं तथा गढ़, हवेली, महल को बचाने में ही राजस्थान की समझदारी अधिक सक्रिय है। यहाँ तक कि - अब पुराने भामाशाहों की जगह नये बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के दानदाताओं ने ले ली है। राज्य महिला आयोग राजधानी में सज-धजकर रहने के अलावा दूरदराज के पिछड़ेपन पर कोई अभियान और जागरण का संज्ञान तक अखबार पढ़कर ही लेता है। अज्ञान का यह चक्रव्यूह इतना जटिल और भ्रष्ट है कि हर बार आखिर में फरियादी ही मारा जाता है। समाज और सरकार के कानों में कभी कोई जूं तक नहीं रैंगती। पारदर्शिता और जवाबदेही की बातें करने वाले बेखौफ पीटे जाते हैं। और तो और समाज खुद इतना संवेदनहीन हो गया है कि प्रतिरोध, संवाद और सद्भाव की जगह ही समाप्त हो गई है। राजस्थान की यही अद्भुत कहानियां - विकास का दूसरा चेहरा बताते हुए हमें जगाती हैं, कि भौतिक विकास की जगह मानवीय मूल्यों के विकास पर भी ध्यान देना जरूरी है, क्योंकि जब तक समाज में अपने आसपास घटित हो रही लज्जाजनक घटनाओं पर कोई पश्चाताप नहीं होगा तब तक विकास की सारी बातें अधूरी ही रहेंगी। आज राजस्थान बिजली, पानी, सड़क और पुलिस-प्रशासन पर जितना खर्च कर रहा है उसका एक हिस्सा यदि समाज सुधार की दिशा में खर्च करे तो शायद फिर किसी बेटी के माथे पर कोई यह गालियां नहीं गुदवा सकेगा कि - मेरा बाप चोर है। समाज में शिक्षा प्रसार की व्यापक जागृति का अभियान लाखों जनप्रतिनिधि को अपनी प्राथमिकता में लेना चाहिए ताकि राजस्थान को देश और दुनिया में शर्मिन्दा न होना पड़े।

सियासत की 'पिच' पर बदजुबानी की 'बेटिंग'

यूपी में विधानसभा चुनाव की दस्तक से हलचल तेज हो गई है। चुनाव का परिणाम क्या होगा, यह तो बाद की बात है, लेकिन जो वातावरण बना है, उसमें चुनाव की बिसात के लिए गालियों का गलीचा जरूर बिछ गया है।

राजनीति में नैतिक व लोकतांत्रिक मूल्यों का निरंतर क्षरण हो रहा है। खीझ या फिर दूसरे को नीचा दिखाने के मकसद से असंसदीय शब्दों का इस्तेमाल आम होता जा रहा है। जब भी किसी दल का कोई नेता असंसदीय शब्दों का इस्तेमाल करता है तो अन्य दल मर्यादा की दुहाई देते नहीं थकते, लेकिन जब अपने पर आती है तो वे यह तकाज़ा भूल जाते हैं। हाल ही में उत्तर प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष दयाशंकर सिंह ने बसपा प्रमुख मायावती को लेकर व्यक्तिगत तौर पर अवांछित टिप्पणियां कर सियासत का बाजार गर्म कर दिया। भाजपा के लिए यह अप्रत्याशित था। जुलाई के आरंभ में मुंबई में अम्बेडकर भवन को बुलडोजर से गिराए जाने के दंश से भाजपा उबर भी नहीं पाई थी कि 12 जुलाई को ही गुजरात के ऊना शहर में

दलितों की पिटाई के बाद बढ़ते जनाक्रोश ने भाजपा के लिए और ज्यादा मुश्किलें खड़ी कर दी। रही सही कसर उत्तर प्रदेश के मायावती-दयाशंकर सिंह के वाक् प्रकरण ने पूरी कर दी। भाजपा ने भले ही यूपी में दयाशंकर सिंह के खिलाफ वक्त पर कार्रवाई की। लेकिन भाजपा को जो क्षति हो चुकी, उसकी भरपाई आसान नहीं है। यह मुद्दा यूपी के साथ पंजाब और गुजरात में भी विपक्ष का हथियार बनेगा। जहां 2017 में विधानसभा चुनाव होने हैं।

मर्यादापूर्ण आचरण और शालीन भाषा का इस्तेमाल सियासत की रोड पर वनवे नहीं है। जिस पर एक तरफ के ट्राफिक को तो कानून की डोरियों से बांधने की कोशिश की जाती रहे। परन्तु दूसरी तरफ चलने वाले ट्राफिक को मनमर्जी चलने की छूट दे दी जाए। मायावती जिस गाली का विरोध कर रही थीं, आखिर वैसी ही दूसरी गाली को वह जायज कैसे ठहरा सकती हैं? दयाशंकर सिंह की टिप्पणी के विरोध में जिस तरह बसपा कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन के दौरान मर्यादा की हदें पार कीं और खुद मायावती ने संसद में जिन शब्दों के साथ बयान दिए। वे न तो लोकतांत्रिक थे और नहीं उनका बड़प्पन। क्या मायावती भी माफी मांगेगी? उसके नेता, कार्यकर्ता और विधायक दया को कितना ओछा बोले। इससे भी शर्म की बात है वे दयाशंकर की बहन, बेटी और बीबी की इज्जत उतारना चाहते। बसपा की चंडीगढ़ प्रमुख जन्नत जहां दया की जीभ काटने वाले को 50 लाख रुपये इनाम देना चाहती। उसी यूपी में चाहे कांग्रेस हो अथवा भाजपा, सपा हो या बसपा अमर्यादित बयानबाजी में कोई किसी से कम नहीं। भाजपा के बयानवीरों ने दिल्ली और बिहार की सत्ता खोई। क्या इन्हीं तरीकों से वे यूपी, पंजाब, गुजरात फतह करेंगे?

भाजपा की मुश्किल यह है कि पिछले दिनों जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी यूपी के बलिया में 'उज्ज्वला योजना' की शुरुआत कर रहे थे तब दयाशंकर प्रधानमंत्री के साथ मंच पर थे। ऐसे में भाजपा के लिए यह प्रकरण सिरदर्द बन सकता था। लिहाजा उन्हें भाजपा की सभी जिम्मेदारियों से मुक्त करना मजबूरी बन गया। यह मुद्दा उन सभी राजनीतिकों के लिए भी बड़ा सवाल है कि आजादी के सात दशक बाद भी दलित समाज आज भी हाशिए पर ही खड़ा है। शहरों के हालात छोड़ भी दें तो देहातों के हालात भयावह विषमता की ओर अग्रसर हैं। भले ही केन्द्र और राज्य सरकार प्रवर्तित जनकल्याणकारी योजनाओं का कुछ लाभ दिखलाई पड़ रहा है। परन्तु आज भी दलित समुदाय तरक्की और आत्मनिर्भरता के मामले में औंधे मुंह पड़ा है। शिक्षा के प्राथमिक प्रयासों से दलित बच्चे आगे बढ़ रहे हैं, परन्तु उनकी तादाद गिनी चुनी है। आम लोग आज भी गांवों में लोकतंत्र का लबादा ओढ़े सामंतों के अत्याचारों से पीड़ित हैं। दलितों को भी थोथे नारे लगाने वाले शातिर नेताओं के उकसावे में न आकर जातिवादी आन्दोलन को ही अपना भविष्य नहीं मान लेना चाहिए।

दयाशंकर सिंह की टिप्पणियां मोदी सरकार के लिए भारी पड़ गई है। इसके जवाब में बसपा नेताओं ने जो कहा वह भी बर्दाश्त से बाहर था। दयाशंकर के बयान ने जो मौका बसपा को दिया, उससे बड़ा मौका बसपा नेताओं ने दयाशंकर की

मां, पत्नी और बेटी के खिलाफ अनर्गल शब्दों का उपयोग कर भाजपा को दे दिया। मायावती ने अपने राजनीतिक कॅरियर की शुरूआत दलित समाज के प्रभावी नेता काशीराम के मार्गदर्शन में शुरू की। नब्बे के दशक में मायावती एक ताकत बन कर उभरी और जोड़-तोड़ की राजनीति से ऊंचाइयों पर पहुंची। वर्ष 2007 बसपा के राजनीतिक सफर का चरमोत्कर्ष था। मायावती जल्दी ही आत्ममुग्धता की बीमारी से ग्रस्त हो गई। अहमन्यता का नतीजा यह हुआ कि पार्टी का ग्राफ लगातार गिरने लगा। 2009 के लोकसभा चुनाव में बसपा को केवल 20 सीटें मिलीं। इससे दो साल पहले 206 विधानसभा सीटें जीतने वाली बसपा केवल सौ विधानसभा सीटों पर ही बढ़त बना सकी। पार्टी 2012 का विधानसभा चुनाव हारी और 2014 में उसका एक भी नुमाइंदा लोकसभा नहीं पहुंच सका। अगले साल फिर चुनाव हैं। बिहार विधानसभा चुनाव के बाद लग रहा था कि उत्तर प्रदेश विधानसभा का चुनाव सपा-बसपा के बीच होगा और इसमें बसपा का पक्ष मजबूत होगा। स्वामी प्रसाद मौर्य आर के चौधरी और कुछ प्रभावशाली नेताओं की बगावत से बसपा को बड़ा झटका लगा। बसपा नेता नसीमुद्दीन और स्वाति सिंह (दयाशंकर की पत्नी) के मैदान में उतरने से एक बात तो तय हो गई कि इस चुनाव में बसपा को अगड़ी जातियों के वोट नहीं मिलेंगे। 2016 के विधानसभा चुनाव का दारोमदार अब अति पिछड़ी जातियों पर है। यह वर्ग जिसकी ओर जाएगा, प्रदेश की सत्ता पर वही काबिज होगा। 1991 में भाजपा अगड़ी जातियों और अति पिछड़ों के समर्थन से ही अकेले दम पर सत्ता में आई थी। एक बात साफ है कि बसपा को दया प्रकरण ने बेहद उलझा दिया है। उत्तर प्रदेश में लगता है अब सपा और भाजपा के बीच ही मुख्य मुकाबला होना है। इस आक्रोश को मोदी सरकार विरोधी राजनीतिक दलों ने अपने लिए एक अवसर के रूप में देखा। उन्होंने इस घटना पर संसद में तो हंगामा किया ही, पीड़ित दलितों से मुलाकात का सिलसिला भी शुरू कर दिया। वहीं बसपा समर्थकों की उग्र प्रतिक्रिया ने साबित किया कि वे राजनीतिक-सामाजिक मर्यादा को ताक में रख कर ईंट का जवाब पत्थर से देने में यकीन रखते हैं। ऐसे उग्र प्रदर्शन की वैसे भी जरूरत तब ही खत्म हो गई, जब दयाशंकर सिंह ने माफी मांग ली और भाजपा ने उन्हें छह साल के लिए निष्कासित कर मुकदमा भी दर्ज करा दिया। भाजपा इस प्रकरण की शुरुआत में तो बचाव की मुद्रा में आई, परन्तु बसपा विधायक नसीम की लज्जाजनक टिप्पणी से फिर से आक्रामक हो गई। भाजपा नेताओं ने कहा कि कुछ साल पहले जब समाजवादी पार्टी के उपद्रवी तत्वों ने मायावती पर लखनऊ गेस्ट हाउस में प्राणघातक हमला किया। तब भाजपा ने ही मायावती की रक्षा की थी। आज वही मायावती भाजपा नेताओं को निशाना बना रही है, उसे भाजपा सहन नहीं करेगी। दुर्भाग्य है कि कोई भी पार्टी राजनीति में अवसरवादिता और अपने स्वार्थों को नहीं छोड़ती। **- उमेश शर्मा**

समाज में समरसता और भाईचारा कायम रहे

आजादी के सत्तर साल बाद भी जाति की जकड़न समाज को छोड़ने को तैयार नहीं है। जाति का प्रभाव राजनीति की दशा और दिशा दोनों तय करता है। यह हमेशा से होता आया है। जातीय बीमारी ऐसी है, ज्यों-ज्यों दर्द की दवा की, वह और बढ़ता गया। शिक्षा का प्रसार तो हुआ पर जातीयता की जड़ें भी गहरी होती गई। जाति के विरोध में जो विचारधारा बनाई गई, समय के साथ वह वोटबैंक में बदल गई और यह वोटबैंक जातीय विचारधारा बन गई। पिछड़े ही नहीं दलितों के साथ भी ऐसा ही हुआ। भ्रष्टाचार करने वाला नेता अपने बचाव के लिए इसे एक हथियार के रूप में प्रयोग करता है। हर भ्रष्टाचारी तर्क देता है कि जातिगत भेदभाव के चलते उनको परेशान करने के लिए सत्ताधारी तंत्र द्वारा यह आरोप लगाए जा रहे हैं। जाति के लोग इस बात को सही मान लेते हैं। इसीलिए अगड़े-पिछड़े और दलितों का वर्ग संघर्ष सामाजिक सद्भावना और भाईचारे को तार-तार कर रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं कि सदियों से खासकर दलित समुदाय हाशिए पर रहा। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ने इस पीड़ा को समझा और संविधान में दलितों के उत्थान के लिए कई प्रावधान जुड़वाए। डॉ. राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश ने सोशिलिस्ट आन्दोलन के जरिए पिछड़ों की राजनीति शुरू की। उनके अनुयायी जातीयता खत्म करने के बजाय उसका हिस्सा बन गए। इस आपाधापी के बीच अगड़े वर्ग की जातियों ने भी अपने-अपने समाज के लिए आर्थिक आधार पर आरक्षण की मांग शुरू कर समाज में नया बखेड़ा कर दिया। अल्पसंख्यक वर्ग ने भी इसकी देखादेखी आरक्षण की मांग कर डाली। यानी भारतीय समाज विखंडित होने के कगार पर हैं। कोई भी राजनीतिक दल वोट पाने के हथकण्डे को छोड़कर विकास पर ध्यान देने का तैयार नहीं लगता है।

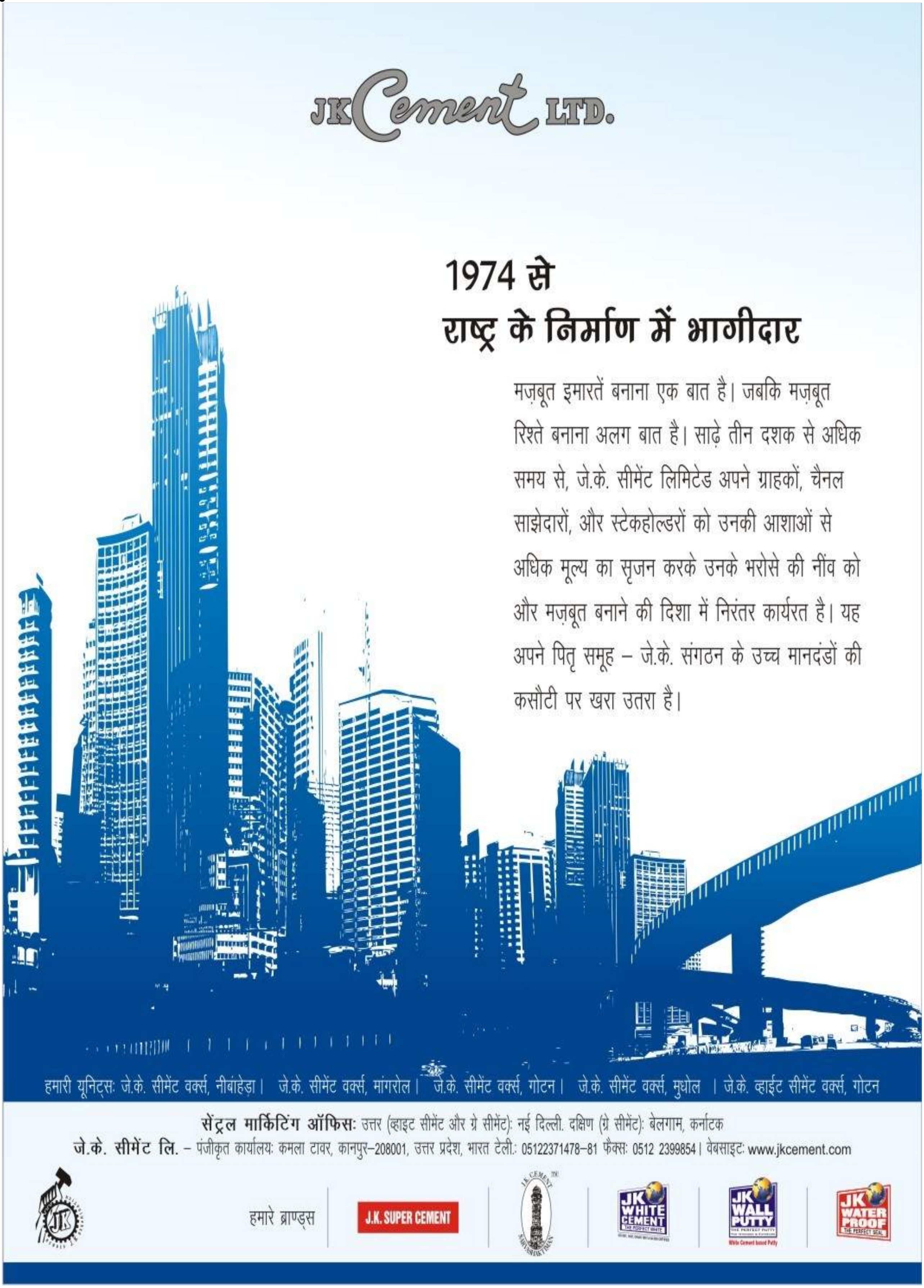
JK Cement LTD.
1974 से
राष्ट्र के निर्माण में भागीदार
मज़बूत इमारतें बनाना एक बात है। जबकि मज़बूत रिश्ते बनाना अलग बात है। साढ़े तीन दशक से अधिक समय से, जे.के. सीमेंट लिमिटेड अपने ग्राहकों, चैनल साझेदारों, और स्टेकहोल्डरों को उनकी आशाओं से अधिक मूल्य का सृजन करके उनके भरोसे की नींव को और मज़बूत बनाने की दिशा में निरंतर कार्यरत है। यह अपने पितृ समूह – जे.के. संगठन के उच्च मानदंडों की कसौटी पर खरा उतरा है।
हमारी यूनिट्सः जे.के. सीमेंट वर्क्स, नीबांहेड़ा। जे.के. सीमेंट वर्क्स, मांगरोल। जे.के. सीमेंट वर्क्स, गोटन। जे.के. सीमेंट वर्क्स, मुधोल । जे.के. व्हाइट सीमेंट वर्क्स, गोटन
सेंट्रल मार्किटिंग ऑफिसः उत्तर (व्हाइट सीमेंट और ग्रे सीमेंट): नई दिल्ली. दक्षिण (ग्रे सीमेंट): बेलगाम, कर्नाटक
जे.के. सीमेंट लि. – पंजीकृत कार्यालयः कमला टावर, कानपुर–208001, उत्तर प्रदेश, भारत टेली.: 05122371478–81 फैक्सः 0512 2399854। वेबसाइटः www.jkcement.com
हमारे ब्राण्ड्स
J.K. SUPER CEMENT
JK WHITE CEMENT
JK WALL PUTTY
JK WATER PROOF

पूर्णता के प्रतीक श्री गणेश

गण का अर्थ है सामान्य लोग व ईश का अर्थ सर्वोच्च। महादेव और आदिशक्ति की संतान गणेश रिद्धि(समृद्धि) व सिद्धि (आध्यात्मिक शक्तियां) से विवाहित हैं। वे सांसारिक व आध्यात्मिक सिद्धियां प्रदान करते हैं।

- डॉ. प्रणव पण्ड्या

बड़े-बड़े मंडपों और आकर्षक सजावट के बीच पूरे वर्ष इंतजार के बाद आता है गणेश उत्सव। पौराणिक मान्यता है कि भाद्रपद मास की शुक्ल चतुर्थी से दस दिन तक भगवान शिव और पार्वती के पुत्र गणेश पृथ्वी पर रहते हैं। गणेश चतुर्थी से अनंत चतुर्दशी के दस दिवसीय पर्व को पूरे भारत में धूमधाम से मनाया जाता है। गणेश उत्सव का इतिहास बड़ा पुराना है। लेकिन इसे प्रसिद्ध, संगठित एवं सार्वजनिक करने का श्रेय स्वतंत्रता सैनानी और समाज सुधारक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक को जाता है। उन्होंने इस पर्व से अंग्रेजों के खिलाफ सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए युवा वर्ग को एकत्रित करने की योजना बनाई थी। तब से लेकर आज तक पूरे देश में गणेश उत्सव का सिलसिला जारी है।

गणेश चतुर्थी के इस पर्व का आध्यात्मिक एवं धार्मिक महत्व भी है। हिन्दू मान्यता के अनुसार हर अच्छी शुरुआत गणेश के नाम के साथ होती है। हर मांगलिक कार्य का शुभारम्भ गणपति के ध्यान और पूजन से किया जाता है। मान्यता है कि वे विघ्नों का नाश करने और मंगलमय वातावरण बनाने वाले हैं। गणेश शब्द का अर्थ होता है - जो समस्त जीव जाति के 'ईश' अर्थात् स्वामी हों - 'गणानां जीवजातनां य: ईश: स: गणेश:।' श्री गणेश सर्वस्वरूप, पूर्ण ब्रह्म, साक्षात् परमात्मा हैं। गणेश जी को विनायक भी कहते हैं, जिसका अर्थ है - विशिष्ट नायक। वैदिक मत में सभी कार्यों का आरम्भ जिस देवता के पूजन से होता है, वही विनायक हैं। विनायक चतुर्थी या गणेश चतुर्थी का व्रत सिंहस्थ सूर्य, भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी और हस्त नक्षत्र के योग में होता है।

गणेश जी की पूजन सामग्री में दूर्वा, शमी और मोदक को मुख्य माना जाता है, क्योंकि ये गणेश जी के प्रिय हैं। दूर्वा अर्थात् जीव। जीव सुख-दु:ख को भोगने के लिए जन्म लेता है। इस सुख-दु:ख रूपी द्वन्द्व को दूर्वा युग्म अर्थात् दो दूर्वाओं को पूजन में समर्पित किया जाता है। शमी वृक्ष को वहि वृक्ष कहते हैं। वहिका पत्र गणेश जी का प्रिय है। वहि पत्र से गणेश जी के पूजन से जीव ब्रह्म भाव को प्राप्त करता है। जिस प्रकार जीव जन्म-जन्मांतर में अर्जित पुण्य और पापों के फलस्वरूप बार-बार जन्म लेता है, उसी प्रकार दूर्वा अपनी अनेक जड़ों से जन्म लेता है। गणेश विवेक के देवता कहलाते हैं। गणेश जी को दो प्रमुख वस्तुएं प्रिय हैं - दूर्वा और शमी। इसके पीछे की प्रेरणा पर्यावरण संरक्षण को लेकर भी है। आज जंगल कटते जा रहे हैं और शहरों में सीमेंट की दूर्वाएं बिछाई जा रही हैं। हमें इस पर्व पर पर्यावरण संरक्षण के बारे में भी सोचना होगा।

गणेश की तीसरी प्रिय वस्तु है मोदक। मोदक आनंद का प्रतीक है। सदैव आनंद में निमग्न रहना और ब्रह्मानन्द में लीन हो जाना मोदक का गुण व अभिप्राय है। मोदक देखने में गोल आकार का होता है और गोल महाशून्य का प्रतीक है। यह समस्त वस्तुजगत जो दृष्टि की सीमा में है अथवा उससे परे है, शून्य से उत्पन्न होता और उसी में विलीन हो जाता है। शून्य की यह विशालता पूर्णत्व है और प्रत्येक स्थिति में पूर्ण है। पूर्णता प्रणव मन्त्र का गुण है, अत: गणेश प्रणव के प्रतीक हैं। आजादी के आंदोलन में लोकमान्य तिलक द्वारा जिस उत्सव को लोकोत्सव बनाने के पीछे सामाजिक क्रांति का उद्देश्य था, क्या आज भी वह सार्थक है? क्या गणेश उत्सव केवल उत्सव भर रह गया है या इसे मनाने के पीछे पर्व की प्रेरणा भी है? स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तिलक ने ब्राह्मणों और गैर-ब्राह्मणों की दूरी समाप्त करने के लिए यह पर्व प्रारम्भ किया था, जो एकता की मिसाल साबित हुआ। आज गणेश उत्सव के पांडाल एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धात्मक हो चले हैं, प्रेरणाएं कोसों दूर होती जा रही हैं और एकता नाम मात्र की रह गई हैं। ऐसे में गणेश पर्व को एकता, समता और प्रेम मैत्री के धागे में पिरोएं, तभी सार्थक होगा हमारा गणेश उत्सव। **(लेखक देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, शांतिकुंज-हरिद्वार के कुलाधिपति हैं)**

आर.पी. गुप्ता को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

माइनिंग इंजीनियर्स ऑफ इंडिया ने पिछले दिनों बेंगलुरु(कर्नाटक) में अपनी 43वीं वार्षिक सामान्य सभा में उदयपुर के जाने-माने खनन वैज्ञानिक आर. पी. गुप्ता को राजस्थान के खनिज उद्योग में उनके अभूतपूर्व योगदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा। समारोह में मुख्य अतिथि कर्नाटक सरकार के खनन क्षेत्र के प्रधान सचिव ने गुप्ता को अवार्ड प्रदान किया। गुप्ता सुदर्शन ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के चेयरमैन हैं, पिछले पांच दशक से खनिज क्षेत्र को अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं देते आए हैं। सामाजिक सरोकारों से सम्बद्ध कार्यों में भी आपकी हमेशा से सकारात्मक पहल रही है।

13 जनवरी 1941 में जुगल किशोर गुप्ता के घर जन्म लेने वाले राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता बचपन से ही मेधावी रहे। इन्होंने 1965 में एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर से प्रथम श्रेणी में बीई(माइनिंग) की डिग्री हासिल की और 1977 में सुदर्शन ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज की स्थापना कर उसे प्रबंध निदेशक की हैसियत से ऊंचाइयां प्रदान की। जो खनन क्षेत्र में देश-विदेश में एक प्रतिष्ठित स्थान रखती है। आपने अपने गहन अनुभवों का लाभ राजस्थान और उससे बाहर उन क्षेत्रों तक पहुंचाया जो केलसाइट, डोलोमाइट, चाइना क्ले, सोप स्टोन, क्वार्टज, फेल्सपार और मकराना साल्ट के खनन उत्पादन और निर्माण में रत हैं। आप सन् 2007-09 में माइनिंग इंजीनियर्स ऑफ इण्डिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे और बेस्ट चेप्टर अवार्ड भी प्राप्त किया। आपको राज्य एवं राष्ट्र स्तर पर खनन क्षेत्रों के विकास में अप्रतिम योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। आपको अपने इण्डस्ट्रीज परिसर में राजस्थान का पहला सोलर प्लांट लगाने का श्रेय भी हासिल है। देश-विदेश में खनन् सम्बन्धी समस्याओं, समाधान और विकास पर अनेक प्रतिष्ठित मंचों से पत्र वाचन किए। आप अग्रवाल समाज की विभिन्न संस्थाओं के मुख्य संरक्षक, संरक्षक और अध्यक्ष रहने के साथ लॉयन्स क्लब अरावली के अध्यक्ष, डायमंड एमजेएफ लायन्स क्लब इन्टरनेशनल बने। आप विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के ट्रस्टी, संरक्षक और आजीवन सदस्य और समाज सेवा में भी अग्रणी हैं। विजय वालेचा क्लीनिक को आपने दो डायलिसिस मशीनें भी मय आवश्यक उपकरणों के भेंट की।

ASCENT
CAREER POINT
YOUR SUCCESS IS OUR TARGET
IIT-JEE I AIEEE I AIPMT I NTSE I OLYMPIADS
ASCENTIANS CREATE HISTORY ONCE AGAIN
AIIMS RESULT 2016
All students are from regular classroom contact programe
(Gen.) Chitrangna Choudhary AIR : 628
(Gen.) Archi Ranka AIR : 748
(Gen.) Aryan Paliwal AIR : 1018
(Gen.) Chandraveer Singh AIR : 1082
(Gen.) Ritu Rawal AIR : 1290
(Gen.) Anjali Doglia AIR : 1731
Total Selections AIPMT - 2015 518
Total Selections JEE- MAINS - 2016 68
Total Selections AIIMS - 2016 25
Admission Announcement
ACHIEVER COURSE
XII Passed (Droppers Batch)
NEET -UG / AIIMS / IIT-JEE - 2017
Phase- II
Classes Start
28/07/2016
(Thursday)
Phase- III
Classes Start
04/08/2016
(Thursday)
Sunday Open
SCHOOL + COACHING + HOSTEL
ASCENT CAREER POINT
H. O. : 387-88 Hiran Magri Sector-3, Udaipur, Tel. : 0294-2466145, 9414358065, 9414167145
New Campus Opp. BSNL, Nr. Kesar Bagh Hiran Magri Sector-3, Udaipur,

'कबाली' से चित्त 'सुल्तान'

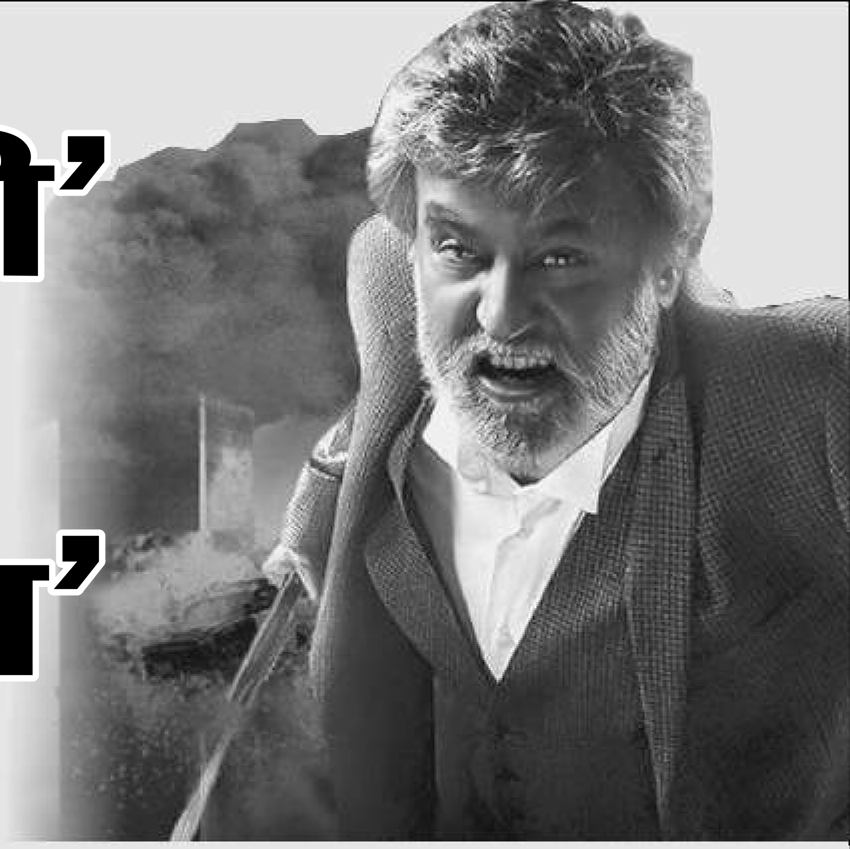

22 जुलाई को रिलीज हुई फिल्म 'कबाली' ने 'टॉप' मानी जा रही फिल्म 'सुल्तान' को कमाई के मामले में पछाड़ते हुए सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। देश भर में एक साथ पांच हजार स्क्रीन्स (दुनिया भर में आठ हजार स्क्रीन्स) पर रिलीज हुई। सुपरस्टार रजनीकांत की फिल्म 'कबाली' ने भारत सहित दुनिया के कई देशों में धूम मचाई। पहले ही दिन का कलेक्शन ढाई सौ करोड़ रुपये का रहा, जिनसे बॉक्स ऑफिस के पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए।

कबाली ने नौ दिन में ही इंडियन एवं विदेशी बॉक्स पर कमाई का 650 करोड़ रुपये का आंकड़ा छू लिया। चार हफ्ते में देशी-विदेशी बाजार से 700 करोड़ रुपये की कमाई की संभावना बताई जा रही है। 6 जुलाई को ईद के अवसर पर चुलबुल पाण्डे उर्फ सलमान खान की फिल्म 'सुल्तान' ने धमाकेदार शुरूआत करते हुए पहले दिन 36.54 करोड़ रुपये की कमाई की। सुल्तान न केवल भारत अपितु विदेशों में भी अच्छा प्रदर्शन कर रही है। छब्बीस दिनों में ही घरेलू बॉक्स ऑफिस पर फिल्म ने 296.86 करोड़ रुपये की कमाई की। वहीं दुनिया भर में अगस्त से पहले ही 569.41 करोड़ का बिजनेस कर चुकी है। यह सिलसिला अभी थमा नहीं है। लेकिन 'कबाली' जितना दम 'सुल्तान' नहीं दिखा पाए।

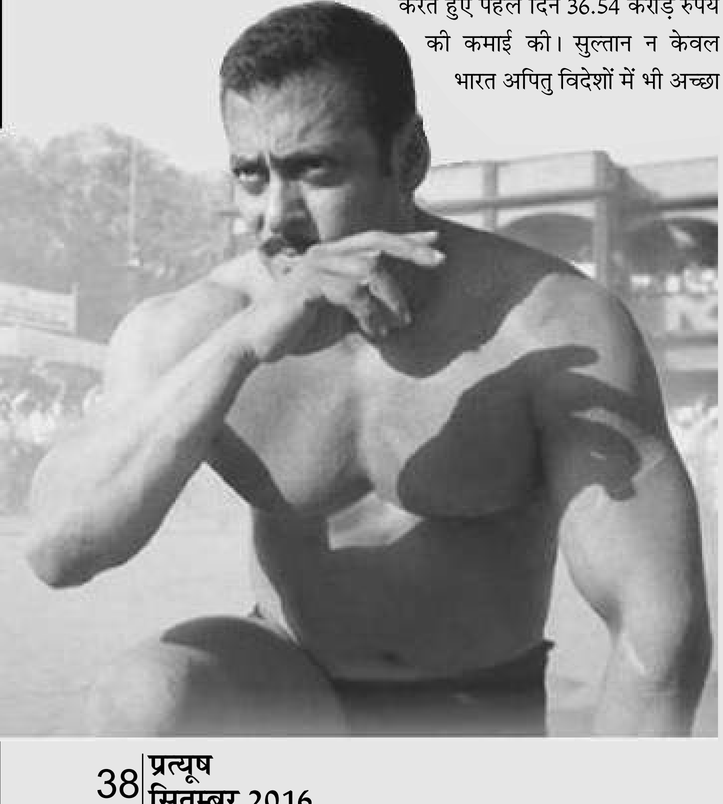

रील लाइफ में रियल लाइफ की तस्वीरें

जिंदगी और एहसास में बहुत गहरा संबंध है। हर फिल्मकार कहानी ही नहीं सुनाता, वह कला की अनंत सतहों पर अपनी अभिव्यक्ति के साथ-साथ समय और समाज की अभिव्यक्ति के नए आयाम भी खोज रहा होता है। जैसा समाज होगा, वैसा उसका सिनेमा होगा और लंबे अंतराल तक जैसा सिनेमा रहेगा, समाज भी वैसा बन जाएगा। भविष्य हर रोज वर्तमान बन कर एक नए रूप में प्रकट होता है और कहता है, 'मुझे पहचानो और जियो, मुझे जियो और बहुत खूबसूरत बना दो, क्योंकि मैं तुम्हारा अतीत भी बनने वाला हूँ।' भारतीय चलचित्र जगत के कुछ कालजयी कलाकारों ने ऐसी बेहतरीन फिल्में दी, जो आम लोगों की जिंदगी की जीवंत मिसाल बन गई।

अभिनय के बेताज बादशाह

22 जुलाई, का दिन सूरज की किरणों के साथ ही रजनीकांत की नई फिल्म 'कबाली' के साथ उदय हुआ। चेन्नई के कासी थिएटर में सुबह 4 बजे के शो के लिए देर रात से ही पूरा शहर जुट गया। 'सुपरस्टार' रजनीकांत का जादू सिर्फ देश ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी सिर चढ़कर बोला। अमेरिका में तो सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए कबाली ने पहले दिन ही 20 लाख डॉलर(13.42 करोड़ रुपये) की कमाई की। 2800 की क्षमता वाले पेरिस के ली ग्रैंड रेक्स में पहले दिन शो हाउसफुल रहे। मायानगरी मुम्बई में तो दीवानगी का आलम ऐसा गहराया कि अरोड़ा थिएटर का 6 बजे का शो फुलफिल हो गया। चेन्नई के सत्यम सिनेमा में फिल्म देखने के लिए एक प्रशंसक ने चौदह हजार रुपये चुका दिए। जापान से लम्बी यात्रा पर हिदेतोशी यासूदा कबाली देखने के लिए चेन्नई पहुंचे। ट्विटर के जरिये ब्लैक में टिकट 800 से लेकर 1500 रुपये में बिके। रजनीकांत के पोस्टर पर टनों दूध का अभिषेक किया गया। फिल्म जगत के

प्रशंसक रजनीकांत की नई नवेली फिल्म पर झूम उठे। फिल्म के रिलीज होने के दिन अब तक का सब से बड़ा 80 फीट ऊंचाई का कटआउट लगाया गया। फिल्म रिलीज होते ही रजनीकांत इस बार अमेरिका के केलिफोर्निया चले गए। हालांकि वे नई फिल्म रिलीज होने के बाद अक्सर हिमालय जाते थे। गैंगस्टर्स ढर्रे पर बहुतेरी फिल्मों से कबाली अलहदा है। बेहद प्रभावशाली ढंग से शुरूआत वाली यह फिल्म मलेशिया में आतंक मचाने वाले गैंगस्टर कबाली(रजनीकांत) पर केन्द्रित है जो 25 साल सलाखों के पीछे बिता कर जेल से बाहर आता है। उसके बाहर आने पर अपराध बढ़ने और दूसरे गिरोह से टकराहट की आशंका है। क्योंकि पेशेवर गैंग 43 कबाली पर घात लगाए बैठा है। जेल से छूटता है तो कबाली बदली दुनिया देख दंग रह जाता है। उसकी गैंग अब भी गैर-कानूनी कामों में लिप्त हैं। एक हमले में वह अपनी पत्नी रूपा (राधिका आप्टे) और बेटी को खो चुका है। उसे यकीन है कि वे जिंदा है। रूपा की खोज में वह कई पुराने दुश्मनों को मार देता है। फिल्म में माफिया है, खून-खराबा है, धांय-धांय और मारकाट है। इन सबके बीच रजनीकांत और उनका लार्जर देन लाइफ किरदार है, जो हर हमले में बच जाता है।

तलयवर, आम आदमी का सच्चा नायक

आखिर एक सामान्य कदकाठी और गहरे रंग वाले इस कलाकार में ऐसी क्या खासियत थी, जिसने इस कलाकार को सुपरस्टार बना दिया? फिल्म का मेहनताना इतना कि वे देश के सबसे अधिक पारिश्रमिक (50 करोड़ रुपये से अधिक) लेने वाले सितारे बन गए। मूलत: मराठी परिवार से ताल्लुकात रखने वाले रजनीकांत के माता-पिता बैंगलोर(बेंगलुरू) में बस गए थे। बचपन में माँ का साया उठ गया और पिता ने परवरिश की। वे दिन काफी कठिनाई भरे थे। स्कूली दिनों में ही वे पौराणिक नाटकों में काम करने लगे, जहां वे दुर्योधन बना करते थे। वहीं उन्हें रजनीकांत नाम मिला। स्कूल में उनका नाम शिवाजी राव गायकवाड़ था। रजनीकांत ने बचपन में कुली, बढ़ईगिरी और अन्तत: बैंगलोर रोडवेज में कंडक्टर की नौकरी कर ली। बाद में उन्होंने मद्रास फिल्म इंस्टीट्यूट में अभिनय का प्रशिक्षण लिया। प्रसिद्ध निर्देशक बालचंदर ने इन्हें फिल्म अपूर्व रांगगल में बतौर खलनायक लिया। इसके बाद वे एक के बाद एक सफलता की सीढ़ियां चढ़ते चले गए। उन्हें लोग प्यार से तलयवर यानी पालनहार, बॉस ..... कहने लगे। हालांकि 65 वर्षीय रजनीकांत इस भारी-भरकम तलयवर संबोधन से घबराते हैं।

अपनी कमाई से गरीबों को राहत

तमिलनाडु में फिल्में सिर्फ मनोरंजन ही नहीं अपितु जनमानस की जिन्दगी का हिस्सा है। जब वे आम आदमी की आवाज बनकर दहाड़ते तो उनके चाहने वाले थिएटर से बाहर ही नहीं निकलना चाहते। रजनीकांत को स्टाइल किंग माना जाता है। परदे पर उन्हें देखने वाले उनसे अपना सहज तादात्म्य बिठा लेते। उनका वह रूप दर्शकों को अपने बीच का कोई किरदार लगता है। वे आम जनता के बीच अपना बन कर संघर्ष का मुकाबला करते नजर आते हैं। बहुत कम लोगों को पता होगा कि वे अपनी कमाई का आधा हिस्सा दान कर देते हैं। उनकी ऑटोबॉयोग्राफी लिखने वाले ने जब पुस्तक में उनके मैनरिज्म बाबत लिख दिया तो रजनीकांत ने दान वाले पूरे हिस्से को हटवा कर ही दम लिया। वे नहीं चाहते कि कोई इसके बारे में जाने। फिल्मों में आना और सफल होना उनकी कभी मंजिल नहीं रहा। यह रास्ता जरूर था और आज भी है, जिस पर वे शिद्दत से चल रहे हैं।

दिल में आता हूँ, समझ में नहीं : सलमान

बॉलीवुड में विवादास्पद बयानों और बेबाक राय जाहिर करने वाले स्टार सलमान खान की शख्सियत में दिलदारी, अक्खड़पन, मोहब्बत, नफ़रत, मसल्स नुमाइश सब कुछ समाहित है। वे बॉलीवुड की एक अबूझ पहेली हैं। विवादित छवि के बावजूद दर्शकों को अपनी ओर खींच रहे हैं। हाल ही में चिंकारा शिकार मामले में राजस्थान हाईकोर्ट से उन्हें बड़ी राहत मिली है, जिन्हें सितम्बर 1998 में शिकार के मामले में निचली अदालत ने पांच साल की सजा सुनाई थी।

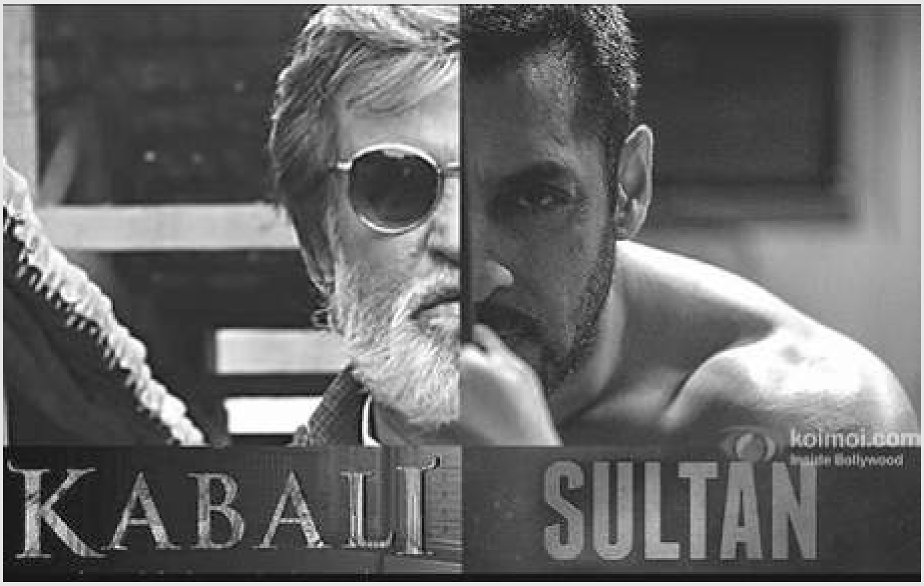

जुलाई में रिलीज हुई सुल्तान फिल्म में सलमान खान हरियाणावी पहलवान की भूमिका में है। 'प्रोटेक डाऊन' लीग का मालिक एक भारतीय पहलवान को रखना चाहता है। परन्तु सुल्तान मना कर देता है। इसके पीछे अपनी प्रेमिका की कहानी का फ्लेशबेक चलता है। प्रेमिका आफरा को पाने के लिए सुल्तान पहलवानी के गुर सीख कर एक प्रतियोगिता में सफल होता है। अस्पताल में ब्लड की कमी से बच्चे मरने की बात पर पहलवान वहां रक्त बैंक बनाने के लिए पैसे जमा करने के लिए लीग में पहलवानी प्रतियोगिता में उतरता है। बुरी तरह चोट व दर्द के बावजूद वह इनाम के पैसों से एक ब्लड बैंक बनाता है।

कबाली और सुल्तान दोनों ही फिल्में अपनी पटकथा के अलावा अभिनेता की लोकप्रियता के दम पर चलचित्र जगत में व्यापक प्रभाव छोड़ पाई है। जहां टॉलीवुड रजनीकांत का जादू लोगों के सिर चढ़कर बोलता है। वहीं बॉलीवुड में सलमान खान अपने उत्कृष्ट अभिनय के बल पर आज भी युवाओं के चहेते हैं। कमाई के लिहाज से 'कबाली' सुल्तान को चित्त करती जरूर दिखती है लेकिन हैं प्रभावशाली।

-प्रकाश जोशी

VPD VARDHANS

Vivek Vardhan Jain
9772319000

VARDHAN PUBLISHER & DISTRIBUTORS

Educational Publishers

Shop No. 239, Chaura Rasta, Jaipur 302003 (Rajasthan)
Ph. (off.) 0141-2575276 Fax L 0141-4015276

E-mail : booksvpd@yahoo.co.in

भुट्टे का चटपटा-मीठा स्वाद

झमाझम बारिश हो और भुट्टे का स्वाद न लिया जाए यह नहीं हो सकता। बाज़ार में इन दिनों भुट्टे की खूब आवक है। नरम-नरम भुट्टे घर लायें और मीठी-चटपटी रेसिपी का आनंद लें। यूं तो भुट्टे से कई लजीज़ व्यंजन तैयार किए जा सकते हैं, यहा उनमें से कुछ के बारे में बता रही हैं। -रेणु शर्मा

भुट्टे की सब्जी

सामग्री : ताज़े भुट्टे, 2-3 छोटे चम्मच किसी नारियल, बारीक कटा हरा धनिया, हरी मिर्च कटी हुई, अदरक बारीक कटी हुई, खाद्य तेल, एक छोटा चम्मच राई, 10 कढ़ी पत्ते, नमक स्वादानुसार, आधा कप दूध।

विधि : 10-15 मिनट के लिए भुट्टों को कुकर में उबालें। वे मुलायम न हुए हों, तो थोड़ी देर और पकाएं। कुकर का यह पानी अलग से रख लें। भुट्टों का पानी निथर जाने के बाद उनके दो-तीन टुकड़े कर लें। अब धनिया, मिर्च, अदरक, किसा नारियल मिलाकर एक पेस्ट तैयार करें और इसे भुट्टे के टुकड़ों पर लगाकर आधे घंटे के लिए रख दें। पैन में तेल गर्म करें और उसमें राई डालें। थोड़ी देर बाद जब राई तड़कने लगे इसमें कढ़ी पत्ते और भुट्टे डाल दें। इसमें नमक और कुकर का पानी मिलाएं। 10 मिनट के लिए पैन ढक दें और इसे उबलने दें। परोसने से पहले इसमें थोड़ा-सा पका दूध डालें और हल्का गर्म करें। इसे उबालना नहीं है।

चटपटे कॉर्न समोसे

सामग्री : 2 प्याले मैदा, 200 ग्राम आल, 3 भुट्टे, 1 चम्मच पिसा धनिया, थोड़ा-सा पुदीना, डेढ़ बड़े चम्मच तेल, 1 चम्मच भूना हुआ जीरा डेढ़ चम्मच गरम मसालाए आधा चम्मच पिसी लाल मिच, आधा चम्मच अमचूर पाउडर, स्वादानुसार नमक, तलने के लिए तेल।

विधि : सबसे पहले मैदे में 1 चम्मच तेल का मोयन मिलाकर पानी से गूंथ लें। जब भुट्टे के दाने निकालकर उबालें व दरदरा पीस लें। आलू भी उबालकर मैश कर लें तथा भुट्टे के साथ मिला दें।

अब आधा चम्मच तेल गरम करें इसमें दोनों तरह का धनिया डालें। बादामी होने पर बाकी सारे मसाले व आलू, भुट्टे का मिश्रण मिला दें और ठंडा होने दें। अब मैदे की लोई बनाकर गोल बेलें व 2 भागों में काटें। हर आधे हिस्से में मिश्रण मिलाकर समोसा बना लें। तेल गरम करके मध्यम आंच पर तलें। चटपटे कॉर्न समोसे का हरी चटनी या टोमॅटो सॉस के साथ आनंद लें।

चटपटी भुट्टा पकौड़ी

सामग्री : ताजे नर्म भुट्टे 1 किलो, एक-डेढ़ कप बेसन, 1 शिमला मिर्च, 1 प्याज, बारीक कटे हुए, 1 चम्मच अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, चुटकी भर हींग, 1 चम्मच चिली सॉस, 2 चम्मच सोया सॉस, एक चम्मच सौंफ, स्वादानुसार नमक और तेल।

विधि : सबसे पहले भुट्टे कद्दूकस कर लें। फिर इसमें बारीक कटी सब्जियां, दोनों तरफ के सॉस, नमक, अदरक व हरी मिर्च पेस्ट, हींग तथा सौंफ डालकर अच्छे से मिला लें और थोड़ा गाढ़ा घोल तैयार कर लें। अब एक कड़ाही में तेल गर्म करें। इसमें भुट्टे के मिश्रण के पकौड़े मध्यम आंच पर सुनहरे होने तक तल लें। मनभावन भुट्टा पकौड़ी को टोमॅटो सॉस या ही चटनी के साथ गरमा-गरम खाएं-खिलाएं।

भुट्टे का सोहन हलवा

सामग्री : एक कटोरी भुट्टे के दाने, 100 ग्राम मावा, 100 ग्राम नारियल का लच्छा, 100 ग्राम देसी घी, 25 ग्राम बादाम की गिरी, 4 हरी इलायची, 1 चुटकी खाने का रंग, 150 ग्राम शक्कर का बूरा। सजावट के लिए-काजू तथा नारियल के कुछ टुकड़े, बादाम की साबुत गिरी।

विधि : सबसे पहले भुट्टे दोनों को निकालकर मिक्सी में दरदरा पीस लें। कड़ाही में घी गर्म करके पिसे दानों को धीमी आंच पर करारा भून लें। भुट्टे के मिश्रण की तेज सुगंध आने पर उसमें खोया मिला लें और 5 मिनट फिर भूनें। अब शकर का बूरा मिलाकर 2 कटोरी पानी डालकर 10-15 मिनट धीमी आंच पर पकने दें। पानी सूख जाए तो उसमें मीठा रंग व कटा मेवा मिलाकर गाढ़ा करें। अब इलायची बुरका कर बादाम की गिरी, काजू तथा नारियल से सजाएं और पेश करें।

PACIFIC UNIVERSITY

Created by Rajasthan Legislative Assembly & as per Sec. 2 (F) of the UGC Act, 1956

THE UNIVERSITY WITH BEST PLACEMENT RECORD IN NORTHERN INDIA

ENGINEERING (AICTE Approved)

B.Tech. : Civil | Mechanical | Electrical
ECE | CSE | EEE | IT
M.TECH.
Mob.: 9672970940

POLYTECHNIC DIPLOMA (AICTE Approved)

Diploma: Civil | Mechanical | Electrical | **Architecture**
Mining | Automobile | CSE | ECE
Mob : 9530360191

COMMERCE

B.COM: Global Business Management
(FREE Educational foreign tour every year)
B.COM (synchronized with competitive exams)
BBM (synchronized with competitive exams) |
B.COM (Hons.) synchronized with CA / CS
M.COM
Mob: 9887262020

MASS COMMUNICATION

BJMC | MJMC+PGP (MEDIA MGMT) | DJMC
Mob: 9887262020

Architecture
Approved by Architecture Council of India

B. Arch.
Mob: 9672970940

MANAGEMENT (AICTE Approved)

M.B.A (Dual Specialization) | M.B.A (Executive)
MBA (Gobal) | MBA (Hons.)
M.B.A : Hospital and Healthcare Management
PGDM+Master (Dual Degree)
M.S.W.
Mob: 9672978034

BASIC SCIENCES

B.Sc. {Both Maths & Bio Group}
B.Sc. (Hons.) {Physics/Chemistry/Maths /Computer Science/ Statistics/ Botany/ Zoology}
M.Sc. { Physics/Chemistry/Maths/Computer Science/Statistics}
Mob : 7665017783

FIRE AND SAFETY MANAGEMENT

B.Sc. : Fire & Industrial Safety Management
Diploma : Fire & Safety Management | Industrial Safety & Disaster Mgmt.| Health Safety & Environment
PG Diploma : Industrial Safety Management | Fire & Safety Management | Health, Safety & Environment
Mob: 9672970953

HOTEL MANAGEMENT (AICTE Approved)

B.Sc.: Hotel Management
Diploma: Trade Diploma in Hotel Management
Master in Tourism and Hotel Management (MTHM)
Mob: 9672978016

SOCIAL SCIENCES AND HUMANITIES

B.A. | **B.A. (Hons.)** {Free Coaching for Competitive Exams like IAS, RAS, RPSC,SSC,BANK PO,CDS, PSI CONSTABLE, PATWARI AND CLERICAL EXAMS.}
M.A.
Mob: 9672978487

EDUCATION (NCTE Approved)

B.Ed.

COMPUTER APPLICATION

BCA | BCA+MCA | PGDCA | MCA |M.Sc. IT
Mob : 9414249049

PHARMACY (PCI Approved)

B.Pharma | M. Pharma
Mob: 7665017717

DENTAL (DCI Approved)

B.D.S
M.D.S
Diploma: Dental Mechanics | Dental Hygienist

LAW (BCI Approved)

L.L.B.
B.A.+LL.B.
B.Com.+LL.B.
L.L.M. (1 Yr. with 50%)
Mob : 9829855566
FREE R.J.S COACHING & OTHER TUTORIAL CLASSES

FASHION TECHNOLOGY

Diploma: Fashion Designing |Jewellery Designing | Textile Designing Fine Arts & Graphics | Interior Designing
Drama | Acting | Graphic Web Designing Modeling | Animation Accessory Designing | Event Management | Architecture
B.Sc. & M.Sc. : Fashion Designing Interior Designing | Jewellery Designing Textile Designing | Fine Arts & Graphics
MBA : Design Management | Fashion Designing | Textile designing
Mob: 9672978017

RESEARCH AND DOCTORATE

M.PHIL. & Ph.d. {In All Above Streams}
Mob : 9672978030

Historic 3263 Pre-Placements Before Final Semester 2014-15

No. of Companies	Pre-Placement offers in 2014-15	Highest Package
91	3263	₹. 5.5 Lakh P.A.

Average 2 job offers per passing out student

2012

2013

2014

Consecutive Winner (3 Times) in Simulated Management Games Contest of AIMA, New Delhi held among top 270 Management Institutes of the country.

प्रवेश आपके द्वार
विश्वस्तरीय पाठ्यक्रमों के लिए विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन व प्रवेश।
दिनांक 14 व 15 जून 2015

International Event
8th South Asian Universities Festival- 2015

पेसिफिक विश्वविद्यालय द्वारा सत्र 2015–16 को "महिला शिक्षा वर्ष" घोषित कर छात्राओं को स्नातक स्तरीय पाठ्यक्रमों (Degree Courses) में शून्य शिक्षण शुल्क (Zero Tuition Fees) पर प्रवेश :

Terms of scholarship

100% Scholarship on tuition fee	75% & above in 12th class
75% Scholarship on tuition fee	60-75% in 12th class
50% Scholarship on tuition fee	50-60% in 12th class

* No hidden charges.

छात्रवृत्ति केवल 21 जून तक एडमिशन लेने पर ही सुलभ होगी। | छात्रवृत्ति सीमित सीटों पर ही उपलब्ध होने के कारण First Come First Serve Basis पर सुलभ होगी। | नियत तिथि के पश्चात् एडमिशन लेने पर छात्रवृत्ति देय नहीं होगी।

Pacific Hills, Pratapnagar Extension, Airport Road, Debari, Udaipur - 313024 (Rajasthan)
Ph.: 0294 3065000 | info@pacific-university.ac.in | www.pacific-university.ac.in

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

18 सितम्बर तक इच्छित काम बनेंगे, अनुभवी लोगों का साथ मिलेगा, शत्रु हावी होंगे, स्वास्थ्य ठीक, सन्तान पक्ष से असंतुष्ट, चल रही बीमारी एवं बाधाओं से मुक्ति मिलेगी, दाम्पत्य जीवन मधुर, सट्टा लॉटरी या अन्य व्यसनों से दूर रहें।

वृषभ

समय पक्ष में है। सन्तान की मनोकामनाएँ पूरी होंगी, वाद-विवादों का शमन होगा, विशेषकर सम्पत्ति सम्बंधी। 18 सितम्बर से समय ओर पक्ष का बनेगा, स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा, दाम्पत्य जीवन अनुकूल, आय पक्ष श्रेष्ठ, बुद्धि-विवेक से नई योजनाओं का प्रारम्भ।

मिथुन

माह का प्रारम्भ कठिनाइयों से होगा। 22 सितम्बर से स्थिरता आएगी, अनावश्यक टकराव से बचें। अधिकारी वर्ग सन्तुष्ट, स्वास्थ्य सामान्य, दाम्पत्य जीवन में नूतनता, सन्तान पक्ष से शुभ समाचार, भौतिक सुखों में वृद्धि लेकिन प्रतिष्ठा में कमी, वायु सम्बन्धी रोग उभर सकते हैं।

कर्क

स्वास्थ्य ठीक, राजकीय एवं व्यापारिक क्षेत्र में सफलता संभव। कोई नया कार्य प्रारम्भ हो, विद्यार्थी वर्ग को विशेष सफलता, भाग्य पूर्ण रूप से साथ देगा। मान सम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, आय पक्ष उत्तम, दाम्पत्य जीवन मध्यम, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ, कुटुम्ब में मनमुटाव।

सिंह

16 सितम्बर तक विशेष मानसिक परेशानी, दीर्घकालीन योजनाओं को स्थागित करें, स्वास्थ्य में कमी, जीवन साथी से मतभेद, भाग्य उत्तम, भौतिक सुख सुविधाओं में खर्च अधिक, कार्य क्षेत्र में वृद्धि, विवादित मामलों का समाधान संभव।

कन्या

माह का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा, कार्य क्षेत्र में सफलता, भाग्य मध्यम, आकस्मिक हानि के योग, सन्तान पक्ष सामान्य, आय पक्ष सुदृढ़। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग, स्वास्थ्य श्रेष्ठ, जोखिम भरे कामों में सफलता मिलेगी। परिवार में मांगलिक कार्य व भौतिक सुखों में वृद्धि।

तुला

चल रहे समय में सुधार होगा, माह का उत्तरार्द्ध सुकून देगा। स्वास्थ्य ठीक, भावी योजनाओं में आशानुरूप सफलता, जीवन साथी से मध्यम व सन्तान से असामान्य व्यवहार, आय पक्ष में अचानक बाधाएँ उत्पन्न होंगी।

वृश्चिक

भाग्य साथ दे रहा है लाभ उठायें। आय पक्ष सुदृढ़ बना रहेगा, कार्य क्षेत्र में विविध अड़चनें आएंगी। स्वास्थ्य ठीक रहेगा, जीवन साथी का भरपूर सहयोग, सन्तान पक्ष सामान्य, माह का प्रारम्भ अच्छे परिणाम देने वाला है। अदालती व शासकीय कार्यों में उलझनें पैदा होने की संभावना।

धन

भाग्य में उतार-चढ़ाव, कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी, राजकीय मामलों में सफलता, ज्यादा दौड़-धूप से स्वास्थ्य में गिरावट, नये मकान के योग बनेंगे, सन्तान पक्ष सामान्य, जीवन साथी के सहयोग से व्यापार में वृद्धि।

मकर

स्वास्थ्य में गिरावट, खर्च में वृद्धि, आय पक्ष सुदृढ़, स्थाई निवेश में फायदा रहेगा। भाग्य उत्तम, व्यापार एवं कर्म क्षेत्र में सफलता, ननिहाल पक्ष से लाभ, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ, परिवार में मांगलिक आयोजन, भूमि, भवन, वाहन के सुखद योग बनेंगे, भौतिक सुखों में वृद्धि सम्पन्न, पैतृक मामले उलझेंगे।

कुम्भ

स्वास्थ्य से असन्तुष्टता, जीवन साथी से खिन्नता, विचारों में अस्थिरता, कर्म क्षेत्र में सफलता, स्थाई कार्यों में लाभ, मान प्रतिष्ठा एवं पद लाभ प्राप्त होगा, भाग्य अवरोधक रहेगा, आकस्मिक कार्यों में भाग-दौड़ ज्यादा रहेगी, सन्तान के स्वास्थ्य में कमी, प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता, परिवार में वृद्धि एवं सुख।

मीन

जीवन साथी के सहयोग से कार्य करें लाभ मिलेगा, भाग्य साथ देगा। यात्राओं से लाभ, सहसा कोई रोग प्रकट हो सकता है। राजकीय एवं शासकीय मामलों में सफलता, सन्तान पक्ष श्रेष्ठ, स्वास्थ्य ठीक रहेगा, खोये हुए धन की प्राप्ति संभव, धार्मिक कार्यों में रूचि और खर्च होगा।

सुखाड़िया जयंती पर जिम की सौगात

सुखाड़िया समाधि स्थल पर ऑपन जिम का अवलोकन करती डॉ. गिरिजा व्यास।

उदयपुर। पूर्व मुख्यमंत्री और आधुनिक राजस्थान के निर्माता मोहनलाल सुखाड़िया की 100वीं जयन्ती पर शहर में कई आयोजन हुए। मुख्य कार्यक्रम सुखाड़िया समाधि स्थल पर हुआ, जहां शहर के तीसरे ओपन जिम की शुरुआत की गई।

मोहनलाल सुखाड़िया मेमोरियल फांउडेशन की ओर से शुरू किया गया ओपन जिम शहरवासियों के लिए नि:शुल्क रहेगा। शुभारंभ पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास ने किया। दिलीप सुखाड़िया ने बताया कि दुर्गानर्सरी रोड पर सुबह-शाम भ्रमण करने वाले शहरवासियों के लिए यह अनुपम सौगात होगी। अरूण सुखाड़िया ने बताया कि 7 लाख की लागत से मशीनें लगाई गई हैं। इस अवसर पर पूर्व सांसद रघुवीर मीणा, पूर्व खेल मंत्री मांगीलाल गरासिया, गजेन्द्र सिंह शक्तावत, शहर जिला कांग्रेस की प्रदेश सचिव नीलिमा सुखाड़िया, शहर जिला कांग्रेस अध्यक्ष गोपाल व्यास, इंटक प्रदेशाध्यक्ष जगदीशराज श्रीमाली, शहर प्रभारी सुमित्रा जैन, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष शान्तिलाल चपलोत, दलपत सुराणा आदि मौजूद थे। उद्घाटन से पहले सुखाड़िया की 100वीं जयन्ती पर प्रार्थना सभा का आयोजन हुआ।

उदयपुर। नि:संतान दम्पतियों के इलाज के लिए देश के दस शहरों में अपने सेंटर खोलने के बाद प्रतिष्ठित इंदिरा आईवीएफ ग्रुप ने अब नागपुर में भी अपने कदम रख दिए हैं। इस ग्यारहवें सेंटर का लोकार्पण केन्द्रीय मंत्री (सड़क ट्रांसपोर्ट एवं हाईवे) नितिन गडकरी ने किया।

इस दौरान विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर बावनकुले ऊर्जा, राजस्व मंत्री एवं पालक मंत्री नागपुर भी मौजूद थे। इस मौके पर इंदिरा आईवीएफ ग्रुप के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया, मेडिकल डायरेक्टर डॉ. क्षितिज मुर्डिया, ऑपरेशन्स डायरेक्टर मनीष खत्री, फाइनेंस डायरेक्टर आशीष लोढ़ा एवं चीफ आईवीएफ स्पेशलिस्ट डॉ. अमोल लुंकड़ ने अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यकारिणी ने ली शपथ

उदयपुर। अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ की नवीन कार्यकारिणी का पिछले दिनों शपथ समारोह सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि गृहमंत्री गुलाबचंद कटारिया ने प्रकाश बोल्या अध्यक्ष, जिनेन्द्र मेहता, महासचिव, विमल कटारिया कोषाध्यक्ष व अनिल हरकावत सहमंत्री को शपथ दिलाई। 13 सदस्यीय कार्यकारिणी को भी शपथ दिलाई गई। अध्यक्षता गुजरात श्रम कल्याण बोर्ड के चेयरमैन सुनील सिंधी ने की। कार्यक्रम में चित्तौड़ के पुलिस अधीक्षक प्रसन्न कुमार खमेसरा, युवक महासंघ के प्रदेशाध्यक्ष सुनील गांग, संरक्षक किरणमल सावनसुखा, राष्ट्रीय संगठन मंत्री विकास बोहरा, परामर्शक अजीत मोदी, अनिल बैद, कमलेश चौधरी, दीपक करणपुरिया, डॉ. शैलेन्द्र हिरण, मोती सिंह मेहता भी उपस्थित थे।

जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक युवक संघ शपथ ग्रहण समारोह में मौजूद पदाधिकारी।

पेसिफिक कृषि कॉलेज का शुभारंभ करते सचिव राहुल अग्रवाल, सचिव शरद कोठारी।

पेसिफिक कृषि कॉलेज का शुभारंभ

उदयपुर। चित्रकूट नगर स्थित पेसिफिक कृषि महाविद्यालय का शुभारंभ 29 जुलाई को राहुल अग्रवाल, सचिव पाहेर एवं शरद कोठारी, कुल सचिव ने किया। महाविद्यालय में 30 जुलाई को एग्रीकल्चर एजुकेशन एवं रिसर्च पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई।

मुख्य अतिथि डॉ. एन. एस. राठौड़ थे। इसमें देशभर से 100 से अधिक वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

खनन सुरक्षा नियमों की पालना जरूरी

सेमीनार में मंचासीन उदयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स के पदाधिकारी।

उदयपुर। खान सुरक्षा विभाग के डिप्टी डायरेक्टर जनरल बीपी आहूजा ने यूसीसीआई में आयोजित 'मिनरल उत्खनन और खान सुरक्षा' विषयक सेमिनार में कहा कि मिनरल उत्खनन व्यवसाय से जुड़े उद्यमियों को अधिक से अधिक संख्या में तकनीकी डिग्री धारक युवाओं को रोजगार देना चाहिए। इससे न केवल खनन क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण कार्य करने वाले कर्मचारियों की पूर्ति होगी, बल्कि सरकारी नियमों की अनुपालना भी हो सकेगी।

इस अवसर पर निदेशक पीके कुण्डू, एके पोरवाल, उपनिदेशक आईए अंसारी, एके दास, टी. अरूण कुमार, एस. बहरा भी मौजूद थे। यूसीसीआई संरक्षक अरविन्द सिंघल ने भी विचार रखे। पूर्व अध्यक्ष वीपी राठी ने स्वागत किया। माईनिंग सब कमेटी के चेयरमैन मांगीलाल लूणावत ने खान उद्यमियों की समस्याएं रखी।

कलड़वास में रोपे तीन हजार पौधे

ग्रीन कलड़वास-क्लीन कलड़वास के तहत पौधारोपण करते अतिथि

उदयपुर। कलड़वास औद्योगिक क्षेत्र में ग्रीन कलड़वास-क्लीन कलड़वास के तहत विभिन्न संस्थानों-समाजों ने गत दिनों तीन हजार पौधे रोपे। जिला कलक्टर रोहित गुप्ता ने कलेक्ट्रेट से वॉलंटियर्स का फ्लैग ऑफ कर कार्यक्रम का आगाज किया। कलड़वास चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल ने बताया कि कार्यक्रम में एनसीसी, आर्मी, स्काउट गाइड, टेक्नो इंडिया एनजेआर, महावीर इंटरनेशनल, सिक्योर मीटर्स, छात्र-छात्राओं और सदस्यों ने पौधारोपण किया। कार्यक्रम में मेयर चंद्रसिंह कोठारी, कर्नल पंकज शर्मा, एनसीसी के ब्रिगेडियर ठाकुर भी थे। अध्यक्ष अग्रवाल और महासचिव संतोष भड़भड़े ने बताया कि पौधों की सुरक्षा के लिए करीब दो हजार लोहे के ट्री-गार्ड लगाए गए हैं। उपाध्यक्ष राजेन्द्र सुराणा और मनीष जैन ने बताया कि पौधों के रखरखाव की जिम्मेदारी चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज ने ली।

विजेताओं को पुरस्कृत करते डॉ. लोकेश जैन व अन्य अतिथि।

रोटरी पन्ना का 'गीत मल्हार'

उदयपुर। रोटरी क्लब पन्ना ने सौ फीट रोड स्थित अशोका पैलेस में गीत मल्हार का रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें क्लब के दम्पती सदस्यों ने नये-पुराने नगमों से समा बांध दिया।

क्लब अध्यक्ष भानुप्रताप सिंह ने बताया कि कार्यक्रम में रंगारंग सांस्कृतिक प्रतियोगिता सहित बेस्ट ड्रेस मेल एवं बेस्ट ड्रेस फीमेल प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। जिसमें बेस्ट ड्रेस मेल में राजेश शर्मा, बेस्ट ड्रेस फीमेल में तारिका भानुप्रताप सिंह विजेता रही।

इस अवसर पर प्रीति सोगानी, डॉ. स्वीटी छाबड़ा, डॉ. लोकेश जैन, मधु सरीन, डॉ. देवेन्द्र सरीन, संध्या भट्ट, कविता मोदी, डॉ. मनीष सेठ सहित अनेक अतिथि मौजूद थे।

ट्रेक्टर का नया मॉडल लॉन्च

ट्रेक्टर का नया मॉडल लॉन्च करते कंपनी के डायरेक्टर सुभाष राजक व प्रतिनिधि।

उदयपुर। ट्रैक्टर निर्माता कम्पनी जोन डियर के अधिकृत डीलर झामर कोटड़ा रोड मनवाखेड़ा स्थित न्यू उदयपुर ट्रैक्टर एण्ड मशीनरी शोरूम में ट्रैक्टर का नया 36 एचपी मॉडल 5036 डी जोन डियर की लांचिंग व डीलर मीट समारोह हाल ही में सम्पन्न हुआ।

नए मॉडल को ग्राहक केवल पटेल ने लांच किया। डिप्टी मैनेजर हनिश अय्यर, टीएम सेल्स गौरव शर्मा, सुखबीर सेनी, टीएम सर्विस उर्मिल शेखर मौजूद थे।

डायरेक्टर सुभाष राजक ने ट्रैक्टर खूबियों के बारे में बताया। ट्रैक्टर में तीन सिलेण्डर, 2900 सीसी इंजिन के साथ ही पावर स्टीयरिंग व डिस्क ब्रेक है। इसमें 8 गियर हैं और रिवर्स के चार गियर दिए है। को-डायरेक्टर इना राजक ने बताया कि बॉडी पूरी तरह से फायबर से निर्मित है।

मंगलम सीमेंट के प्रेसीडेन्ट एस.एस. जैन, कंपनी के प्रेसीडेनट (कार्पोरेट) यशवंत मिश्रा, प्रेसीडेन्ट (मार्केटिंग) कौशलेश माहेश्वरी, सीनियर ज्वाइंट प्रेसीडेन्ट (कॉमर्शियल), अनिल मांडोत।

अलीगढ़ में मंगलम् सीमेन्ट की नई इकाई

अलीगढ़। मंगलम सीमेन्ट ने उत्तरप्रदेश के छेरत(अलीगढ़) क्षेत्र में 7.50 लाख टन उत्पादन क्षमता की इकाई का 10 अगस्त को प्रात: 11.30 बजे कंपनी डायरेक्टर के. सी. जैन एवं श्रीमती शैला जैन ने शुभारंभ किया।

इससे पूर्व परिसर में हनुमान मंदिर के शिलान्यास हवन एवं पूजा-अर्चना से हुआ। इस अवसर पर मंगलम सीमेन्ट के प्रेसीडेन्ट एस. एस. जैन ने अतिथियों एवं आगन्तुकों का स्वागत करते हुए कहा कि ये इकाई नई तकनीकी, जिसमें न्यूनतम बिजली की खपत एवं उच्च क्वालिटी की अधिकतम उत्पादन की क्षमता को ध्यान में रखकर निर्मित की गई है। इकाई परिसर में जल शुद्धीकरण संयंत्र भी स्थापित किया गया है, जिससे पर्यावरण संरक्षण, जल की बचत व हरियाली का पूर्ण विकास होगा। प्रदूषण कंट्रोल के लिए उच्च तकनीकी के संयंत्र स्थापित किये गए हैं। कंपनी के प्रेसीडेन्ट(कॉर्पोरेट) यशवंत मिश्रा, प्रेसीडेन्ट (मार्केटिंग) कौशलेश माहेश्वरी, सीनियर ज्वाइंट प्रेसीडेन्ट(कॉमर्शियल) अनिल मंडोत, अलीगढ़ विधायक दलवीर सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक राज्य औद्योगिक विकास निगम समिति, स्मिता सिंह, महापौर श्रीमती शकुन्तला भारती, मुख्य वित्तीय अधिकारी रामराजा यादव, वित्तीय अधिकारी एस. के. जायसवाल, राख नियंत्रण पद्धति के मुख्य अभियंता, आर. के. वाही, पुलिस अधीक्षक लव कुमार व नजदीक क्षेत्र के सरपंच(प्रधान) आदि भी उपस्थित थे।

मोबाइल प्रशिक्षण का समापन

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान में दिव्यांग व निर्धनजन के लिए चलाए जा रहे व्यवसायोन्मुखी विभिन्न प्रशिक्षणों के क्रम में 35 दिवसीय नि:शुल्क मोबाइल प्रशिक्षण का समापन हुआ। निदेशक वंदना अग्रवाल ने सभी 13 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र व प्रारंभिक रोजगार के लिए मोबाइल किट प्रदान किए। संचालन सुश्री पलक ने किया।

नि:शुल्क उपहार केन्द्र का शुभारम्भ

केन्द्र का अवलोकन करते महापौर व आगन्तुक।

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में 2 अगस्त को दिव्यांग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजन के लिए नारायण उपहार केन्द्र का शुभारंभ हुआ, यहां उन्हें नि:शुल्क परिधान, किताबें, जूते एवं चप्पल आदि प्रदान किए जाएंगे। जरूरतमंद यहां अपनी पसंद के कपड़े व अन्य वस्तुएं नि:शुल्क प्राप्त कर सकेंगे। सेक्टर-3 की भैरवधाम कॉलोनी में स्थापित केन्द्र का उद्घाटन महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश मानव, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल व महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने किया। विशिष्ठ अतिथि डॉ. शोभालाल औदिच्य, पार्षद आशा बोर्दिया, लवदेव बागड़ी, जगदीश मेनारिया, प्रवीण मारवाड़ी, सीमा साहू तथा समाजसेवी के. एल. नागौरी थे। अतिथियों का स्वागत करते हुए अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने उपहार केन्द्र व संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों की जानकारी दी। संचालन ओमपाल सिलन ने किया।

शोध कार्य को महत्त्व दें : कुलपति

कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक को सम्बोधित करते कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत।

उदयपुर। 'प्रोफेसर 50 फीसदी टीचिंग पर तो 50 फीसदी रिसर्च पर ध्यान दे, विद्यार्थियों को भी इसके लिए प्रोत्साहित करें।'यह विचार कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय डबोक के अन्तर्गत संचालित भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा संचालित सी.टी.ई. कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक में व्यक्त किए उन्होंने कहा कि भावी योजनाओं में कौशल आधारित पाठ्यक्रम पर अधिक से अधिक जोर दिया जाये तथा उच्च शिक्षा से जुड़े प्रबंध पत्रों को अधिक से अधिक जोड़ा जाय। प्राचार्य डॉ. शशि चित्तौड़ा ने बताया कि पूरे वर्ष राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर के व्याख्यान भी आयोजित किए जायेंगे। बैठक में सत्र 2015-16 को प्रतिवेदन एवं सत्र 2016-17 में प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया गया। संचालन डॉ. बी. एल. श्रीमाली ने तथा धन्यवाद डॉ. सरोज गर्ग ने दिया।

उदयपुर। कस्तूर बा मातृ मंदिर हॉस्पीटल के सचिव डॉ. जयप्रकाश भाटी(पुत्र स्व. डॉ. आत्म प्रकाश भाटी) की धर्मपत्नी श्रीमती निशा का 15 अगस्त 16 को आकस्मिक निधन हो गया। वे पिछले कुछ दिनों से उपचाराधीन थीं। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्री-दामाद मनीषा-शैलेन्द्र सिंह व दोहित्र आर्यन सिंह सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

सस्टेनेब्लिटी रिपोर्ट का विमोचन

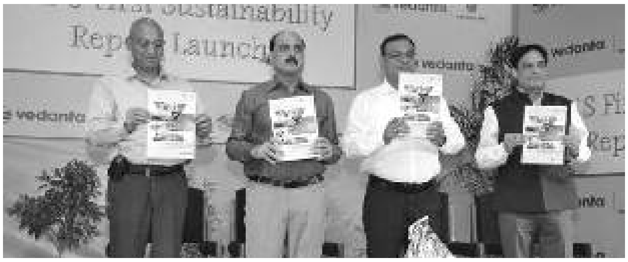

उदयपुर। हिन्दुस्तान ज़िक की प्रथम सस्टेनेब्लिटी रिपोर्ट 2015-16 का प्रधान कार्यालय के एक भव्य समारोह में विमोचन मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल, मुख्य वित्तीय अधिकारी अमिताभ गुप्ता, निदेशक परियोजना नवीन सिंघल तथा मुख्य प्रचालन अधिकारी विकास शर्मा ने किया। इस अवसर पर श्री दुग्गल ने कहा कि हिन्दुस्तान ज़िंक ने 50 वर्षो के दौरान औद्योगिक विकास के साथ ईकाइयों के आस-पास के लोगों के जीवन में सुधार के लिए उल्लेखनीय कदम उठाये हैं।

कौमी एकता की मिसाल है मेवाड़ : लक्ष्यराज सिंह

उदयपुर। तामीर सोसायटी का सिल्वर जुबली समारोह 14 अगस्त को सुविवि के सेमिनार हॉल में हुआ। मुख्य अतिथि महाराणा मेवाड़ चेरिटेबल के ट्रस्टी लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ थे। अध्यक्षता पापुलर एंड प्रोग्रेसिव मिनरल प्रालि के प्रबंध निदेशक सावा के मोहम्मद सईद खान ने की। विशिष्ट अतिथि शेख शब्बीर के. मुस्तफा थे। लक्ष्यराजसिंह ने कहा कि मेवाड़ का इतिहास कौमी एकता के रूप में विश्व भर में अपनी अलग पहचान रखता है। सोसायटी चेयरमैन डॉ. इकबाल सागर ने अतिथियों का स्वागत किया। समारोह में 28 लोगों को सम्मानित किया गया।

महात्मा वरिष्ठ उपाध्यक्ष

उदयपुर। अ.भा. श्वेताम्बर जैन महात्मा संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. वीरेन्द्र महात्मा ने उदयपुर के डॉ. ओ. पी. महात्मा को वरिष्ठ उपाध्यक्ष नियुक्त किया है। वे समाज की संदेश पत्रिका के प्रधान सम्पादक भी होंगे।

Florence CONTINENTAL HOTEL

Florence Continental Hotel is a Family Run Hotel, An Enchanting Hotel Combines Old World Charm with Modern Benefits in Confort. Ideally Located on The Banks of The Bus Stand Near Gulab Bag. Florence Continental Hotel is A Place Where you can relax and get pampered in the lap of mother nature. Close to the city center, The hotel provides a base for shopping, Dining out and visit to places of interest. The Florence Continental Hotel Offers A Panoramic view of Bus stand near Gulab Bag.

The Bedrooms are Air-Conditioned spacious, Well Appointed and exquisitely decorated. Each room has a fresh air and unspoiled view of Gulab Bag. The rooftop restaurant gives a panoramic view of Gulab Bag and Aravli hills.

1, Jal Darshan Market, R.M.V. Road, Near Gulab Bagh, Udaipur (Raj.) INDIA.
Ph. : +91 294-2417456, 2417457 Fax : +91 294-2417456
E-mail : mail@hotelflorence.co.in www.hotelflorance.co.in

RK PHOSPHATES
PRIVATE LIMITED
UDAIPUR

Manufacturer:

- Di Calcium Phosphate (Feed Grade)
- Mineral Mixture
- Calcium Carbonate (Nano Micron Size)
- Dolomite Powder (Micronized)
- Calcite Powder (Micronized High Grade)
- Quartz Powder and Grains
- Emery Powder & Grains / Grits
- Industrial Minerals

Corporate Office:

'Singhvi House'
6 – Residency Road
Udaipur (Raj.)

Works:

Umarda
JhamarKotra Road
Udaipur (Raj.)

Contact: Mb. +91 9414165298, +91 9829040501
Email:rkphosphates@gmail.com, **Tel:** +91 294 2422707
www.rkphosphates.com

An ISO 9001:2008 Certified Company

ज ऑफ नर्सिंग, उदयपुर

ट्रेनिंग कॉलेज, उदयपुर

ी हेतु सम्पर्क करें :-

शक

हिमांशु पूर्बिया

ड़ा, सेक्टर-6, उदयपुर

571112222, 9571100444

Deepankar

Silver Square

Opp. Akashwani Colony,
Hiran Magri, Sec. 5,
Udaipur-313002 (raj.)
Mob. : 9414233164 (Phulshankar Menaria),
9549045301, 7737883838 (Deepankar),
8003763838 (A.L. Menaria)

सिनर्जी इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग, उदयपुर

राज. नर्सिंग काउन्सिल (R.N.C.) जयपुर, इंडियन नर्सिंग काउन्सिल (I.N.C.) नई दिल्ली
एवं राज्य सरकार से मान्यता प्राप्त

न्यूनतम योग्यता 10+2 पास, 40% किसी भी विषय में

जनरल नर्सिंग एवं मिडवायफरी (G.N.M.) कोर्स में प्रवेश की जानकारी हेतु सम्पर्क करें।

पाठ्यक्रम अवधि 3 1/2 वर्ष

नर्सिंग के क्षेत्र में प्रवेश का सुनहरा अवसर

* अनुभवी व प्रशिक्षित प्राध्यापकों द्वारा अध्यापन।
* प्रेक्टिकल ट्रेनिंग हेतु शहर के प्रतिष्ठित अस्पतालों से सम्बद्धता।
* प्रशिक्षण हेतु सुसज्जित प्रयोगशालाएं।
* छात्र-छात्राओं के लिए पृथक-पृथक हॉस्टल सुविधा।
* छात्र-छात्राओं हेतु बस सुविधा।
* सुसज्जित पुस्तकालय मय किताबें, जर्नल एवं मेग्जीन।

सिटी कार्यालय महावीर भवन, तैय्याबिया स्कूल के पास, देहलीगेट उदयपुर
Phone : 0294-3200027, 7568002542

परिसर हिंदुस्तान जिंक तिराहे के सामने, उदयबाग रिसोर्ट वाला रास्ता देबारी–भैंसड़ा कलां रोड, उदयपुर (राज.)

पेसिफिक डेन्टल कॉलेज एवं महाराजा कॉलेज से 250 मीटर की दूरी पर

प्रदीप चपलोत (निदेशक) 98296–20257

ST. XAVIER SEC. SCHOOL

(A unit of St. Xavier Educational Society)
Co-educational, English Medium School

"Our success lies in your child's progress"

"At St. Xavier nurturing begins from heart, just like mothers"

A proper mix of academics & co-curricular activities | Trained qualified and dedicated staff | Ideal students-teacher ratio | Learning by play way method | Attractive pre-primary & primary section.

H-7, 8 Haridas ji ki Magri, Krishna Complex, Mullatalai, Udaipur (Raj.)
E-mail Id : st.xavierudaipur@yahoo.in
Phone No. : 9414163479, 0294-2433479

SHURUAAT SAHI TOH HAR BAAT SAHI

RK GROUP

WONDER CEMENT

EK PERFECT SHURUAAT